यूनियन धारा
Union Dhara

जिल्द 43, सं.1 Vol. XXXXIII No. 1, मुंबई जनवरी-मार्च, 2018

महिला विशेष

Woman Special

गृहपत्रिका • HOUSE MAGAZINE OF यूनियन बैंक ऑफ इंडिया Union Bank of India

अनुक्रमणिका
Contents

यूनियन धारा UNION DHARA
जनवरी – मार्च, 2018 January–March 2018

प्रकाशन तिथि : 08.03.2018

परिदृश्य 3–4
संपादकीय..... 5–6
अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का इतिहास... 7–8
साहित्य जगत से 9
Women empowerment..... 10–11
आज की नारी/चरक का कोना..... 12–13
आधी आबादी की समस्याएँ
एवं निराकरण..... 14–15
Success Stories of Women 16–19
काव्यधारा..... 20–21
महिला बॉस..... 22–23
Matrilineal Culture/मैं नारी हूं 24–25
Women Empowerment in
India 26–27
Women in Banking & Financial
Sector/बैंकिंग उद्योग में महिलाएं . 28–29
धर्म एवं नारी..... 30–31
Woman–Urban/Rural 32–33
स्वातंत्र्योत्तर भारत में महिलाओं की
आर्थिक स्थिति 34–35
Woman Empowerment –
The need of the hour 36–37
Legally Speaking..... 38–39
विशेष आयोजन – महिलाओं हेतु
कार्यशाला..... 40–41
विश्व की महत्वपूर्ण महिलाएं 42–43
क्या नारी ही नारी की शत्रु है 44–45
सेंटर स्प्रेड – बाली 46–47
Revenge of a Woman 48–49
Girl Child and Girl Abusing 50–51
Devdasi and prostitution..... 52–53
Management Quality of
Women 54–55
सेवा निवृत्त जीवन से 56
Sexual Harassment
Redressal Committee..... 57
What's New –
Union Bhavishya 58–59
पुरस्कार / केंद्रीकृत समाचार/
समाचार दर्शन 60–69
Face in the UBI Crowd 70–71
खेल जगत से 72
Mentality & Physicality of
Women..... 73
मॉडेलिंग, विज्ञापन एवं
फिल्मों में महिलाएं 74–75
मानव कंप्यूटर – शकुंतला देवी/
शिखर की ओर .../शुभमस्तु..... 76–77
Women as Domestic..... 78
महिला मानसिकता..... 79
Women SHGs/
सफलता की उड़ान 80–81
भारत की प्रथम महिला..... 82
महिलाओं की क्षमता एवं सामर्थ्य..... 83
महिला प्रधान क्षेत्रों में महिला/
नारी होने का अधिकार 84–85
भारतीय समाज में महिलाएं..... 86
पुरुष बनने की दौड़ में दौड़ती महिलाएं .. 87
बधाई/हमें गर्व हैं..... 88
बाल प्रतिभा..... 89
हेल्थ टिप्स /व्यंजन..... 90
आपकी पाती/प्रतियोगिता क्र. 145..... 91
Back Cover..... 92

महाप्रबंधक (मा.सं.)
रवि कुमार गुप्ता
General Manager (HR)
Ravi Kumar Gupta

संपादक
डॉ. सुलभा कोरे
Editor
Dr. Sulabha Kore

संपादकीय सलाहकार
रेखा नायक (अध्यक्ष)
इशराक अली खान
नितेश रंजन
राजेश कुमार
Editorial Advisors
Rekha Nayak (Chairperson)
Ishraq Ali Khan
Nitesh Ranjan
Rajesh Kumar

Printed and published by Dr. Sulabha Kore on behalf of Union Bank of India and printed at SAP PRINT SOLUTIONS PVT. LTD. Lower Parel, Mumbai-400013

and published at Union Bank Bhavan, 239, Vidhan Bhavan Marg, Nariman Point, Mumbai-400021.

Editor - Dr. Sulabha Kore
E-mail: sulabhakore@unionbankofindia.com

Our Address : Union Dhara, 11th Floor, Union Bank Bhavan, 239, Vidhan Bhavan Marg, Nariman Point, Mumbai - 400 021.

E-mail: uniondhara@unionbankofindia.com
Mob. No. 9820468919
Tel.: 22896547 / 22896545 / 22896590

इस पत्रिका में व्यक्त विचारों से प्रबंधन का सहमत होना अनिवार्य नहीं है.

Designed and Printed at **SAP PRINT SOLUTIONS PVT. LTD.**, Lower Parel, Mumbai - 400 013.

परिदृश्य PERSPECTIVE

पिछले कुछ दशकों से भारत समेत सम्पूर्ण विश्व में महिलाओं के सशक्तिकरण का मुद्दा चर्चा का विषय रहा है. संयुक्त राष्ट्र की कई एजेंसियों ने अपनी रिपोर्ट में इस बात पर ज़ोर दिया है कि लैंगिक असमानता के मुद्दे को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए.

इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता कि भारत में महिलाओं ने स्वतंत्रता के बाद के सात दशकों में उल्लेखनीय प्रगति की है, लेकिन अभी भी उन्हें पुरुष प्रधान समाज में कई कुप्रथाओं एवं सामाजिक बुराइयों के खिलाफ संघर्ष करना पड़ रहा है. कई बाधाएं और मर्दाना ताक़तें अभी भी आधुनिक भारतीय समाज में मौजूद हैं, जो उसकी पारंपरिक महिला से आगे की यात्रा में अवरोध उत्पन्न करती हैं. यह विडंबना ही है कि जिस देश ने हाल ही में मंगल अभियान को प्रथम प्रयास में पूर्ण करने वाले एशिया के पहले देश के रूप में गौरव प्राप्त किया हो, वह लैंगिक असमानता की सूची में दुनिया भर के 146 देशों में 29वें स्थान पर हो. हालांकि महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ है, लेकिन उनके सच्चे सशक्तिकरण की अभी भी प्रतीक्षा है.

भारत के महानतम सपूतों में से एक, स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि "विश्व के कल्याण की गुंजाइश तब तक नहीं है, जब तक कि महिलाओं की स्थिति में सुधार न हो, क्योंकि पक्षी के लिए केवल एक पंख से उड़ना संभव नहीं है." इसीलिए एक विकसित देश होने के लिए भारत को अपनी विशाल महिला शक्ति को एक प्रभावी मानव संसाधन में बदलने की जरूरत है और यह केवल महिला सशक्तिकरण के माध्यम से ही संभव है.

महिला सशक्तिकरण का अर्थ है सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, जाति और लिंग–आधारित भेदभाव के अनैतिक बंधनों से महिलाओं को मुक्त कराना अर्थात, महिलाओं को जीवन के विकल्प चुनने की स्वतंत्रता देना. महिला सशक्तिकरण का मतलब 'महिलाओं की पूजा करना' नहीं है बल्कि इसका अर्थ है 'पितृसत्ता' को 'समानता' में बदलना.

भारत में महिलाओं की स्थिति, पिछली कुछ सदियों से कई महान बदलावों के अधीन रही है. सुधारकों द्वारा समान अधिकारों को बढ़ावा दिए जाने के बावजूद प्राचीनकाल से मध्ययुग तक उनकी स्थिति में गिरावट का इतिहास महत्वपूर्ण घटनाओं से परिपूर्ण रहा है. आधुनिक भारत में महिलाओं ने राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री, लोकसभा के अध्यक्ष, विपक्ष के नेता, केंद्रीय मंत्री, मुख्यमंत्री और राज्यपाल सहित कई उच्च पद संभाले हैं.

भारत सरकार ने, विभिन्न सांविधिक बाध्यताओं से अलग हटकर महिला सशक्तिकरण के लिए कई नवोन्मेषी योजनाएं बनाईं हैं. उनमें से कुछ के नाम हैं– बेटी बचाओ, स्टेप (सपोर्ट फॉर ट्रेनिंग कम एम्प्लॉयमेंट ऑफ वुमेन), साक्षर भारत, एसएचजी, एनएमईडब्ल्यू (नेशनल मिशन फॉर एम्पावर्मेंट ऑफ वुमेन), महिला समृद्धि योजना, किशोर शक्ति योजना आदि.

आंकड़ें बताते हैं कि ग्रामीण भारत में कृषि और संबद्ध औद्योगिक क्षेत्रों में, महिलाओं की संख्या, श्रम शक्ति का लगभग 89.5% है. अनुमान है कि कुल कृषि उत्पादन में, महिलाओं का औसत योगदान, कुल श्रमिकों के 55% से 66% तक है. विश्व बैंक की रिपोर्ट के मुताबिक, भारत में डेयरी उत्पादन में कुल रोजगार का 94% हिस्सा महिलाओं का है. वन–आधारित लघु–स्तरीय उद्यमों में कुल कार्यरत लोगों में महिलाओं की हिस्सेदारी 51% है.

वो दिन गए जब विश्व के सभी शक्तिशाली पुरुषों की तुलना में, महिलाओं को किसी भी तरह से उपयुक्त नहीं माना जाता था. पुरुष प्रधान विश्व हमेशा इस तथ्य

The subject of empowerment of women is becoming a burning issue all over the world including India since last few decades. Many agencies of United Nations in their reports have emphasized that gender issue is to be given utmost priority.

There is no denying the fact that women in India have made considerable progress in almost seven decades of Independence, but they still have to struggle against many handicaps and social evils in the male-dominated society. Many evil and masculine forces still prevail in the modern Indian society that resists the forward march of its women folk. It is ironical that a country, which has recently acclaimed the status of the first Asian country to accomplish its Mars mission in the maiden attempt, is positioned at the 29th rank among 146 countries across the globe on the basis of Gender Inequality Index. There has been amelioration in the position of women, but their true empowerment is still awaited.

Swami Vivekananda, one of the greatest sons of India, quoted that, "There is no chance for the welfare of the world unless the condition of women is improved. It is not possible for a bird to fly on only one wing." Thus, in order to achieve the status of a developed country, India needs to transform its colossal women force into an effective human resource and this is possible only through the empowerment of women.

Women empowerment means emancipation of women from the vicious grips of social, economical, political, caste and gender-based discrimination. It means granting women the freedom to make life choices. Women empowerment does not mean 'deifying women' rather it means replacing patriarchy with parity.

The status of Women in India has been subject to many great changes over the past few millennia. With a decline in their status from the ancient to medieval times, to the promotion of equal rights by many reformers, their history has been eventful. In modern India, women have held high offices including that of the President, Prime Minister, Speaker of the Lok Sabha, Leader of the Opposition, Union Ministers, Chief Ministers and Governors.

Government of India, apart from various statutory encasements has formed innovative schemes for women empowerment. To name a few, Beti Bachao, STEP (Support for training cum employment of women), Saakshar Bharat, SHGs, NMEW (National Mission for empowerment of women), Mahila Samridhi Yojana, Kishore Shakthi Yojana etc.

The data further reveals that in rural India, in the agriculture and allied industrial sectors, females account for as much as 89.5% of the labour force. In overall farm production, women's average contribution is estimated at 55% to 66% of the total labour. According to World Bank report, women accounted for 94% of total employment in dairy production in India. Women constitute 51% of the total employed in forest-based small-scale enterprises.

Gone are the days when women were considered no match for all powerful men in this world. The male dominated world was always reluctant to even acknowledge the fact that women were as good as men

को स्वीकार करने के लिए अनिच्छुक था कि कड़ी मेहनत, बुद्धिमत्ता (आईक्यू) और नेतृत्व गुणों के मापदंडों पर महिलाएँ भी उतनी ही अच्छी हैं जितना कि पुरुष. दुनिया भर में नई पीढ़ी की महिलाओं ने सभी नकारात्मक धारणाओं को पीछे छोड़ दिया है और स्वयं को जीवन के सभी क्षेत्रों में संदेह से परे साबित किया है, जिसमें उद्यमशीलता की सबसे पेचीदा और जटिल दुनिया भी शामिल है.

हां, ऐसी महिलाओं का भी एक वर्ग है जो शॉर्ट–कट में विश्वास करती हैं, लेकिन साथ ही ऐसी महिलाओं की भी कोई कमी नहीं है, जिनमें विश्वास है, खुद पर भरोसा है, जिनके भीतर व्यवसाय में सर्वश्रेष्ठ कर दिखाने और विरोधियों को उनके ही खेल में हराने की जबरदस्त क्षमता है.

भारत में भी कई ऐसी साहसिक और निडर महिलाएं हैं, जिन्होंने देश के साथ–साथ विदेशों में भी खुद के लिए एक जगह बनाई है. उनके अथक उत्साह, सफलता की निरंतर प्यास और अतिरिक्त कदम बढ़ाने की उनकी इच्छा ने उनकी जन्मजात सीमाओं के बारे में सभी मिथकों को तोड़ दिया है जो कि उनकी सफलता के मार्ग में एक बड़ी बाधा के रूप में जाने जाते थे.

सुश्री इंदिरा नूयी, अध्यक्ष, पेप्सिको; सुश्री नैना लाल किदवई, एचएसबीसी इंडिया; डॉ. किरण मजूमदार शॉ, सीएमडी, बायोकॉन; एमडी और सीईओ, सुश्री चंदा कोचर, आईसीआईसीआई बैंक; सुश्री इंदु जैन, अध्यक्ष, टाइम्स समूह; सुश्री मल्लिका श्रीनिवासन, निदेशक, टीएएफ़ई आदि कुछ ऐसे ही नाम हैं.

उपर्युक्त वैश्विक भारतीय सीईओ के अलावा, महिलाओं को प्रेरित करने के लिए, मैं विशेष रूप से सुश्री चेतना सिन्हा की सफलता की कहानी को याद करना चाहता हूं. जो एक सामाजिक कार्यकर्ता और किसान से उद्यमी बन गईं और ग्रामीण भारत के सूखाग्रस्त इलाकों में उद्यमिता कौशल प्रदान कर महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए कार्य कर रही हैं.

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया में, महिला कर्मचारियों की संख्या 8,930 है, जो कि हमारे कार्यबल का 23.74% है. हमें यह उल्लेख करते हुए खुशी हो रही है कि हमारी 289 शाखाओं की शाखा प्रबन्धक, महिलाएं हैं. भारत सरकार के दिशानिर्देशों के अनुसार, हमारे बैंक में स्थानान्तरण और पदोन्नति पोस्टिंग में महिला कर्मचारियों को प्राथमिकता दी जाती है. इसके अलावा, कार्यस्थल पर महिला कर्मचारियों के यौन उत्पीड़न की रोकथाम, निषेध और निवारण नीति आधारित शिकायतों की प्राथमिकता से जांच के लिए, एक स्वतंत्र बाहरी महिला सदस्य के साथ, हमारे यहाँ केंद्रीय कार्यालय में और विभिन्न अंचलीय/क्षेत्रीय स्तरों पर समितियों का गठन किया गया है. केंद्रीय कार्यालय में उक्त समिति का नेतृत्व एक महिला महाप्रबंधक द्वारा किया जा रहा है.

निष्कर्ष रूप में, यह आम तौर पर माना जाता है कि महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, राजनीतिक और कानूनी रूप से सशक्त बनाना एक कठिन काम है. इससे अलावा महिलाओं की उपेक्षा की संस्कृति को बदलना आसान नहीं होगा, जिसकी जड़ें भारतीय समाज में बहुत गहरी हैं. लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि यह अकल्पनीय है. केवल क्रांतियां एक दिन में बदलाव लाती हैं, लेकिन सुधारों में समय लगता है. विशेष रूप से इसमें भी समय लगेगा. महिला सशक्तिकरण का विचार मुश्किल लग सकता है, लेकिन धीरे धीरे यह बहुत आसान होता जा रहा है. हमें बस जरूरत है, सही दिशा में केन्द्रित सघन प्रयासों की, जो सभी प्रकार की बुराइयों से महिलाओं को मुक्त करने के बाद ही रुकेंगे.

आप सभी को शुभकामनाएँ !

राजकिरण रै जी

राजकिरण रै जी.
प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

on parameters of hard work, intelligence quotient (IQ) and leadership traits. The new generation women across the world have overcome all negative notions and have proved themselves beyond doubt in all spheres of life including the most intricate and cumbersome world of entrepreneurship.

Yes, there is a section among women who believe in short-cuts but at the same time there is no dearth of women who are confident, believe in themselves and have enormous fire in their bellies to take on the best in the business and beat them at their own game.

India too, has its own pool of such bold and fearless women who have made a mark for themselves both within the country as well as overseas. Their relentless zeal, incessant quench for success and willingness to walk the extra mile have broken all myths about their inborn limitations that were supposed to be major roadblocks on their success expressways.

To name a few, Ms. Indira Nooyi, Chairman Pepsico, Ms. Naina Lal Kidwai, HSBC India, Dr. Kiran Mazumdar Shaw, CMD Biocon, Ms. Chanda Kochar, MD & CEO, ICICI Bank, Ms. Indu Jain, Chairperson Times Group, Ms. Mallika Srinivasan, Director, TAFE and so on….

Apart from the above mentioned global Indian CEOs, to motivate the women folks, I specially wish to recall the success story of Ms. Chetna Sinha, a Social activist and farmer turned entrepreneur, working to empower women in draught prone areas of rural India, by teaching entrepreneurial skills.

In Union Bank of India, we have on scroll 8,930 women employees representing 23.74% of our work force. It is heartening to mention that 289 of our branches are headed by Women employees. As per GOI guidelines, in our bank women employees are given preferential treatment in transfers and postings on promotions. Apart from this, as per policy for Prevention, Prohibition and Redressal of Sexual Harassment of Women Employees at Workplace, we have in place committees at Central Office and at various Zonal / Regional levels with an independent external lady member, for looking into such complaints on priority. At Central Office, the said Committee is headed by a Women General Manager.

To conclude, it is generally perceived that empowering women socially, economically, educationally, politically and legally is going to be a herculean task and further not going to be easy to change the culture of disregard for women which are so deep-rooted in Indian society. But it does not mean that it is implausible. Only revolutions bring changes in a day, but reforms take their time. This one, in particular, will take its time as well. The idea of women empowerment might sound hard by the yard, but by the inch, it is just a cinch. All we need is a concentrated effort focused in the right direction that would rest only with the liberation of women from all forms of evil.

Wish you all Good Luck.

RajKiran Rai G.

RajKiran Rai G.
MD & CEO

संपादकीय EDITORIAL

दोस्तों

हर एक व्यक्ति के जीवन में, औरत मौजूद होती है. उसका होना अलग अलग नामों और रिश्तों के जरिए होता है लेकिन वह हरदम मौजूद रहती है. मैं आपको तथा आपके जीवन में मौजूद औरतों के लिए 'विश्व महिला दिवस' पर हार्दिक शुभकामनाएं देती हूँ. यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के इतिहास में पहली बार यूनियन धारा 'महिला विशेषांक' के रूप में प्रकाशित हो रही है. यह विशेषांक यानी सबकुछ महिलाओं को, महिलाओं के लिए और महिलाओं द्वारा तैयार किया गया विशेषांक है. लेकिन समग्र पुरूषों को चाहिए कि वे इस विशेषांक को देखें, पढ़ें और उसके जरिए अपने दूसरे हिस्से को बेहतरीन तरीके से जानें और समझें. इस अंक में सभी महिलाओं ने अपना योगदान दिया है. ये महिलाएं बैंक के विभिन्न संवर्गो; विभिन्न पहचान तथा पदों पर कार्यरत हैं. कुछ महिलाएं शाखाओं में कार्यरत हैं. तो कुछ प्रशासनिक कार्यालयों में; कुछ लिपिक हैं. तो कुछ कार्यपालक हैं लेकिन ये सभी महिलाएं, इस संस्था के प्रति अपनी ईमानदारी और निष्ठा से संस्था में मौजूद हैं. मैं अपने प्रबंधन और संपादकीय बोर्ड के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने यूनियन धारा के इस विशेष और नवोन्मेषी अंक के प्रकाशन में मुझे अपना संपूर्ण समर्थन दिया. यूनियन बैंक की 'महिला' ऊर्जावान है, वह कुछ हटकर करनेवाली साहसी, सुंदर और सकारात्मकता के साथ जोश और उत्साह से लबालब है. यहां हमने बहुत से विषयों पर बात की है–स्त्री–एक जैविक उत्पाद और उसका जन्म, पुरानी परंपराओं के साथ उसकी यात्रा और उसकी वर्तमान स्थिति, अस्तित्व के लिए उसका संघर्ष और उसकी सफलता. हमारा यह समाज हरदम उसे क्या करना है और क्या नहीं करना है, यह बताता है लेकिन उसे कभी यह नहीं पूछता कि एक 'स्त्री' के रूप में वह क्या चाहती है और यही मुख्य समस्या है.

स्त्री के अस्तित्व की लड़ाई, उसके जन्म के साथ ही शुरू होती है. हमारा सामाजिक ताना–बाना लड़की के जन्म की अनुमति नहीं देता, बावजूद इसके कुछ लड़कियां इस दुनिया में जन्म लेती हैं. (यही बात भारतीय समाज के स्त्री पुरूष अनुपात में असंतुलन पैदा करती है.) और यही लड़कियां स्त्री के रुप में इस दुनिया में जादू कर देती हैं. अपनी करिश्माई ऊर्जा, मुस्कुराहट, संघर्ष, संवेदनशीलता, परिश्रम, ईमानदारी तथा इस दुनिया में एक स्त्री के नाते अपनी मौजूदगी से वे इस दुनिया को जीने लायक बनाती हैं.

सर्वशक्तिमान ईश्वर का महानतम सपना
उसकी सर्वश्रेष्ठ रचना है 'वह'
और वह रचती है,
एक बेहतरीन दुनिया, एक बेहतर अस्तित्व
आप कगार पर खड़े हो,
उसकी मुस्कान आपको संबल देती है,
मुसीबतों से भरे रास्ते पर
उसका हाथ आपके हाथ में
आप थक जाते हो, वह पानी पिलाती है

Dear Friends,

In each and everybody's life, there exist a woman. She exists with different names and relations but she is always there. I wish you all and the woman in your life 'Happy World Women's Day'. This is the 1st time in History of Union Bank of India that Union Dhara is coming out with women special issue. This special issue means everything is a woman. This issue is of the woman, for the women and by the women but the entire male community have to go through it, read it to better understand their counterpart. All contributors of this issue are women. Women of different cadres of the Bank, women of different identity and capacity of the Bank. Some are working in branch, some are in administrative offices, some are clerks, some are executives but they exist within the institution with their loyalty and honesty to the institution. I am thankful to our management and our Editorial Board, who have given me full support in bringing out this special and innovative issue of Union Dhara. I am thankful to woman of Union Bank of India. She is enthusiastic, she is a path breaker, she is bold, she is beautiful and she is full of zest and zeal with positive attitude. Here we are talking about so many things. Woman, as a biological product and then her birth, her journey with old ethics and her present position, her struggle for existence and her success. This society of ours always tells her what to do and what not to do but it didn't ask her 'what's exactly she wants as a woman?' and this is the main problem.

A fight or struggle for existence of woman starts with her birth itself. Social fabric of society does not allow birth of the girl child but still some girls come to this world (this is creating imbalance in male-female ratio of Indian society) and they create miracles in this world being a women. They make this world livable with their charismatic energy, smile, struggle, empathy, hard work, honesty and just being there in the world as a woman.

Divine's greatest dream
His superlative creation is "SHE"
And she creates
A better world, a better existence,
You, standing on ledge,
Her encouraging smile.
On a road with obstacles
With her hand in hand
you get tired, she gives you water

आप रोते हो, वह आपके आंसू पोंछती है
आप हंसते हो, वह प्यार से आपकी ओर देखती है
आपकी जीत, उसके खुशी के आंसू
वह रेशम, वह डोरी, धागा और रस्सी भी
वह बेटी, बहन, सखी, पत्नी
सहेली और मां भी!
सफलता के परचम लहराने में
वह व्यस्त होने के बावजूद भी
आप उसे हर जगह पाओगे
आपकी जिंदगी के हर मोड़ पर, उसका अस्तित्व
वह विश्व की आधी आबादी किंतु
विश्व को समाहित करनेवाली.
वह स्वयं में त्रिमूर्ति है
वह दुर्गा, लक्ष्मी और काली.
और हम उसे प्रणाम करते हैं
उस ईश्वरीय स्त्रीत्व को
हमारा प्रणाम !

you cry, she wipes your tears
you laugh, she grins admiringly
you win, she cries the tears of joy
A silk twine,
a cord, a string and a rope too
She's a daughter, sister, friend, wife,
girlfriend and a mother
while she's busy achieving
pinnacle of successes.
you'll find her, on every walk
of your life on every turn.
She's half the world, but
accommodates the whole.
she's the trinity herself
she's Durga, Lakshmi and Kali
And we bow to thee,
the divine feminine
we bow to thee.

हां जी, उस स्त्रीत्व को, उस ईश्वरीय स्त्रीत्व के आगे हम नतमस्तक हैं और हां, उस सुंदर और साहसी स्त्री शक्ति को यह हमारा सलाम है.

365 x 24 x 7 के लिए विश्व महिला दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं !

Yes, we bow to thee, we bow to the divine feminine, And yes, this is our salute to power of woman. Having her beautiful, bold substance.

Happy World Women's Day for 365 x 24 x 7.

डॉ. सुलभा कोरे Dr. Sulabha Kore

छपते छपते...

विश्व महिला दिवस के उपलक्ष्य में वाय.बी.चव्हाण ऑडिटोरियम, मुंबई में आयोजित गरिमामयी कार्यक्रम में दि. 8 मार्च 2018 को **'यूनियन धारा'** के महिला विशेषांक का विमोचन करते हुए श्री राजकिरण रै जी., बैंक के प्रबंध निदेशक एवं सीईओ तथा विशेष अतिथि, श्रीमती शिखा शर्मा, एमडी एवं सीईओ, एक्सिस बैंक तथा अन्य गणमान्य.

महिला दिवस पर विशेष जानकारी

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस, हर वर्ष 8 मार्च को पूरे विश्व में मनाया जाता है. कोई भी पर्व या तिथि विशेष मनाने के पीछे कोई न कोई ऐसा जरुर कारण होता है जिससे हमारा समाज प्रभावित होता है. हमारे समाज में महिलाओं की भागीदारी, विशेष योगदान, महिलाओं के प्रति सम्मान और महिलाओं के प्रति समाज निर्माण में योगदान को देखते हुए हर वर्ष पूरे विश्व में 8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है. अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाये जाने का उद्देश्य जाति-पाति, राजनीति, समाज में फैली कुरीतियाँ और ऊंच-नीच की भावना और समाज में महिलाओं को बराबरी का दर्जा दिलाना और समान अधिकारों की रक्षा करना है. आज के इस 21वीं सदी के दौर में महिलाओं ने पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर, समाज के हर क्षेत्र में अपनी भागीदारी निभाई है. समाज में हर तबके की महिलाओं के अधिकारों की रक्षा हो इसलिए संयुक्त राष्ट्र संघ के नेतृत्व में हर वर्ष 8 मार्च को पूरे विश्व में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है.

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का इतिहास

नीतू ईजे
क्षे. का., मदुरै.

वैसे तो सदियों से हमारे समाज में महिलाओं को सिर्फ घर के कामों तक ही सिमित रखा जाता रहा है. हर समय नारी को केवल घर के काम करने वाली और परिवार की जिम्मेदारी उठाने वाली ही समझा जाता रहा है. कभी भी हमारे समाज में महिलाओं को बराबरी का दर्जा नहीं दिया गया. इसका मुख्य कारण समाज में फैली कुरीतियां और पुरुष मानसिकता रही है जिसके कारण हर वक्त ये महिलायें हमारे समाज में हमेशा से उपेक्षित रही हैं. इसे देखते हुए सर्वप्रथम विश्व के सबसे पुराने लोकतंत्र संयुक्त राज्य अमेरिका में वहाँ की राजनितिक पार्टी 'सोशलिस्ट पार्टी' के तत्वावधान में 28 फरवरी 1909 को पहली बार अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया जिसका मुख्य उद्देश्य अमेरिकी लोकत्रंत के चुनाव में महिलाओं की भागीदारी और उनको वोट दिलाने का अधिकार था. फिर 1910 में कोपेनहेगेन सम्मेलन में पहली बार महिला दिवस को अंतर्राष्ट्रीय दर्जा दिया गया और विश्व स्तर पर महिलाओं के सम्मान और समाज में भागीदारी हेतु इसे अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मनाया जाने लगा.

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान 1917 में महिला दिवस के अवसर पर रुस की महिलाओं ने अपने हक़ के अधिकारों की रक्षा और मूलभूत अधिकारों जैसे रोटी, कपड़े की मांग पर पहली बार हड़ताल पर जाने का फैसला किया.

पूरे विश्व के इतिहास में यह किसी भी देश की महिलाओं द्वारा इतना साहसिक फैसला था कि वहां की तत्कालीन सरकार पूरी तरह से हिल गयी और सरकार को अपनी सत्ता से हाथ धोना पड़ा. फिर उसी समय रुसी महिलाओं को वोट देने का अधिकार प्रदान किया गया और यह ऐतिहासिक घटना 8 मार्च को हुई, जिसके कारण रुस में स्वतंत्र रूप से 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' मनाया जाने लगा.

इस कारण धीरे-धीरे महिलाओं की मांगों की आवाज़ पूरे विश्व में उठने लगी जिसके कारण विश्व के सभी देशों में अपने समाज में महिलाओं के सम्मान और भागीदारी के लिए उनके मौलिक अधिकारों को सुरक्षा प्रदान की जाने लगी. संयुक्त राष्ट्र संघ के गठन के बाद पूरे विश्व में महिलाओं के अधिकारों की रक्षा के लिए अनेक नीतियां और कार्यक्रम बनाये गये और फिर 8 मार्च को विश्व के सभी देशों में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाने लगा. भारत में भी महिला दिवस को विशेष महत्व दिया जाता है और व्यापक रूप से हमारे देश में भी महिला दिवस मनाते हैं.

महिलाओं को अनेक नामों से पुकारा जाता है, कभी यह नारी कहलाती हैं तो कभी स्त्री, तो कभी औरत. भले ही इन महिलाओं को चाहे किसी भी नाम या रूप में देखा जाय लेकिन हमारे समाज में महिलाओं के सहयोग के बिना सम्पूर्ण विकास की कल्पना नहीं की जा सकती है. चाहे इन्सान के परवरिश की बात हो या लालन पालन की, वंशवृद्धि की हो या एक अच्छे समाज निर्माण की या फिर कला संस्कृति और धर्म की! हर जगह महिलाओं के सहयोग के बिना हमारा समाज अधूरा है. फिर भी समाज के अनेकों हिस्सों में आज भी कई जगह इन महिलाओं को उपेक्षित ही रहना पड़ता है.

लेकिन इन सबसे परे आज की महिलायें अपने अदम्य साहस और साहसिक निर्णयों के चलते समाज के हर क्षेत्र में अपने हुनर और सफलता का डंका बजा रही हैं. आज के इस महिला सशक्तिकरण के दौर में महिलाओं की स्थिति का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि दुनिया के सबसे पुराने लोकतान्त्रिक देश संयुक्त राज्य अमेरिका में एक महिला के रूप में हिलेरी क्लिंटन ने सबसे बड़े संवैधानिक पद के लिए अपना एक मजबूत दावा पेश किया, जो कि इस बात की ओर इशारा करता है कि आज के दौर में ये महिलायें पुरुषों की तुलना में कहीं भी पीछे नहीं हैं. दुनिया के हर क्षेत्र में ये महिलायें पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं. भारतवर्ष की अगर बात करें तो जब से मानवता की उत्पत्ति हुई है, भारतवर्ष को संस्कृति का जनक कहा जाता है और प्राचीन काल से ही भारत को विश्वगुरु का दर्जा हासिल है.

कहने का आशय यह है कि हमारा देश भारत, पूरे विश्व को मानवता की राह पर चलने का मार्ग दिखाता रहा है और बात जब महिलाओं की आती है तो हमारा देश भारत, सदियों से ही महिलाओं के सम्मान में सदैव अग्रणी रहा है, भारतीय संस्कृति भी तो यही कहती है

''यत्र नार्यस्तु पुजयन्ते, रमन्ते तत्र देवता''

'अर्थात जहां नारी की पूजा होती है, वहां पर ईश्वर स्वयं खुद निवास करते हैं'

पूरे देश में इस दिन महिलाओं को समाज में उनके विशेष योगदान के लिए सम्मानित किया जाता है और समारोह आयोजित किए जाते हैं. महिलाओं के लिए काम कर रहे कई संस्थानों द्वारा जैसे अवेक, सेवा, अस्मिता, स्त्रीजन्म, जगह-जगह महिलाओं के लिए प्रशिक्षण शिविर लगाए जाते हैं. सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है. समाज, राजनीति, संगीत, फिल्म, साहित्य, शिक्षा आदि क्षेत्रों में श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए महिलाओं को सम्मानित किया जाता है. कई संस्थाओं द्वारा गरीब महिलाओं को आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है. भारत के कुछ राज्यों में इस दिन सरकारी बसों में महिलाओं को निशुल्क यात्रा करवाई जाती है. भारत में महिलाओं को शिक्षा, वोट देने के अधिकार के साथ, सभी मौलिक अधिकार प्राप्त हैं. धीरे-धीरे परिस्थितियां बदल रही हैं. भारत में आज महिलाएं आर्मी, एयर फोर्स, पुलिस, आईटी, इंजीनियरिंग, चिकित्सा जैसे क्षेत्रों में पुरूषों के कंधे से कंधा मिला कर चल रही हैं. माता-पिता अब बेटे-बेटियों में कोई फर्क नहीं समझते हैं. लेकिन यह सोच समाज के कुछ ही वर्गों तक सीमित है.

सही मायने में महिला दिवस तब सार्थक होगा जब विश्व भर में महिलाओं को मानसिक व शारीरिक रूप से संपूर्ण आजादी मिलेगी, जहां उन्हें कोई प्रताड़ित नहीं करेगा, जहां उन्हें दहेज के लालच में जिंदा नहीं जलाया जाएगा, जहां कन्या भ्रूण हत्या नहीं की जाएगी, जहां बलात्कार नहीं किया जाएगा, जहां उसे बेचा नहीं जाएगा. समाज के हर महत्वपूर्ण फैसले में उनके नजरिए को महत्वपूर्ण समझा जाएगा. तात्पर्य यह है कि उन्हें भी पुरूष के समान ही समझा जाएगा. जहां वह सिर उठा कर अपने महिला होने पर गर्व करें, न कि पश्चाताप, कि काश! मैं एक लड़का होती.

✦✦✦

महाशक्ति

सुनिता हलदे
विलेपार्ले (पूर्व) शाखा
मुंबई (प)

1947 में भारत स्वतंत्र हो गया. हमारा संविधान भी तैयार हो गया. इस संविधान के अनुसार स्त्री को भी समान नागरिक अधिकार मिल गये. सरकार ने स्त्री का जीवन सुखकर करने का भरपूर प्रयास किया है.

लेकिन इतने सालों बाद भी स्त्री का सही सम्मान नहीं हो रहा है.

स्वामी विवेकानंदजी ने सही कहा है कि शक्ति के सिवाय संसार का उद्धार होना संभव नहीं है. हमारा देश अब भी दुर्बल और पिछडा क्यों है? हमारे देश में शक्ति का अवमान होता है इसलिए भारत में मातृशक्ति जागृत हो गयी है. इस मातृशक्ति द्वारा हमारे इस देश में पुनश्च गार्गी, मैत्रेयी का निर्माण होगा.

स्त्री को उन्होंने महाशक्ति कहा है और इस महाशक्ति की उपासना के सिवाय कुछ भी हासिल नहीं होगा. जीवन को कर्तव्यदक्ष और आदर्श चरित्र बनाने के लिए नीतिमान स्त्री शक्ति का सम्मान करना होगा.

स्त्री सम्मान का सही मतलब है कि संपूर्ण समाज की स्त्री की तरफ देखने की दृष्टि बदलनी होगी. सारा समाज आज मेरे साथ है, यह भावना उसके मन में जागृत होनी चाहिये.

आज भारतीय समाज में स्त्री ने बहुत सुंदर तरीके से घर संभाल कर पुरूषों को दैनिक जिम्मेदारी से मुक्त रखा है, इसलिए आज पुरूष समाज में मान-सम्मान, आदर, प्रतिष्ठा और धन कमाने के लिए निश्चित रूप से बाहर निकला. परन्तु नारी को क्या मिला? उसे घर की चौखट से बाहर आने की अनुज्ञा ही नही थी.

उसकी आत्मनिर्भरता खत्म हो चुकी थी. इस कारण समाज का बहुत बड़ा नुकसान हुआ. आधी उर्जा उत्पादकता मानव संपदा का उपयोग सही तरीके से नहीं हुआ. क्या स्त्री ने घर के पुरूष को दिये हुये मानसिक आधार का मूल्य हो सकता है?

नारी नारायणी है, परन्तु प्रत्यक्ष में इस देवी को तो हमने दासी बनाया है. बलात्कार, छेड़छाड़ इस प्रकार से आज वह पूरी तरह परेशान है. उसे पुनः सम्मान से खडे करना, समाज का काम है. आज अखबार में कहीं ना कहीं उन पर की गई अत्याचार की खबरें छपती है.

दिल्ली में हुई अमानवीय घटना के बाद समाज में एक असुरक्षा की भावना निर्मित हो गई है. इस कारण नारी के मन में भी असुरक्षा की भावना अधिक जागृत हो गई है.

आज समाज में विविध क्षेत्रों में नारी अधिक क्षमता से प्रवेश करने के बावजूद भी इस तरह की घटना घटती है तो वो समाज को अधिक सोचने को मजबूर करती है.

जब आधुनिक विचारों का, प्रारंभ हुआ तब से नारी को पुरूषों के बराबर का माना गया. मौका पाने पर वह पुरूष के बराबरी से काम कर सकती है, यह साबित हो गया है. वह आत्मविश्वास से समाज में रहने लगी.

नारी के आत्मसम्मान और सुरक्षा के लिए नये नियम (कायदे/कानून) बनाये गये, परन्तु इस बदलाव के बाद भी पुरूषों की मानसिकता बदली नहीं. नारी के प्रति देखने का पुराना वर्चस्ववादी, उपभोगवादी दृष्टिकोण कायम रहा.

आज भी हमारे समाज में गाली-गलौच होती है तो स्त्रियों की बदनामी के उल्लेख से ही होती है.

आज समाज को जरूरत है नारी के पीछे गंभीरता से खड़े होने की, उनके पंखों को बल देने की, उन्हें आत्मसम्मान देने की.

✦✦✦

बेबाक साहित्यिक अभिव्यक्ति
कृष्णा सोबती

पूजा वर्मा
क्षे. का., पुणे

महिला साहित्यकारों में एक सशक्त नाम है, लेखिका कृष्णा सोबती का. उनकी लेखनी में क्या नहीं है ? उनके लेखन में क्रांति है, भावुकता है. उनकी लेखनी समाज से जुड़ी भी है और समाज की बेड़ियाँ तोड़ती भी है. उनकी लेखनी के जरिए महिलाओं के हृदय में छिपी वेदना भी दिखती है तो उनमें छुपी हिम्मत भी दिखती है. कल्पना शक्ति ऐसी कि पाठक को लगे कि उसकी बातों को ही कलम से उतारा गया है. जो बात स्त्री कह न सके, उसे लिखकर बताया है.

साहित्य जगत में एक ऐसा नाम जो, महिला क्रांतिकारी साहित्यकारों में गिना जाता है. ऐसा नाम जिसने महिलाओं की पारंपरिक छवि से हटकर महिलाओं का वह रूप समाज को दिखाया, जिसे हर महिला जीती है एवं महसूस करती है. कृष्णा सोबती की लेखनी में उनकी कल्पना शक्ति छलक़ती है, उनकी लेखनी से लिखा एक एक शब्द महिला की मनःस्थिति, उनके हृदय में चल रहे द्वंद्व एवं परिवार और समाज में उनकी भूमिका को बताता है.

कृष्णा सोबती का जन्म 18 फरवरी 1925 को गुजरात, पंजाब, जो अब पाकिस्तान में है वहां हुआ, इनकी प्राथमिक शिक्षा भारत के दिल्ली एवं शिमला इन नगरों में हुई. उच्च शिक्षा इन्होंने फतेहचंद कॉलेज, लाहौर से प्राप्त की, परंतु बंटवारे के बाद इन्होंने भारत में ही वास किया. कृष्णा सोबती की विशेष रुचि काल्पनिक लेखन में है, इनके हिन्दी लेखन में पंजाबी एवं उर्दू के शब्दों की प्रमुखता है. इनकी विशेषता उस क्षेत्र के शब्दों को ग्रहण करने में है जिस क्षेत्र पर वह लेख या कहानी लिख रही होती है. सोबती ने महिलाओं के मुद्दों, जैसे उनकी पहचान, भूमिका, कामुक भावना पर लेख लिखे परंतु उन्हें केवल महिलाओं की लेखिका कहलाने से एतराज रहा है, उनके अनुसार लेखन में वह महिला एवं पुरुष दोनों के विचारों को महत्व देती हैं.

उनके विषय, शब्दों एवं मुहावरों के चयन को आलोचना का भी सामना करना पड़ा है. आलोचकों के अनुसार उनके लेखन में हमेशा कामुक भावना को दर्शाया जाता है, परंतु उनके विचारों में उन्होंने महिलाओं की उन्हीं भावनाओं को प्रदर्शित किया है जिन्हें आम तौर पर प्रदर्शित नहीं किया जाता या जिन्हें अभिव्यक्त करने में महिलाएं हिचकिचाती हैं. ऐसी ही एक बात है, अब यह बात अलग है कि भारतीय परिवेश में ये बातें सदैव बंद कमरों में की जाती हैं, लेखन के जरिए इन्हें व्यक्त कर जगजाहीर नहीं किया जाता है. सोबती ने शुरुआती दौर में लघु कथाएँ लिखीं, उनकी कथा लामा (तिब्बत के बौद्धों के बारें में) एवं 'नाफिसा' का प्रकाशन 1944 में हुआ, इसी वर्ष सोबती ने बंटवारे पर अपना लेख 'सिक्का बदल गया' प्रकाशित किया.

सोबती ने अपने प्रथम उपन्यास, 'चन्ना' के प्रकाशन हेतु उसकी पाण्डुलिपि लीडर प्रेस, इलाहाबाद में दी थी, पाण्डुलिपि को स्वीकार किया गया, परंतु बाद में उन्हें ज्ञात हुआ कि उनके लेखन में बदलाव किए गए हैं, जो उन्हें स्वीकार नहीं था, उन्होंने इसके प्रकाशन को बंद करने को कहा एवं छपाई पर हुए व्यय को भी स्वयं वहन किया.

बाद में राजकमल प्रकाशन द्वारा इसे 'जिंदगीनामा: ज़िंदा रुख' के नाम से सन 1979 को प्रकाशित किया गया. कृष्णा सोबती को 'जिंदगीनामा: ज़िंदा रुख' के लिये सन 1980 में साहित्य अकादमी पुरस्कार भी प्राप्त हुआ.

जिंदगीनामा पंजाब के ग्रामीण जीवन पर आधारित कहानी है.

'हम हशमत': वर्ष 1960 की शुरुआत में इन्होंने अपने उपनाम 'हशमत' के नाम से कुछ प्रकाशन किए जो काल्पनिक ना होकर सत्य पर आधारित थे. इनमें भीष्म साहनी, निर्मल वर्मा एवं नामवर सिंह के बारे में लिखा गया है. उन्होंने अपने उपनाम 'हशमत' (जोकि एक मर्दाना नाम है) के बारे में कहा कि हम दोनों एकदम अलग हैं, मैं पौराणिक हूँ, यह नवीन है, मैं छुपाती हूँ, यह उजागर करता है. कृष्णा सोबती के 'हशमत' को लेखक, आलोचक सभी ने सराहा. इसमें लेखक अशोक वाजपेयी भी शामिल हैं, लेखक सुकरिता पॉल कुमार का कहना है कि 'मर्दाना उपनाम रखने से सोबती बिना किसी हिचक के अपने साथियों के बारे में लिखने में सक्षम हुई हैं.'

इनके अन्य उपन्यासों में डार से बिछड़ी–1958, मित्रों मरजानी–1966, सूरजमुखी अंधेरे के–1972, यारों के यार, तीन पहर–1968, ए लड़की प्रमुख हैं.

सोबती को वर्ष 2010 में भारत सरकार द्वारा पद्म भूषण की उपाधि दी गई, जिसे सोबती ने ससम्मान अस्वीकार किया. इन्हें वर्ष 2017 में भारतीय साहित्य में इनके योगदान हेतु ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया गया.

सोबती का लेखन हिन्दी, उर्दू और पंजाबी संस्कृति से प्रभावित है एवं उसमें दर्शाए व्यक्तित्व हमेशा सशक्त एवं समाज की चुनौतियों को स्वीकार करने वाले होते हैं. हिन्दी की महिला लेखिकाओं में 'कृष्णा सोबती' एक ऐसा नाम है, जो एक नए आधुनिक एवं बोल्ड सोच को लेकर लिखता है. इनकी बेबाकी पाठकों को आकृष्ट तो करती ही है, साथ में सोचने के लिए भी मजबूर करती है.

उपन्यास– जिंदगीनामा • मित्रो मरजानी• डार से बिछड़ी • सूरजमुखी अंधेरे के • यारों के यार • समय सरगम • ए लड़की

लघु कथाएँ – नाफिसा• सिक्का बदल गया • बादलों के घेरे • बचपन

Women Empowerment

Monika Kalia
RBMD, CO Mumbai

Whenever, I think of the subject "Women Empowerment", the first name that comes to my mind is Anandibai Gopalrao Joshi.

When, I read her story, I wondered, how many women in that era could even dream of achieving what she could achieve. The era was marked with British Rule, child marriage, lack of infrastructure for education, health etc. not only for women but for men as well.

Anandibai Gopalrao Joshi (March 1865 to February 1887), one of the earliest Indian female physician and also believed to set foot on American soil from India. Married at the age of 9, she lost her first child due to sickness, as India at that point did not have enough medical facilities. Depressed and frustrated, she wanted that similar thing should not happen to anyone else. Her husband encouraged her to pursue study of medicine sciences. However, as the same was not available within India, she was encouraged to go to America. At the last moment, her husband was not allowed to accompany her and she had to go alone.

From the above story, there are three things to ponder upon:

1. How many of us are willing to go out of our comfort zone?
2. How many of us are willing to take an action, however big or small it may be to create path for women empowerment?
3. It is often said, behind every successful man there is a woman, but it's time for men to realize that behind every successful woman there is a man.

The gender bias is prevalent not only in India but world over. That is why, to date, there is an International Women's Day, which was first held over 100 years ago. It is said, a job is not over until the job itself becomes meaningless. To elaborate, a well known oncologist of Tata Memorial hospital said in an interview that the job of a doctor is to prescribe medicine for recovery of sick patient but the true victory lies, only if, doctors are able to reduce or eradicate sickness and thereby making their job meaningless. There has been enough of talk on the issue and it is now time to start our act in whatever, small or big way to make these talks meaningless in the shortest possible time.

Even in our Constitution, the Father of Indian Constitution Dr. Ambedkar has stated in the principle of equality that each individual should have equal rights irrespective of caste, creed, religion or gender etc. At that point in 1950 also the society had acknowledged and felt gender bias. There were and still are reservations on the basis of caste and religion but none on the basis of gender. But do we need any reservations?? The answer is big NO. Then what do we want as part of women empowerment?

We want to be **treated equally with men,** when we have joined the profession, we are fully aware of our responsibilities at home and office and we are capable of handling those. When, we perform equally, we need to be treated equally. During an interview process, one woman was asked if she is promoted, she may be transferred outstation and in that scenario, how will she handle her family responsibilities. Let me ask a question here, that when a promotion is given to a male colleague, he is never asked, if his wife is also working, how his wife will cope with family responsibilities in his absence from home town. Why this disparity? Do the family responsibilities belong only to women?

This takes me to next issue that even after sensitizing and flagging off the issue of equality on the basis of gender in 1951 in our constitution, why are we still not able to do anything about it? Reason is, it's not only related to office

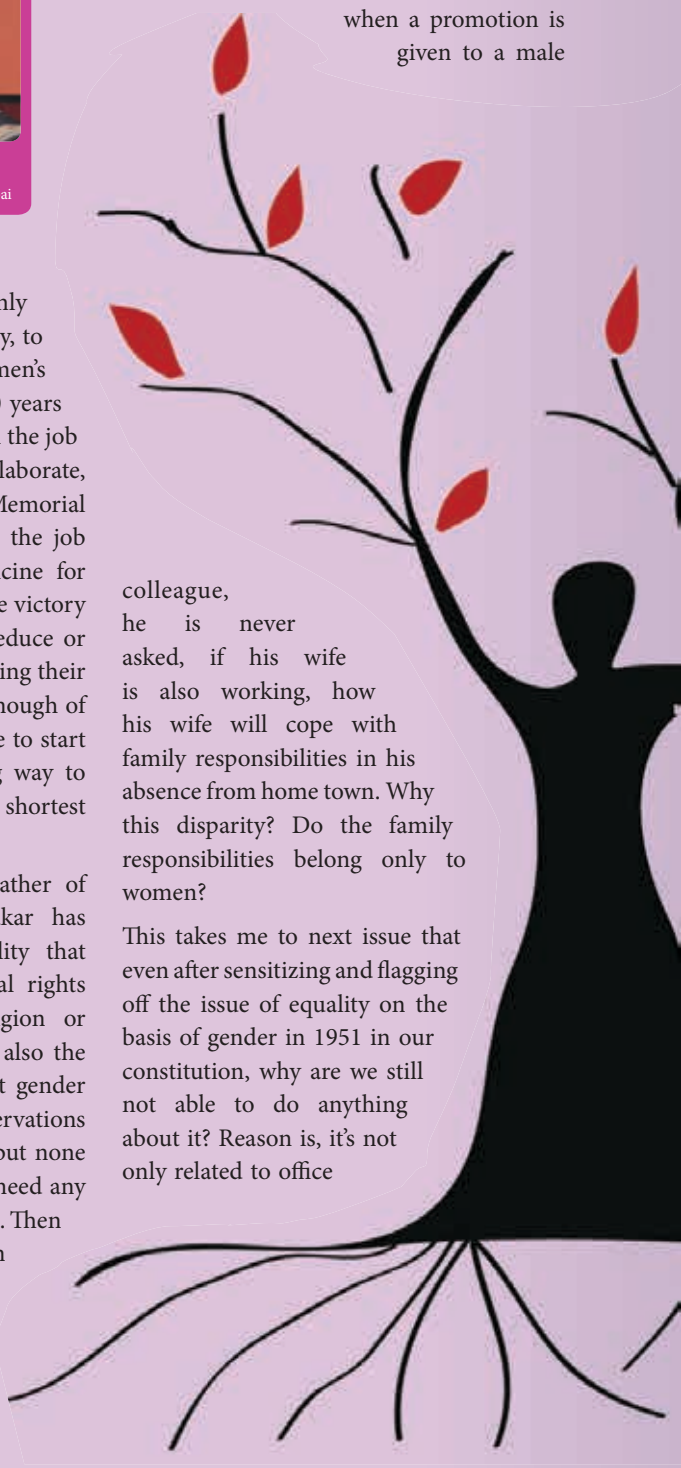

space, it is in our society. While raising the family, how many of us follow the principle that is now being shown in the advertisement of comfort fabric conditioner manufactured by HUL. Here, the mother is using fabric conditioner and the daughter asks, why she is doing this after the clothes have been washed. To this the son overhearing the conversation says to her sister to learn all this as it will be useful tip for her future. After the son's remarks, the mother subtly calls the son for help and made him wash the clothes with the fabric conditioner and tells him that this work can be done by him as well, then why only the sister should learn. **" A very subtle way for changing the attitude – Charity begins at home."**

Do you know that this kind of thought provoking change in advertisement has been brought in only some 15 years back. Till then, even our product marketing or communication was also gender biased.

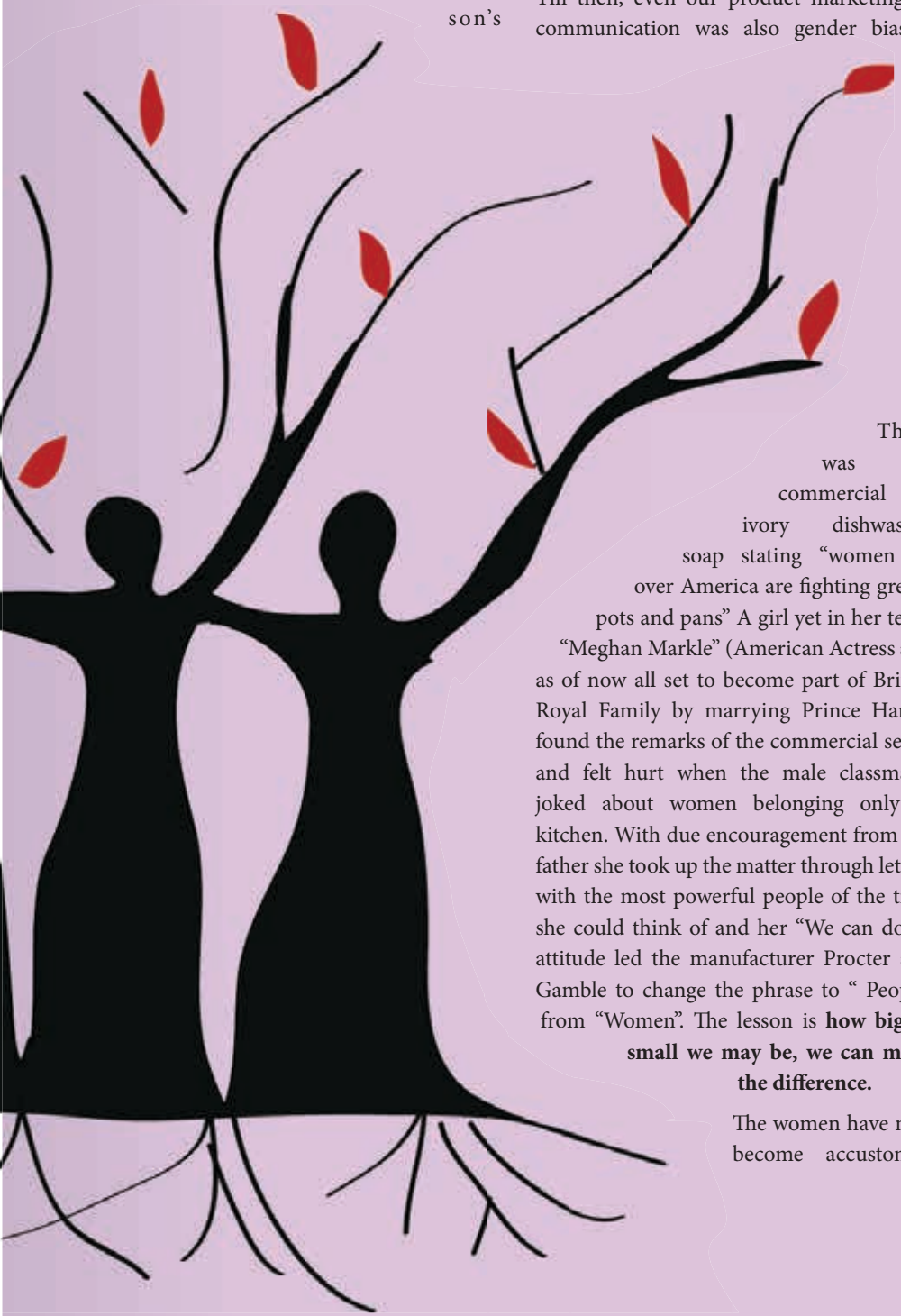

There was a commercial of ivory dishwasher soap stating "women all over America are fighting greasy pots and pans" A girl yet in her teens "Meghan Markle" (American Actress and as of now all set to become part of British Royal Family by marrying Prince Harry) found the remarks of the commercial sexist and felt hurt when the male classmates joked about women belonging only to kitchen. With due encouragement from her father she took up the matter through letters with the most powerful people of the time she could think of and her "We can do it" attitude led the manufacturer Procter and Gamble to change the phrase to " People" from "Women". The lesson is **how big or small we may be, we can make the difference.**

The women have now become accustomed to compromise on these biases on a daily basis that many a times they do not even realize anything wrong has happened. In the society also, women are brought up with the values of compromise and adjustment. The fairy tales still talk about the fact that girls need prince charming to bring them out of adversity. Why, are these fairy tales still there? Why can't we replace them with the tales of courage and achievements of women in various fields, right from Jhansi ki Rani, Savitribai Phule, Sunita Williams, Chanda Kochar and various other innumerable examples. What are we women waiting for, why can't we **change the bedtime stories to our girls**. Why can't our newspapers bring out stories of courage and achievements of women instead of crime against women. **Let our achievements scare out the men enough so that they do not dare to commit a crime against us.**

One of the least found attribute in women is **"Confidence".** Confidence is nothing more than believing in yourself, and believing in yourself is about doing things you once didn't believe you could do. For others to believe in you, first you have to believe in yourself and that belief exude in your personality for all.

While it is always said that behind every successful man there is a woman, however, it is equally true that **behind every successful woman there is a man.** Man – may be as father or husband. As a father he helps her equip her with everything that can fuel her imagination and dreams and as a partner for life he gives her wings for achieving that imagination and helps her achieve much more than what she could ever dream of.

Lastly, I would like to state that it is actually stupid of women to think that they are equal to men; they are actually far more superior. Women should believe that **they deserve a place on the table and make sure to get their place on the table, even if, they are not invited by anyone.**

✦✦✦

आज की नारी

नमिता प्रसाद
क्षे. का., हावड़ा

आज की नारी का सफर चुनौती भरा जरूर है, पर आज उसमें चुनौतियों से लड़ने का साहस आ गया है. अपने आत्मविश्वास के बल पर आज वह दुनिया में अपनी एक अलग पहचान बना रही है. आज की नारी आर्थिक व मानसिक रूप से आत्मनिर्भर है.

परिवार व अपने करियर दोनों में तालमेल बैठाती नारी का कौशल वाकई काबिले तारीफ है. किसी को शिकायत का मौका नहीं देने वाली नारी, आज अपनी काबिलियत व साहस के बूते पर कामयाबी के मुकाम तक पहुंची है.

चुनौतियों का हँसकर स्वागत करने वाली महिलाएं आज हर क्षेत्र में अपना लोहा मनवा रही हैं. कल तक भावनात्मक रूप से कमजोर महिलाएं आज आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन रही हैं तथा अपनी जिंदगी के महत्वपूर्ण फैसले भी स्वयं कर रही हैं.

मैं हूँ ना –

शादी के पहले आत्मनिर्भर रहने वाली नारी के जीवन में शादी के बाद अचानक बदलाव-सा आ जाता है. अब उसके लिए अपने करियर के बारे में गंभीरता से नहीं सोचा तो भविष्य अंधकारमय हो सकता है और यदि परिवार की उपेक्षा की तो दांपत्य जीवन.

नारी को अपने करियर संबंधी किसी भी निर्णय को लेने से पहले बहुत सोचना समझना पड़ता है. परिवार के प्रति उसके द्वारा थोड़ी-सी भी कोताही बरतने पर परिवार के सदस्यों की शिकायतें शुरू हो जाती हैं और उस पर कटाक्ष किए जाने लगते हैं. ऐसे में परिवार और कार्यालय में स्वयं को बेहतर सिद्ध करने की वह हर संभव कोशिश करती है और आदर्श बनकर सबका दिल जीत लेती है.

असुरक्षा की भावना –

नारी के साथ असुरक्षा की भावना हर जगह होती है. महानगरों में आए दिन होती छेड़छाड़, बलात्कार व हिंसा संबंधी घटनाएं नारी को भयाक्रांत करने व अपने कदम पीछे लेने के लिए मजबूर करती हैं. परंतु उसका मजबूत मनोबल उसे हारने से रोकता है और उसका यही मनोबल निरंतर आगे बढ़ने को प्रेरित करता है.

नारी के लिए लैंगिक के साथ-साथ सामाजिक व आर्थिक स्तर पर भी असुरक्षा की भावना होती है. सामाजिक स्तर पर परित्यक्ता व विधवा जैसे शब्द उसके मार्ग का रोड़ा बनकर उसे आगे बढ़ने से रोकते हैं पर इतने पर भी वह अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित करने का सही मौका तलाश ही लेती है और कामयाबी के नित नए कीर्तिमान रचती जाती है.

हम किसी से कम नहीं –

चुनौतियों का हँसकर स्वागत करने वाली महिलाएं आज हर क्षेत्र में अपना लोहा मनवा रही हैं. कल तक भावनात्मक रूप से कमजोर समझी जानेवाली महिलाएं आज आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन रही हैं तथा अपनी ज़िंदगी के महत्वपूर्ण आर्थिक फैसले भी स्वयं कर रही हैं.

अपनी क्षमताओं से महिलाओं ने आज पुरुषों को पीछे छोड़ते हुए परिवार व समाज में एक अलग पहचान बनाई है. आत्मनिर्भर बनकर आज महिलाएं बाज़ार की हर चुनौती का सामना कर रही हैं.

आज की नारी को सही मायने में आधुनिक कहा जा सकता है, क्योंकि उसने अपनी सभी दुर्बलताओं को दूर करके, नजरंदाज करके, अपने आप को मजबूत करने की पुरजोर कोशिश की है और इसमें वो पूरी तरह से कामयाब भी हुई है. उसने अपनी एक विशेष पहचान समाज के सामने पेश की है, जिसमें वह साहसी, परिपक्व, सहिष्णु तथा एक मज़बूत इरादे वाली महिला के रूप में उभर कर समाज में पेश हुई है. आज की नारी को अगर 'सुपर वुमन' भी कहा जाये तो गलत नहीं होगा, क्योंकि आज समाज का कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं, जिसमें प्रतिस्पर्धा न हो, लेकिन इसका दबदबा देखने लायक है. समाज के लगभग हर क्षेत्र में ये पुरुषों से कहीं बढकर चुनौतियां पेश कर रही हैं. कैसे आज की नारी अपने दोहरे रूप को भी पूर्ण सफलता के साथ निभा रही है. एक तरफ करिअर वुमन का ख़िताब हासिल किये हुए है, तो दूसरी तरफ, होममेकर का ख़िताब तो इसकी झोली में है ही. आज की नारी ने अपनी संकीर्ण विचारधारा को त्याग कर अपने अंदर आत्मविश्वास पैदा कर लिया है. वह पति के ऑफिस की समस्याओं को न केवल भली भांति समझती है, बल्कि उस समस्या को दूर करने में पति का हर संभव साथ भी देती है. आज की नारी ने अपने शारीरिक गठन और श्रृंगार पर भी समुचित ध्यान दिया है ताकि वो ताउम्र स्वस्थ और सुंदर रहने के साथ-साथ अपने पिया की भी प्रिया बनी रहे और दूसरी तरफ पति भी अपनी आधुनिक पत्नी के सुंदर, सुघड़, पढ़ी-लिखी, व्यवहारकुशल और स्वाभिमानी स्वरूप का आदर करने लगे हैं. आज की नारी यह भली भांति जानती है कि आज के प्रगतिशील पति को केवल खाना बनाने वाली, पैर छूने वाली, घूँघट में छुपी हुई पत्नी की नहीं, अपितु उच्च मानसिकता, बौद्धिक तथा सामाजिक स्तर वाली पत्नी की आवश्यकता है. आज की नारी ने न केवल एक खुशनुमा और समझदार पत्नी का तमगा हासिल कर लिया है, बल्कि वह दाम्पत्य को अपने प्यार के बल पर मजबूत करने का प्रयास करती है और काफी हद तक वह इसमें सफल

भी हुई है. आज की नारी में उसके व्यवहार, बोलचाल में आश्चर्यजनक परिवर्तन आये हैं. उसकी उपलब्धियां भी बढ़ी हैं, नए-नए विषयों को जानने का उत्साह भी बढ़ा है. अब वह किसी भी समसामयिक विषय पर अपने पति के साथ-साथ या किसी बाहरी व्यक्ति के साथ भी सफलतापूर्वक सलाह-मशवरा कर सकती है. इससे न केवल पति बल्कि और लोगों की नज़रों में भी इसका मान कई गुना बढ़ गया है. आज की नारी, ऐसे पति को तो पसंद करती है, जो संवेदनशील हो, लेकिन जो हमेशा मुंह लटका कर रखते हों या अति भावुक हों, वो इसे पसंद नहीं आते. भावुकता और प्यार के अंतर को भली भांति इसने समझ लिया है. अब कोई भी पुरुष प्यार के नाम पर इसे मूर्ख नहीं बना सकता. आज की नारी अपने विचार, अपनी समस्याएं, अपने राज़ पहले की तरह किसी के सामने बयान नहीं करती. वह इस बात को भली भांति जानती है कि जो पति-पत्नी एक दूसरे को अच्छा, विश्वसनीय, प्यार करने वाला, एक-दूसरे के प्रति सम्मान की भावना तथा एक-दूसरे के प्रति एक सॉफ्ट कॉर्नर रखते हैं, वही सफल दाम्पत्य को निभा पाते हैं. आज की नारी ने अपने व्यक्तित्व को उच्च शिक्षा, फैशन, सौन्दर्य प्रसाधनों और योग आदि की सहायता से काफी प्रभावी बना लिया है. यहाँ कहने में कोई गुरेज़ नहीं कि एक 'स्पेशल वुमन' की छवि को हासिल कर चुकी है, आज की नारी. आज की कामकाजी नारी को उसका बॉस आर्थिक उदारता, अथवा आर्थिक चकाचौंध का लालच दिखा कर जरा भी असंयत तथा असंतुलित नहीं कर सकता. आज की नारी जीवन के प्रति एक सकारात्मक रवैया अपनाकर अपने और अपने परिवार को अधिक खुशहाल बना रही है. आज की नारी को अपनी सफलता का श्रेय लेना भली भांति आता है. आज की नारी अपनी पुरानी 'अबला' की छवि से निकल कर एक 'सबला' के रूप में अपनी पहचान बनाने में कामयाब हो चुकी है. प्रगति का शायद ही ऐसा कोई शिखर बचा होगा, जहाँ आज की नारी न पहुंची हो. इसलिए, आइये, हम इनका नमन करें.

✦✦✦

चरक का कोना

अनीता भोबे
यूनियन धारा, कें.का.

कुटकी एक शक्तिशाली आयुर्वेदिक जड़ी-बूटी है जो कि मुख्य रूप से बार बार होनेवाले बुखार, त्वचा विकार और मधुमेह के इलाज हेतु उपयोग में लायी जाती है. मुख्यतः हिमालय में 3000-5000 मीटर की ऊंचाई पर पाई जानेवाली यह जड़ी-बूटी आकार में छोटी होती है, इसके फूल ज़्यादातर सफ़ेद या नीले रंग के होते हैं. यह स्वाद में कड़वी होती है और वह कफ एवं पित्त को संतुलित करती है. कुटकी में जीवाणुरोधी और एंटीवायरल गुण होते हैं.

तो आइए, जानते हैं इसके गुण!

- लीवर सिरोसिस के इलाज में इसका उपयोग किया जाता है.
- पीलिया के इलाज के लिए एक या दो चम्मच कुटकी का पाउडर पानी के साथ लिया जाता है.
- यह गैस्ट्रिक रस का स्त्राव बढ़ाती है तथा कब्ज के इलाज के लिए सहायक होती है.
- जलोदर या पेट में पानी भरने पर 50 ग्राम कुटकी को 200 मिलिलीटर पानी में उबाल कर सुबह-शाम इसका सेवन करने से लाभ होता है.
- पित्त-कफ असंतुलन की वजह से बुखार में भारीपन, आंतरिक जलन, सिरदर्द, महसूस होता है, तो 1 ग्राम कुटकी पाउडर और 3 ग्राम चीनी के मिश्रण को भोजन करने से 10 मिनट पहले दिन में 1 या 2 बार लें.
- एक्जिमा को साफ करने के लिए कुटकी और चिरायता को हल्का गर्म करें. रात में 5 ग्राम कुटकी और चिरायता को किसी कांच के बर्तन में रखें और उसमें 100 मिलीलीटर पानी डालें और सुबह उठने पर उस पानी को छानकर पी जाएं, इससे एक्जिमा ठीक और खून साफ हो जाता है. 1 से 3 ग्राम कुटकी की जड़ के पाउडर को पानी के साथ दिन में 2 बार लेने से त्वचा के सभी रोग दूर हो जाते हैं.
- कुटकी, मंजिष्ठा, त्रिफला, बच, दारू हल्दी, नीम की छाल और गिलोय को बराबर मात्रा में लेकर बनाये गये काढ़े का 40 दिनों तक सेवन करने से सफ़ेद दाग ठीक हो जाते हैं.
- गठिया रोग में कुटकी के साथ शहद सुबह-शाम लेने से रोग ठीक हो जाता है.
- मुलेठी के साथ इसका प्रयोग करने से यह एंटी-बैक्टीरियल और एंटी-इन्फ्लमेटरी गुण देती है, जिससे रक्त विकार, बुखार और हृदय रोग से राहत मिलती है. इसके अलावा 500 मिलीग्राम से 1 ग्राम कुटकी पाउडर को शहद से साथ सुबह-शाम खाने से हृदय की दुर्बलता दूर हो जाती है.
- पीलिया के कारण आनेवाली हिचकी और उल्टी का इलाज एक चम्मच शहद में 1 ग्राम कुटकी को मिलाकर और दिन में 2 बार इसका सेवन करने से लाभ होता है.
- पाचन स्त्राव को उत्तेजित कर अग्नाशयी इंसुलिन स्त्राव को बढ़ाती तथा ग्लाइकोजन के रूप में रक्त शर्करा के संचय में लीवर की सहायता करती कुटकी मधुमेह प्रबंधन में आवश्यक है.
- वजन कम करने के लिए एक मुख्य हर्बल घटक के रूप में कुटकी का उपयोग किया जा सकता है.
- कुटकी और काले जीरे को पीसकर कान के अंदर की गांठों पर गर्म करके लगाने से कान का दर्द ठीक हो जाता है.
- कुटकी, अतीस, हल्दी, पाढ़ल, नागरमोथा तथा जौ का काढ़ा बनाकर कुल्ला करने से मुंह के सभी रोग ठीक हो जाते हैं.
- कुटकी को पीसकर गर्म लेप बनाकर घाव पर लगाने से आराम मिलता है.
- कुटकी वायरल हेपेटाइटिस के इलाज में बहुत मददगार होती है. यह प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ावा देती है.
- 10 ग्राम कुटकी पाउडर को 240 मिलीग्राम शहद में मिलाकर सुबह-शाम बच्चों को सेवन कराने से उनके रोग ठीक हो जाते हैं.

सावधानी :

- गर्भावस्था के दौरान इसके उपयोग से बचना चाहिए.
- यह जड़ी-बूटी प्रतिरक्षा प्रणाली को सक्रिय बनाती है, इसलिए यदि आपको मल्टीपल स्क्लेरोसिस या ल्यूपस जैसी समस्याएं हैं, तो इसका इस्तेमाल करने से बचना चाहिए.
- कुटकी रक्त में शर्करा के स्तर को कम करती है, इसलिए यदि आप मधुमेह के रोगी हैं, तो बड़ी सावधानी से इसका इस्तेमाल करना चाहिए.
- यदि आप कोई सर्जिकल ऑपरेशन कराने जा रहे हैं, तो शस्त्रक्रिया के पूरा होने के दो सप्ताह के बाद ही इसका सेवन करें.

✦✦✦

आधी आबादी की समस्याएँ एवं निराकरण

पूजा वर्मा
नेहरू प्लेस शाखा,
नई दिल्ली

देश के विकास के बारे में समझने के लिए महिलाओं की स्थिति एक महत्वपूर्ण संकेतक है. हमारे भारत देश में महिलाओं को 'आधी आबादी' बताकर संबोधित किया जाता है किन्तु इस आधी आबादी की समस्याओं पर गौर करेंगे तो ज्ञात होता है कि आज भी महिलाओं की स्थिति सुधारने में कई कार्य करने बाकी हैं.

यह सर्व विदित है कि महिलाओं के अधिकारों की लड़ाई कई दशकों से चली आ रही है, फिर भी वर्तमान में महिलाओं से संबंधित कई समस्याएँ जीवन के सभी क्षेत्रों मे मौजूद हैं, जिसमें सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक रूप शामिल हैं. कागजों पर महिला के सशक्तिकरण की दिशा में प्रगति दिखाई देती है पर वास्तविकता ठीक उसके विपरीत सी प्रतीत होती है. आँकड़ों में दिखता है कि महिला ऊँचे पदों पर कार्यरत है, टॉपर है, सरपंच है और सशक्त हो रही है किन्तु वास्तविकता में महिलाएँ आज भी बराबरी की दौड़ में बहुत पीछे हैं. इसमें कोई संदेह भी नहीं है कि महिलाओं का विकास हो रहा है किन्तु इसकी गति अभी भी धीमी है. हमें प्रयासों की गति को और बढ़ाना होगा.

महिलाओं की समस्याओं की बात करें तो प्रमुख समस्या लिंग के आधार पर किया जाने वाला भेदभाव है. पारंपरिक रूप से महिलाओं को महिला होने के नाते कमजोर समझा और माना जाता है. इसी कारण से उन्हें प्रगति के लिए समान अवसर नहीं मिलते और वे भेदभाव का शिकार होती हैं. पितृ सत्तात्मक व्यवस्था, इस लैंगिक असमानता और भेदभाव का मूल कारण है. यह एक ऐसी व्यवस्था है जहाँ पुरुषों को सत्ता का सुख प्राप्त होता है और यही सत्ता महिलाओं के साथ होने वाले भेदभाव का मार्ग उत्पन्न करती है. उदाहरण के तौर पर, यदि आप अपवादों को छोड़ दें तो आज भी अधिकतर महिलाएँ स्वतंत्रतापूर्वक निर्णय नहीं ले पातीं. ज्यादातर परिवारों में बेटी की शिक्षा पर कम ज़ोर दिया जाता है. घर के कार्यों की जिम्मेदारी और बच्चों की देखभाल करना महिलाओं की जिम्मेदारी मानी जाती है. यही कारण है कि आज भी कामकाजी महिलाओं की संख्या कम है.

इसी पितृ सत्तात्मक व्यवस्था का परिणाम है कि परंपराओं के नाम पर आज भी समाज में कई कुरीतियाँ उपस्थित हैं जैसे दहेज प्रथा, डायन प्रथा, पर्दा प्रथा, तीन तलाक. दहेज के कारण कितनी ही महिलाएँ प्रताड़ित की जाती हैं. इन्हीं कुरीतियों के कारण पुरुषों की तुलना में महिलाओं का लिंगानुपात कम है. तस्करी, बलात्कार और छेड़छाड़ जैसे संगीन अपराध बढ़ रहे हैं, कन्या भ्रूण हत्या और गर्भपात करवाये जाते हैं. बेटा होने की चाहत में कितनी ही बेटियों को सड़क के किनारे, नालों, कूड़ेदान, अनाथालय में छोड़ दिया जाता है. यह सभी लिंग के आधार पर किए जाने वाले भेदभाव के कारण ही होता है. यदि स्त्री–पुरुष में लैंगिक समानता होती तो शायद आज ये सब समस्याएँ भी न होती.

देखा जाए तो जन्म से लेकर मृत्यु तक के सफर में महिलाओं का जीवन बेहद चुनौतीपूर्ण होता है. उन्हें हर पड़ाव पर अपने हक के लिए लड़ना पड़ता है. ऐसी ही एक चुनौतिपूर्ण समस्या और पितृ सत्तात्मक समाज की संकुचित सोच का उदाहरण है – घरेलू हिंसा. आँकड़ों की माने तो विश्व की हर 10 महिलाओं में 6 महिलाएँ घरेलू हिंसा का शिकार हैं. यह हिंसा महिलाओं को शारीरिक, मानसिक, यौनिक एवं आर्थिक तौर पर प्रताड़ित करती है. ज्यादातर महिलाएँ अपने पति या करीबी साथी द्वारा किए जाने वाली हिंसा का शिकार होती हैं. जागरूक होने के बावजूद वह घरेलू हिंसा का विरोध नहीं कर पाती हैं और शोषित होती रहती हैं. सांस्कृतिक प्रवृत्तियाँ, धार्मिक प्रथाएँ, आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितियाँ, घरेलू हिंसा को बनाए रखने के लिए जिम्मेदार हो सकती हैं, किन्तु यह एक व्यक्तिगत सोच का परिणाम है. घरेलू हिंसा न केवल शारीरिक चोट का कारण बनती है बल्कि इससे महिलाओं को मनोवैज्ञानिक, भावनात्मक और सामाजिक ठेस भी पहुँचती है. घरेलू हिंसा विरोधी कानून होने के बावजूद अधिकतर महिलाओं को इसे रोज सहना पड़ता है. वे विरोध नहीं कर पातीं और प्रताड़ित जीवन जीने पर मजबूर होती हैं. घरेलू हिंसा एक ऐसी समस्या है जिसे महिलाएँ समस्या नहीं मानती, जिस पर बात करने में और साझा करने में महिलाओं को संकोच होता है और इसी कारण इसका विरोध भी नहीं करतीं. आवश्यकता है महिलाओं को इस बारें में जागरूक करने की और आवाज़ बुलंद करने की.

समस्याओं की इसी कड़ी में महिलाओं से जुड़ी एक अन्य समस्या है, उनकी सुरक्षा. जहाँ एक तरफ भारत देश विकास की राह पर अग्रसर है वहीं उसी देश की लड़कियाँ / महिलाएँ सुरक्षित महसूस नहीं करती हैं. इसी असुरक्षा की भावना के कारण उन पर कई तरह के बंधन लगाए जाते हैं, जैसे घर के बाहर आने–जाने के समय पर, पहनावे पर, बात करने पर, नौकरी करने पर, घूमने जाने पर. सरकारें दावे करती हैं कि महिलाएँ सुरक्षित हैं, 'बेटी–बचाओ, बेटी–पढ़ाओ' के नारे लगते हैं, फिर भी आए दिन अपहरण, बलात्कार और छेड़छाड़ की घटनाएँ' आम घटनाएँ बन कर रह गयी हैं. पीड़िता को शर्म से छुपना पड़ता है लेकिन आरोपी खुले आम घूमता है. कहा जाए तो लगता है कि देश की कानून और न्यायिक व्यवस्था समाज की मानसिकता के आगे कमज़ोर हो गई है.

एक कामकाजी महिला होने के नाते मैं इस आलेख के

अंत में एक और समस्या के बारे में लिख रही हूँ जो है – कार्यस्थल पर होने वाला यौन उत्पीड़न. कई दशकों की लड़ाई और आंदोलन का परिणाम है कि आज महिलाओं की उपस्थिति हर क्षेत्र में है. सभी क्षेत्रों में महिलाएँ पुरुषों की बराबरी में कार्य कर रही हैं. वह किसी भी मामले में पुरुषों से कम नहीं हैं. लेकिन इन्हीं कार्यस्थलों पर कई बार महिलाएँ यौन उत्पीड़न का शिकार हो जाती हैं. कानूनी व्यवस्था और ढाँचा होने के बावजूद भी महिलाएँ इसका विरोध नहीं कर पातीं और वो चुप रहती हैं. खुद की नौकरी बचाने, प्रतिष्ठा बचाने, कोई मुद्दा न बनाने, स्वयं के ऊपर के दोषारोपण से बचने की कोशिश में वो रोज उत्पीड़न को सहती हैं. कई परिस्थितियों में वह इस उत्पीड़न को नज़रअंदाज़ करती हैं और गुप्त रखती हैं और इस कारण वह मानसिक उत्पीड़न भी सहती हैं.

आज आवश्यकता है इन सभी समस्याओं पर सभी को मिलकर कार्य करने की, जागरूकता फैलाने की, महिलाओं का सम्मान करने की और उन्हें सशक्त बनाने की.

"तू खुद को बदल, तू खुद को बदल,
तब ही तो जमाना बदलेगा.
तू चुप रहकर जो सहती रही,
तो क्या ये जमाना बदलेगा."

–कमला भसीन

समाज की मानसिकता बदलने के लिए बड़े पैमाने पर कार्य करना होगा. कानूनी एवं न्यायिक व्यवस्था को इतना मजबूत बनाना होगा कि जुर्म करने वाला जुर्म करने से पहले भय महसूस करे. हम सबको बदलाव की शुरुआत अपने घरों से करनी होगी जहाँ हम अपने बच्चों में भेदभाव नहीं करेंगे, हम उन्हें महिला का सम्मान करने की सीख देंगे. बदलाव की शुरुआत स्वयं से होती है तो हमें खुद को बदलना होगा, हर शोषण पर आवाज उठानी होगी. स्त्री–पुरुष समानता की लड़ाई लंबी है इसलिए महिला–पुरुष दोनों को साथ में आना होगा. शिक्षित होना होगा और अपने अधिकारों की लड़ाई लड़नी होगी. महिलाओं को स्वयं की इज्जत करनी होगी और अपने आधिकारों के प्रति जागरूक होना होगा. यह जिम्मेदारी पूरे समाज की है कि इस 'आधी आबादी' की समस्याओं को पहचाने और उन्हें दूर करने के लिए साथ में कार्य करे.

✦✦✦

विश्व की आधी आबादी की समस्याएं – निराकरण

पूजा सिन्हा
ठाणे (पूर्व) शाखा
क्षे.का.मुंबई (उ.)

विश्व की कुल आबादी लगभग 760 करोड़ है और स्त्रियों की संख्या का अनुपात विश्व में लगभग पुरुष : स्त्री 105:101 है. अर्थात लगभग आधी आबादी हम स्त्रियों की है. आज 21वीं शताब्दी में स्त्रियों की स्थिति पहले से काफी बेहतर हुई है. परंतु अभी भी स्त्रियों को बुनियादी सुविधाओं की आवश्यकता है.

सबसे मूल एवं प्रथम समस्या शिक्षा की है. भारत में पुरुष की शिक्षा दर 82% के आसपास है, वहीं स्त्रियों की शिक्षा दर मात्र 65% के आस पास है. यूनाइटेड नेशन्स के एक सर्वे के अनुसार हर चार में से एक लड़की अपनी प्राथमिक शिक्षा भी पूरी नहीं कर पाती है. यह स्थिति काफी गंभीर है और गरीब राष्ट्रों में ज्यादा है. किंतु राहत की बात यह है कि शिक्षा दर स्त्रियों में (भारत वर्ष में) पिछले दस वर्षों में 11.80% रही है, पुरुषों के मुकाबले (6.90%). इस समस्या का निराकरण आवश्यक है और सरकार इस दिशा में समुचित कदम उठा रही है.

दूसरी मुख्य समस्या स्त्री स्वास्थ्य है. पूरे विश्व में प्रतिदिन लगभग 800 स्त्रियां मरती हैं. ये उन बीमारियों से मरती हैं, जिनका इलाज चिकित्सा द्वारा संभव है. स्त्री स्वास्थ्य समस्या वहां ज्यादा है, जहां स्त्रियों में शिक्षा का अभाव है.

एक अन्य मुख्य समस्या स्त्रियों के प्रति हिंसा है. यूनाइटेड नेशन्स के अनुसार प्रत्येक तीन में से एक स्त्री हिंसा का शिकार होती है. इसके अलावा प्रत्येक तीन मिनट में एक स्त्री किसी ना किसी तरह की हिंसा का शिकार होती है. इसमें घरेलू हिंसा, रेप, अन्य शोषण इत्यादि हैं.

भ्रूण हत्या और बाल विवाह भी भारत में एक मुख्य समस्या है. आज बाल विवाह के गैर कानूनी होने के 40 वर्षों के पश्चात भी बाल विवाह दर 3.7% है. यह दर पिछड़े राज्यों जैसे बिहार, प.बंगाल, झारखंड में 10% से भी ज्यादा है.

भारत जैसे विकासशील देश में स्त्रियों की स्थिति काफी सोचनीय है. हमें अभी भी कुपोषण, बाल विवाह, दहेज प्रथा, भ्रूण हत्या जैसी कई समस्याओं से जीतना है. इतनी सारी समस्याओं का निराकरण इतनी सरलता से नहीं हो सकता और ना ही सिर्फ सरकारी योजनाओं के भरोसे हो सकता है. सबसे आवश्यक है महिलाओं की शिक्षा पर और जोर देने की. महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना अत्यंत आवश्यक है. इसकी शुरुआत गांवों से, आदिवासियों से करनी होगी.

स्त्रियां बढेंगी, स्त्रियां शिक्षित होंगी तभी तो समाज बढ़ेगा उन्नति की ओर! ✦✦✦

Success Stories of Women

"Being Women" is a gift for which we should be thankful to God and should be proud of.

Amreen Khan
R.O., Jabalpur

"Behind every successful man there is a woman" and "Behind every successful woman is Herself". This saying is not only in the case of a man but this saying stands for the functioning of the whole world.

A female draws out various characteristics which is different from that of a male, varying from factors such as physical, mental and biological. God has created women in such a way that, she can take her generation forward by giving birth to new offsprings. "A Woman is the full circle. Within her is the power to create, nurture and transform."

The most Successful Women don't run from change; they run towards it because she is the Dreamer, A Doer, A Thinker. She sees possibility everywhere.

With the growing importance of women in every field of the community, we can see that a lot and lot more women have made it big, be it in the field of Business, Entertainment, Politics or Social Work. There is a lot we can learn from these Successful Women. Here are the top 9 observed traits of Highly Successful Women; we all need to imbibe in ourselves to be successful.

Believe in yourself: Believe in yourself is the first secret to SUCCESS.

High Self-Esteem and Confidence: Successful women are clear about their goals. They believe they have right to dream and achieve their goals.

Self-Awareness: They evaluate themselves to identify their strengths and areas where they need to develop. They make efforts to work on converting their limitations to their strengths.

Informed Decision Making: They never refuse to the ideas given by others. But at the same time, use their own judgment before taking crucial decisions.

Open to Build Networks: They never miss out a chance to meet new people, socialize with useful personalities and also help others to grow.

Having a Healthy Risk Appetite: Successful women are always ready to take risks. However, they make sure these risks are rewarding and also calculated.

Think Out of the Box: They use innovative and unconventional means to achieve their desired outcome.

Striking the Right Balance Between Work and Family: Equal emphasis on spending time with children and family and for their hobbies helps them cope with stress better.

Finding Happiness in Small Things: The adage of High thinking and simple living makes them take life as it comes. They believe in not complicating life but living it in simplicity.

Being Assertive: The ability to say 'No' when required and being assertive helps in prioritizing their tasks. They make sure to get their points across.

Role Model Powerful Women and their inspiring success stories

1 Keep it real: Vidya Balan, 34, Actor

She has toppled the all dominating hero, reducing him to a supporting role in a male dominated film industry. She transformed from Sabrina Lal in No One Killed Jessica (2011) to Silk in The Dirty Picture (2011), despite people telling her playing Silk wouldn't be worthy of her. She pushed big dorky glasses over her nose, let her stomach hang out in rolls over her jeans and displayed enough cleavage to give item girls a complex, and the audience loved her through it all.

She is doing it again, as a pregnant woman desperately searching for her missing husband in Sujoy Ghosh's Kahaani. She has come a long way in accepting herself as she is, size zero or not.

2 The social network: Kirthiga Reddy, 40, Director Online Operations, Head, Facebook India

Because: She heads the India division of the world's largest social network with over 800 million active users. Since Facebook set up an office in the country in 2010, the user base went up from eight million to over 40 million people in less than two years.

India is Facebook's third-largest market and has an average growth rate of more than one million people per month. Facebook users represent the youngest and most attractive market segment in the country.

3 Show stopper: Ekta Kapoor, 36, Joint Managing Director, Balaji Telefims

2011 was a banner year with five film releases, the most successful of which was the critical and commercial success 'The Dirty Picture', which grossed over ₹114 crore. Despite being written off in 2008 after the saas-bahu bubble burst, Kapoor came back with a bang with big screen releases like 'Love, Sex aur Dhokha', 'Once Upon A Time in Mumbai' and 'Ragini MMS'.

Her production house Balaji Telefilms had a sales turnover of ₹ 151 crore in 2011. She plays the role of the larger than life diva with elan.

4 Fresh start: Renuka Ramnath
CEO and MD, Multiples Alternate Asset Management

Because: As the head of ICICI Ventures, she was dubbed the queen of private equity for managing funds of around ₹ 9,200 crore. She quit at the peak of her career in 2009 to start her own venture. Because her start-up is now a ₹ 2,025 crore private equity fund, backed by top Indian and global institutional investors.

5 Start-up star: Meena Ganesh
CEO & MD, Pearson Education Services

Every time she sells a bright idea for a princely sum, she's ready with the 'next big thing' in IT services. After the sale of Customer Asset, an international call centre

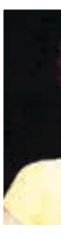

to ICICI in 2002, she recently sold Tutor Vista, an online tutoring service she co-ran with husband Krishnan, to UK-based Pearson for a cool ₹ 577 crore.

6 Class apart: Kareena Kapoor, 32, Actor.

She's second to no hero when it comes to her asking price or endorsements. She starred in the two biggest releases of 2011, Ra.One and Bodyguard, the latter being the biggest hit of the year and grossing over ₹ 100 crore in its first week alone.

Despite being paired opposite the Khan power trio, she's played her roles with trademark spunk, and refused to be overshadowed by the hero. She has reinvented herself as the most versatile female lead in the industry.

7 Building blocks: Pia Singh
Whole time Director, DLF, Ltd.

She is the whole time director of the largest real estate developer in India with a market capitalisation of ₹ 45,000 crore. Because the group has consolidated revenue of ₹ 10,144 crore and a consolidated profit of ₹ 1,640 crore in 2011.

Under her leadership, DLF became the largest mall developers in the nation. She also helped set up the entertainment division of the company.

8 Her own person: Kiran Rao
Filmmaker

Because: Despite the luxe baggage of marrying a Bollywood A-lister, Rao has carved out a niche as one of India's few mainstream female directors. In an industry where scripts are written for men, by men and directed by men, she's created a space for unconventional plot-lines with her directorial debut, Dhobi Ghat (2010).

Rao as a producer, has thrown her weight behind neo-urban narratives like Taare Zameen Par (2007), Jaane Tu... Yaa Jaane Na (2008) and Delhi Belly (2011). Her first solo production, Peepli Live (2010) was nominated in the World Cinema Competition at Sundance. in 2010.

9 Revolutionary road: Kiran Bedi, Social Activist

She has stepped beyond the traditional role assigned to women and set a benchmark of courage for others. Her stand against corruption put her at the forefront of the neo-nationalist anti-corruption movement in 2011. Her drive for social justice goes beyond her uniform. Because she was India's first female police officer.

10 The muse: Neha Kirpal
Founder-director, India Art Fair

As founder-director of the four-year-old India Art Fair(IAF), she's become the face of the contemporary art market in India. Her vision paved the way for the entry of blue-chip galleries like White Cube, Hauser and Wirth and Lisson from the United Kingdom into the country, turning India into a hot global destination for artists and gallerists.

From the time of its inception in 2008 the fair has attracted a total of 2,60,000 visitors, and the number of galleries exhibiting has grown from 34 to 91, with 50 per cent international participation.

11 Retail heaven: Ashni Biyani
Director, Future Group

She is the heir apparent to the Future group that is leading the retail revolution in the country, with a group capitalisation of ₹ 5,900 crore. Big Bazaar now has 150 stores across 90 cities. She is managing the planned ₹ 300 crore investments to open 30 more Big Bazaar centres by June 2012. She is in-charge of Future Ideas that helps come up with strategies to boost sales.

12 The powerhouse: Shikha Sharma
Managing Director and Chief Executive Officer, Axis Bank

She heads India's third largest private sector bank, and has recently been reappointed managing director for another three years. Since she took charge in 2009, Axis Bank's performance has been admirable with a reported profit of Rs 942 crore for the quarter ending June 2011, a 27 per cent increase year on year.

She revolutionised the private insurance sector as the head of ICICI Prudential, crossing 2,00,000 policies within two years and earning a premium income of ₹ 280 crore. She is commanding a pay package of over Rs 2 crore a year.

13 In equal measure: Naina Lal Kidwai
Executive Director and Country Head, HSBC

She heads India's division of HSBC with deposits of close to $12,000 million. Despite the sovereign credit crisis in the Eurozone, under her leadership, the pretax profit rose by 22 per cent to $813 million in 2011. She was the first woman to enter the world of investment banking.

She is the first woman vice president of the Federation of Indian Chambers of Commerce and Industry. She is a non-executive director on the board of Nestle and a member of the Audit Advisory Board of the Comptroller and Auditor General of India.

14 The write aesthetic: Chiki Sarkar
Publisher, Penguin India

She heads the largest English language trade publisher in the subcontinent with over 200 titles every year and an active backlist of over 750 titles. At just 29, she was the editor-in-chief of Random House India. The Oxford educated Sarkar has an exquisite taste in literature, great networking skills and a fine sense of marketing.

15 The strategist: Aruna Jayanthi
CEO, Capgemini India

In 2011, Jayanthi was promoted to the rank of CEO for Capgemini India, whose global revenues for last year were an impressive $12 billion. At Capgemini India she was part of the core team that initiated the company's off-shore capabilities.

She moved quickly from being global head of delivery for outsourcing to being named CEO. In her new role, she manages and mentors a growing workforce of over 36,000 employees.

16 The frontrunner: Chanda Kochhar
MD and CEO, ICICI Bank Limited

She heads India's largest private bank with total assets of ₹ 4,062.34 billion and recorded a profit of ₹ 51.51 billion in 2011. This year the bank expects to maintain its net interest margin (a measure of lending profitablity) at 2.6 per cent, at a time when most lenders have reported a drop because of a hike in RBI interest rates.

Besides being on the board of ICICI Bank, she is a member of the Prime Minister's Council on Trade & Industry, US-India CEO Forum and is a member of the Board of Governors of Indian Council for Research on International Economic Relations (ICRIER). She topped the Fortune India list of most powerful women in business in 2011.She has balanced her family life and hectic work schedule for three decades now. "You often feel as if you are walking a tightrope," she admits.

Her Secret to success: Staying calm in difficult times and focusing on the task at hand.

17 Penny wise: Chitra Ramakrishna
Joint MD, National Stock Exchange

She is one of the architects of the National Stock Exchange (NSE), which is amongst the world's biggest and most efficiently run securities exchange boards. Under her, the NSE has become a transparent market ecosystem that reaches out to more than 1,500 locations in the country.

Last year, the NSE made a profit of ₹ 860 crore under her leadership. In 2011, she was a top contender for the spot of the next chief of UTI Mutual Fund, the fourth largest fund house in the industry. She believes in hiding behind her success. Always media shy, action, she says, speaks louder than words.

18 Mass appeal: Sneha Rajani
Senior Executive VP and Business Head, Sony Entertainment Television

Ever since she became the business head of Sony Entertainment Television (SET) in 2011, she has repeated the success of the IPL on SET Max. Sony has moved from number four to its current number two position with gross rating points (GRP) of 227 as of February 2012, and beaten long term rival Colors. Under her leadership, SET earned ₹ 200 crore in advertising revenues, almost double the income of 2010, from Kaun Banega Crorepati alone.

19 In her blood: Deeksha Suri Murti
ED, Lalit Suri Hospitality Group

She's one-third of the power trio set to inherit The Lalit Suri Hospitality Group, India's largest privately owned hotel company which owns 16 luxury hotels and made a total profit of ₹ 405 crore in 2011.

Despite the recession, the group hasn't shied away from a phased investment of ₹ 2,500 crore in the development of Lalit properties across the country over the next two years.

20 Great expectations: Schauna Chauhan Saluja, CEO, Parle Agro

She heads the over ₹ 1,500 crore FMCG giant Parle Agro. Because she has expanded her company's global presence by exporting to 20 countries. Last year she added Appy Fizz and Frooti successfully to that global portfolio.

She understands innovation and also making Hippo snacks a success story. Because she refuses to stop until she lives her dream of making Parle the number one FMCG company in India.

"As a leader my biggest strength is that I love what I do. I am a team player and work closely with my team towards achieving our business goals."

21 Brand value: Lynn De Souza
Chairman and CEO, Lintas Media Group

She heads one of the largest media agencies in the country which had a 17 per cent growth in revenue in 2011. She is one of the few women to head several industry bodies, storming into the male dominated AAAI (Advertising Agencies Association of India) as its vice president for the year 2010-2011. She plays a significant role in the media dynamics of the nation.

22 Power play: Nirupama Rao
Ambassador of India, United States of America

She was the first woman full-term foreign secretary in India's history. She has been given the task of transforming Indo-US ties. She is the diplomatic channel through which all agreements from outsourcing to counter-terrorism flow. She has served in key diplomatic assignments like China and Sri Lanka. She was also the first woman spokesperson of the Ministry of External Affairs.

23 Top gear: Harshbeena Sahney Zaveri
MD and President, NRB Bearings

She heads NRB Bearings of net worth ₹ 219 crore, which had a turnover of ₹ 466 crore in 2011. She is the brain behind building in-house technology for auto parts. NRB designed the bearings for the dual clutch automatic transmission for the global launch of Ford Fiesta in 2011.

NRB provides cutting edge products for the next generation of two-wheelers, automobiles and trucks for big fish like Volvo and Mercedes, apart from almost every Indian manufacturer.

24 Money wise: Archana Hingorani
CEO and Executive Director, IL&FS Investment Managers Limited (IIML)

She heads one of the oldest and largest private equity fund firms in the country. When she took over in 2005, IIML's private equity was barely $300 million compared to $3.2 billion now. IIML manages funds of major Indian banks and institutions.

25 Art of living: Kiran Nadar 60, Chairperson, Kiran Nadar Museum of Art

She refused to be a trophy wife and became the face of philanthropy in the country instead. She heads the Kiran Nadar Museum of Art (KNMA), a free museum in Delhi which has created a site for confluence of art and not to earn quick commission. She has consistently worked towards educational reforms through Vidyagyan, an initiative of the Shiv Nadar Foundation to empower individuals, and the Shiv Nadar University (SNU). She was named the hero of philanthropy among several others by Forbes Asia in 2010.

"A Woman" is said to be the ultimate strength and support behind the success of an individual. There is a lot of differentiation and discrimination in the name of gender as males and females. Nevertheless this difference does exist in nature from time immemorial. Because "A Successful woman is one who can build a firm foundation with the bricks others have thrown at her."

"Always Be Proud To Be A Women and Prove Yourself"

✦✦✦

SUCCESS STORIES OF WOMEN IN DIFFERENT FIELDS

Ann Mary Thomas
NRO, Chennai

Success means different things to different people. For some people the word success means being famous, for others it means being great at some specific career. We all know of the success of Indra Nooyi of Pepsi, Arundathi Bhattacharya of SBI, Chanda Kochhar of ICICI and Dr. Kiran Mazumdar-Shaw of Biocon Ltd. But I want to share with you, stories of three women who deserve equal attention and whose stories motivated me, hopefully you too.

LAKSHMIKUTTY AMMA

Tribal healer Lakshmikutty Amma, also known as Vanamuthassi or the grand old lady of forests, has been treating patients in her hut deep in the forests of Vithura in Thiruvananthapuram district. The 75-year-old was the first tribal girl from her area to attend school in the 1950s but dropped out after Class 8. She was attracted to traditional medicine and her parents trained her well. Knowledge of traditional medicine was passed from her mother who was a mid-wife. She believes that nature offers all remedies. She makes more than 500 herbal medicines and has treated thousands of patients in the last fifty years

Her home till date does not have a road access till date though it was approved in 1952. Her husband and two sons passed away and the third one is working in the Railways. One of her son had lost his life as he could not be taken to hospital on time as there was no road. Her biggest worry till date is that people are not able to bring patients in time, providing medicine at the earliest is important in poison treatment.

Lakshmikutty Amma also writes poems, dramas and is a teacher in folklore academy. She came to the limelight when the state government conferred the Nattu Vaidya Ratnam award on her in 1995.

She was this year awarded the Country's fourth highest civilian honours Padma Shri Award for her breakthrough in practising traditional medicine and for saving thousands of lives.

SHRADHA SHARMA

Born and brought up in Patna, Bihar, Shradha Sharma is the founder of YourStory.com, India's top media platform for entrepreneurs for promoting and reporting about startups and everything in around the entrepreneurial ecosystem. She has previously worked with the likes of The Times of India and CNBC TV18. During her time gathering work experience, she noticed that the young entrepreneurs had no platform to voice their side of things. Then one night on the job she started YourStory as a blog applying all the business practices she ever learnt from working with newspapers and TV channels. Thus YourStory was born to be the referential and go-to platform for all entrepreneurs and investors in India to read about themselves or and their colleagues.

She featured in a techgigstory as one of "5 women Indian entrepreneurs in India you should know about. The Hindu wrote about her as one who has shattered the glass ceiling. Her company has been described as "India's biggest and definitive platform for start-ups and entrepreneurs-related stories, news, resources and research reports. YourStory has received investments from Ratan Tata, Vani Kola, Karthee Madasamy and T V Mohandas Pai.

She was recogonised by many awards including NASSCOM Ecosystem Evangelist Award, Villgro Journalist of the Year Award in 2010, L'Oreal Paris Femina Award', PAT Memorial Outstanding Alumnus Award. and LinkedIn's most vieved CEO's under Internet category.

THE WOMEN BEHIND LIJJAT PAPAD

Lijjat is a highly popular pappad brand in India. While many may remember the buck toothed bunny that appeared in their TV commercials, many may not be aware of the fact that it's the power of rural women and their self-employment initiative, 'Shri Mahila Griha Udyog' which made the brand possible. Lijjat was the brain child of seven Gujarati women.

They wanted to start a venture to create a sustainable livelihood using the only skill they had i.e. cooking. Today, Lijjat is more than just a household name for 'papad'. Started with a modest loan of Rs 80, the cooperative now has annual sales exceeding Rs 301 crore`. What's more stunning than its stupendous success is its striking simplicity`.

And perhaps that is the most interesting lesson managers can pick up from Shri Mahila Griha Udyog Lijjat Papad. Sticking with its core values for the past forty years, Lijjat has ensured that every process runs smoothly, members earn a comfortable profit, agents get their due share, consumers get the assurance of quality at a good price, and society benefits from its donations to various causes.

This shows how even a group of simple women can have their way into success while benefitting each one of them individually and the society as a whole both financially and in an inspiring way. This is what is would say is true success.

✦✦✦

हाँ मैं बेटी वरदान हूँ

मत रोको मुझे, पढ़ने दो,
मत बांधो मुझे रस्मों में, आगे बढ़ने दो.
शान है बेटी, आन है बेटी,
माँ बाप की जान है बेटी.
रोके से न रुकने वाली,
झुकाने से न झुकने वाली.
माता पिता की सेवा जानूं,
अपने फर्ज को मैं पहचानू.
क्यों दुनिया ने यह रस्म बनाई,
कहते, बड़ा कर, जा बेटी तू है पराई.
मैं अपने घर की शान हूँ,
हाँ मैं बेटी, वरदान हूँ.

प्रियंका भास्कर
मक्सी शाखा

माँ तुम....

तुम ही शक्ति हो,
तुम्ही हो साहस मेरा.
तुम ही मेरी रौनक हो,
अभिमान हो तुम मेरा.
पीछे खड़ी हो मेरे तो,
संबल हो तुम मेरा.
सदा साथ निभाये जो,
ऐसा प्यारा दोस्त मेरा.
मेरे मुश्किल समय में हो तुम,
तकलीफ़ों में तुम्हारी रहूँगी मैं.
तुम्हारे लिए हर मुश्किल,
मुस्कुराकर सहूँगी मैं.
तुम बिन मैं और मुझ बिन तुम,
जैसे पानी बिन कोई प्यासा.

श्वेता जैन
क्षे का इंदौर

बिटिया रानी

बेटी,
ढ़ेर सारी खुशियां लेकर आई है.
मेरे घर की लक्ष्मी बनके,
पापा की लाडली परी है.
मम्मी की प्यारी दुलारी!

बेटी,
उमर के साथ साथ लेती है,
कंधे पे घर की जिम्मेदारी,
कोई भी गम मिटा देती है,
खुशियों की डोरी से!

बेटी,
शादी करके रोशनी देती है,
ससुराल के आँगन में,
पति के हर कदम में साथ होती है,
शक्ति और विश्वास बनके!

बेटी,
माँ बनती है!!
सच्चे प्यार की पहचान है माँ.
ममता का प्रतिबिंब है माँ.
भगवान का प्रतिरूप है माँ.

बेटी,
दूसरों के लिए जीती है.
उसी में अपनी खुशी ढूंढती है.
इसके बिना सब अधूरा है.
बेटी ही जिंदगी को करती पूरा है.

आर. संध्या
बेगमपेट शाखा
क्षे.का. हैदराबाद

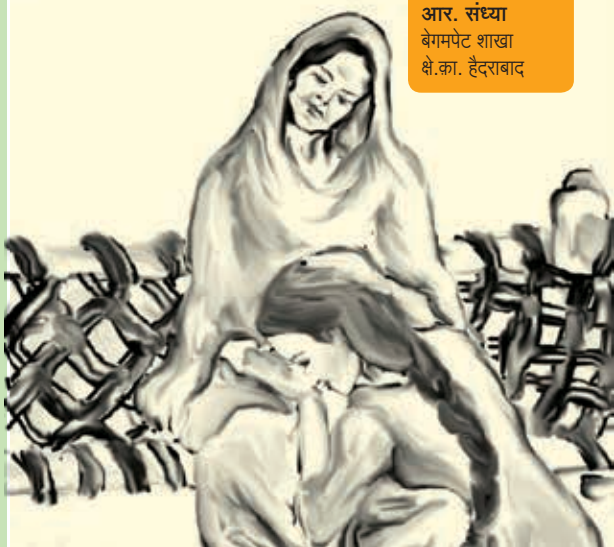

नया रास्ता

ज़िंदगी को जीने का, कोई तज़ुर्बा नहीं है,
पर ये बात तो नहीं कि, हममें हौसला नहीं है.
देखा है जो सपना हमने, उसको तो पूरा करना है.
स्वयं बनाए पथ पर, हमको आगे बढ़ना है,
पथ हमारा ऐसा होगा,
न समाज की अड़चन होगी, न होगा किसी से वास्ता,
मंजिल होगी ऐसी सुंदर, पर टेढ़ा होगा रास्ता,
देखा है जो सपना हमने, उसको तो पूरा करना है.
चलना है कांटों पर, चाहे खून टपक जाए,
चलना है धूप में, चाहे बदन झुलस जाए.
आँसुओं से सींच कर, जीवन बगिया महकानी है,
अपने पदचिन्हों को छोड़, लिखनी नयी कहानी है.
देखा है जो सपना हमने, उसको तो पूरा करना है।
अंधेरे में के दीपक बनकर, अपनी ही ज्वाला से जलेंगे हम,
सूरज चाहे नहीं बनें पर, खुद को रोशन करेंगे हम.
दूर कुरीतियों को करके, सम्पन्न समाज बनाएंगे,
मानव जाति के हम सेवक, जग में नाम कमाएंगे.
देखा है जो सपना हमने, उसको तो पूरा करना है।।

रश्मि चौरे
क्षे.का., इंदौर

नारी युग की शान

आज विश्व की पहचान है नारी,
देश विदेश की शान है नारी.

पग–पग पर आसमाँ को छूती,
विश्व की मान है नारी.

नारी ने हर युग में, एक नई छाप है छोड़ी,
विज्ञान हो या अंतरिक्ष, सभी में पहचान है छोड़ी.

माँ की ममता को समेटे, पुरूष की ढाल है नारी.

आत्मसंबल बन, हर युग की पहचान है नारी,

नारी ने आज दी है हर क्षेत्र को नई दिशा,
नारी ने आज बनायी है हर क्षेत्र में एक नई छाप.

नारी ने अपने कौशल से
राजनीति का मुख मोड़ा है.
देश की रक्षा में स्वयं को झोंका है.

लक्ष्मीबाई, इंदिरा गाँधी, भंडारनायके,
मैडम क्यूरी, सरोजिनी नायडू, मदर टेरेसा,
कल्पना चावला अनगिनत नाम हैं,
किस किस की गिनती करूँ. किस किस के नाम गिनाऊँ,

नारी कल भी महान थी, आज भी महान है,
कल भी महान रहेगी,
युग–युग तक अपनी गाथा अमर करती रहेगी,

नि:स्वार्थ सेवा, त्याग, प्रेम की प्रतिमूर्ति
राधा–सीता बन युग–युग को सदैव आलोकित करेगी.

डॉ मीना कुमारी
क्षे.का., दिल्ली (उ)

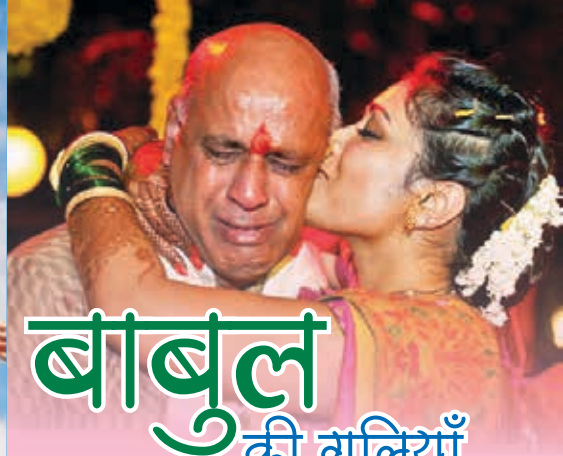

बाबुल की गलियाँ

इस दर से विदा मैं कैसे करूँ, हृदय जीवन प्राण हो तुम.
जीवन भर की पूंजी हो, ईश्वर का दिया उपहार हो तुम.
आँखियों को न देखो बाबुल की, इनमें आंसुओं की है धार
जीवन भर दिया जो तुमको, ममता भरा ये दुलार.
सखियों की संगी साथी तुम, भाई बहन की प्यारी हो तुम
हर पल महकाया जीवन को, फूलों की महकती क्यारी हो
माता पिता के उपवन में खिला, फूलों का पिरोया हार हो तुम
जीवन भर की पूंजी हो, ईश्वर का दिया उपहार हो तुम.
जाना है किसी और के घर, अब वो ही तेरा संसार है
अपनों को छोडकर जा बेटी, अब वो ही तेरा परिवार है
चंद दिनों का कर्ज था जो, मातापिता को चुकाना है
बाबुल की गलियाँ छोडकर, उस घर को अपनाना है
मेरे घर की हर्षित रौनक, उस घर का अब श्रृंगार हो तुम
जीवन भर की पूंजी हो, ईश्वर का दिया उपहार हो तुम.
वाणी हो तेरी मधुर–मधु, होठों पर सदा मुस्कान रहे.
चन्द्र सा उज्ज्वल हो जीवन, दुख से सदा अंजान रहे
खुशियों से सजा हो घर आँगन, बगिया में सदा बहार रहे
आँखों से न छलकें आँसू कभी, अपनों से सदा प्यार रहे
इस दर से विदा में कैसे करूँ, हृदय जीवन प्राण हो तुम,
जीवन भर की पूंजी हो, ईश्वर का दिया उपहार हो तुम.

दीपिका मालवीय
यूएलपी, भोपाल

महिला बॉस

रेखा नायक
पीबीओडी,के.का.

मानव मन के पारखी कहे जाने वाले हिंदी के प्रसिद्ध रचनाकार प्रेमचंद अपने विश्व विख्यात उपन्यास गोदान में कहते हैं – 'यदि पुरूष में महिला के गुण आ जाते हैं तो वह गुणवान हो जाता है और यदि महिला में पुरूष के गुण आ जाते हैं तो वह अवगुणी हो जाती है? कुछ तीखा सा लगनेवाला यह कथन अपने आप में 'स्त्री' गुणों को बताने के लिए काफी है और यदि यही स्त्री जब शीर्ष पर हो तो फिर पूछना ही क्या? 'बॉस' होने का एक ही अर्थ मैं समझ पाती हूं– 'नेतृत्व'. अपनी टीम को लीड करना. अपने अधीनस्थ या उससे अधिक उचित है यह कहना कि अपने साथियों को, सहयोगियों को विकास और विजय की दौड़, दौड़ने और जीतने के लिए प्रेरित करना. थके, हारे का संबल बनना, हताश–निराश को प्रोत्साहित करना, गिरे हुए को उठाना, बिगड़े हुए को समझाना और जरूरत पड़े तो कुछ भारी आवाज में हल्की सी चपत लगाना. वैसे तो महिला बॉस और पुरूष बॉस में फर्क करना कुछ कठीन बात है क्योंकि भले ही वह महिला हो, उसमें भी आपको वे सभी गुण मिलेंगे, जो एक पुरूष बॉस में होते हैं.

प्राचीन भारत में महिलाएं काफी उन्नत व सुदृढ़ थीं. समाज में पुत्र का महत्व था पर पुत्रियों को भी समान अधिकार और सम्मान मिलता था. हजारों भारतीय महिलाओं ने अपने कर्म, व्यवहार और बलिदान से विश्व में आदर्श प्रस्तुत किया है. भारतीय इतिहास में इन महिलाओं के योगदान को कभी भूला नहीं जा सकता. आज हम देखते हैं कि महिलाएं सिर्फ अपने घर तक ही सीमित नहीं है. उन्होंने अपने घरों के वित्तीय पहलुओं में योगदान करना शुरू कर दिया है. वे आज सिर्फ अपना घर ही नहीं बल्कि अपने कार्यालय, अपने राष्ट्र को भी बेहतर ढंग से संभाल रही हैं.

'आखिर पहुँच ही गयी मेरी सवारी,
जहां पहुँच कर तट पर मैं खड़ी हूँ,
लहरों से लड़ी हूँ,उस किनारे पर बसी मेरी हंसी !
रास्ता सुंदर था, मंजिल और भी खूबसूरत है,
कभी घर से चली थी, फिर सपनों के लिए लड़ी,
आखिर पहुँच ही गयी हूँ !'

ये पंक्तियाँ आज की नारी के संघर्ष, उसकी लड़ाई और उसके सपनों के बारे में बताती हैं. आज के आधुनिक युग में महिला को हम केवल सौन्दर्य के क्षेत्र में ही नहीं बल्कि अन्य बहुत सारे क्षेत्रों में प्रभावशाली रूप से काम करते हुए देखते हैं. शिक्षा का क्षेत्र हो या सैनिक सेवाओं का, सरकारी उद्योगों में काम करने की बात हो या निजी औद्योगिक प्रतिष्ठानों की देखभाल का प्रश्न हो, सभी जगह नारियां कार्यरत हैं और बहुत ही बेहतरीन सेवाएँ दे रही हैं. भारत का संविधान सभी महिलाओं को समान अधिकार (अनुच्छेद 14), राज्य द्वारा कोई भेदभाव नहीं करने (अनुच्छेद 15 (1)), अवसर की समानता (अनुच्छेद 16), समान कार्य के लिए समान वेतन (अनुच्छेद 39 (घ)) की गारंटी देता है. इसके अलावा यह महिलाओं और बच्चों के पक्ष में राज्य द्वारा विशेष प्रावधान बनाए जाने की भी अनुमति देता है (अनुच्छेद 15 (3)), महिलाओं की गरिमा के लिए अपमानजनक प्रथाओं का परित्याग करने (अनुच्छेद 51 (ए)(ई)) और साथ ही काम की उचित एवं मानवीय परिस्थितियाँ सुरक्षित करने और प्रसूति सहायता के लिए राज्य द्वारा प्रावधानों को तैयार करने की अनुमति देता है (अनुच्छेद 42).

अधिकांश कर्मचारी चाहे वह पुरुष हों या महिला, वे एक पुरुष को ही अपने प्रधान के रूप में देखना पसंद करते हैं. हालांकि जब कोई पुरुष किसी महिला को बॉस की स्थिति में देखता है तो उसका अहंकार खतरे में आ जाता है. एक पुरुष द्वारा प्रबंधन के दृष्टिकोण में 'कमांड और कंट्रोल' अधिक होता है, वहीं एक महिला के मामले में 'सलाह और प्रशिक्षण' शामिल होता है और यही दृष्टिकोण कर्मचारियों के साथ संबंध बनाने एवं संगठन के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए सहायक होता है.

हाँ, इतना जरूर हो सकता है कि महिला बॉस को कभी आप खाली नहीं पाएंगे, वह हमेशा आपको बहुत व्यस्त मिलेंगी. इसका भी एक प्रमुख कारण है– पुरुष बॉस को काम की अधिकता होने पर जहां यह लग सकता है कि कोई बात नहीं मैं ऑफिस में और ज्यादा देर तक काम कर लूंगा या फिर ये कुछ काम मैं घर ले जाकर करूंगा. वहीं इस स्थिति में भी महिला बॉस को अपने टाइम मैनेजमेंट कौशल का भरपूर उपयोग करना है क्योंकि दूसरा विकल्प उसके मन में होता ही नहीं. उसे पता है, उसे सभी काम बहुत समय से निपटाना है क्योंकि घर जाने के बाद उसे इस भूमिका से इतर, दूसरी भूमिकाएं निभानी हैं. शायद यही कारण है कि आप शायद महिला बॉस को कभी खाली न पाएं.

आम तौर पर माना जाता है कि महिलाओं में गपशप करने की प्रवृत्ती ज्यादा पाई जाती है, लेकिन इसके ठीक विपरीत महिला बॉस आपको बहुत नपातुला बोलने वाली और 'टू द पॉईंट' कहने वाली मिलेंगी. इसीलिए आपको उनमें बिखराव नहीं मिलेगा और वह अपने काम में बहुत स्पेसिफिक होती हैं.

आज के इस आधुनिक और प्रतिस्पर्धात्मक युग में महिलाएं अपने अधिकार और शिक्षा का उपयोग कर बड़ी तेजी से आगे बढ़ रही हैं. वे कार्यालयों में काम करती हैं, वे कारोबार, व्यापार करती हैं, संस्थाएं, संगठन चलाती हैं, वे खुद अपनी मालिक बनी हुई हैं. ऐसे में वे बॉस बनती हैं, लोगों से काम करवाती हैं.

एक महिला बॉस के नेतृत्व गुणों को अगर मापा जाए तो वे जिस समय अपने व्यवस्थापन को आगे ले जाने के लिए कठोर और सख्त निर्णय लेती हैं, उसी समय वह अपने कर्मचारियों के प्रति नरम व्यवहार से उनकी सभी कठिनाईयों को दूर करने और अपने कार्य के प्रति समर्पित रहने का दिशानिर्देश भी देती हैं. महिला बॉस की संकल्पना इसी के साथ आगे आयी है. दूरदर्शिता, साहस, ईमानदारी, विनम्रता, रणनितीक योजना और सहयोग जैसे गुणों के मिश्रण से बनती है, एक 'नारी बॉस' अगर बात हो पुरुष नेतृत्व के साथ तुलना की तो एक ही बात 'नर से भारी नारी, एक नहीं दो दो मात्राएँ. '

अगर हम दुनिया की कुछ बेहतरीन शख़्सियतों की बात करें तो उनमें, डेन्मार्क की प्रधान मंत्री, हेले थोर्निंग; थायलैंड की प्रधान मंत्री, यिंग्लुक शिनावटरा; ब्रिटेन की प्रधान मंत्री, थेरेसा मे; बांग्लादेश की प्रधान मंत्री, शेख हसीना वजेध; भारत के सबसे बड़े बैंक भारतीय स्टेट बैंक की पूर्व चेयरमैन अरुंधति भट्टाचार्य, न्यू इन्ट्रप्राइसिस एस्सोसियेटस की एम.डी, बाला देशपांडे; आईसीआईसीआई बैंक की एम.डी और सी.ई.ओ चंदा कोचर; नेशनल स्टॉक एक्स्चेंज की एम.डी और सी.ई.ओ चित्रा रामकृष्णा; भारत की रक्षामंत्री निर्मला सिथारमन; भारतीय क्रिकेट टीम की कैप्टन मिथाली राज; भारतीय हॉकी टीम की कैप्टन सुशीला चन्नु जैसे नाम सामने आते हैं. इन सफल महिलायों ने अपने संबन्धित क्षेत्रों में अगर कामयाबी हासिल की, तो वह उनके दृढ़विश्वास, नेतृत्व भावना और कठोर परिश्रम का परिणाम है.

भारत की 1.3 अरब आबादी में से केवल 27% महिलाएं कार्यरत हैं लेकिन जब 50% महिलाएं काम करने लगेंगी तो भारत का चित्र कुछ अलग ही दिखेगा. हमें महिलाओं को जीवन के हर मुकाम पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देनी चाहिए क्यूंकि महिलाएं समाज की वास्तविक वास्तुकार होती हैं. वे खुद शिक्षित होने की वजह से घर परिवार के साथ साथ समाज को भी शिक्षित करती हैं और शिक्षित समाज ही विकास की राह पर आसानी से अग्रसर होता है.

महिलाएं संवेदनशील होने के कारण किसी पुरुष बॉस से एक कदम आगे या पीछे नहीं बल्कि उसके बराबर हैं या कह सकते हैं कि थोड़ा आगे भी हो सकती हैं. बावजूद इसके हमें हमारी पुरुष प्रधान मानसिकता, इस बात को आसानी से स्वीकारने की अनुमति नहीं देती. लेकिन वर्तमान समय में जिस तरह से लड़कियां, महिलाएं उच्च विद्याविभूषित होने के साथ–साथ अपनी निर्णय क्षमता, बेबाकी तथा साहस के लिए जानी जाती हैं, तब यह संकल्पना 'महिला बॉस' उतनी सही नहीं लगती, क्योंकि 'बॉस' बॉस होता है, वहाँ स्त्री–पुरुष भेद करना ही बेमानी है.

लेकिन यदि स्त्री की बात हम करते हैं तो, स्त्री का मानसिक लचीलापन, उसकी समझ, स्थितियों के बारे में गहराई से सोचने की शक्ति, संवेदनशीलता तथा विपरीत स्थितियों में भी अपनी मानसिकता को ठोस व बरकरार रखने का माद्दा उसे सही मायने में 'बॉस' होने की सभी सार्थकता प्रदान करता है.

एक ऊर्जा से भरी सलीकेदार बॉस, जो बड़े स्नेह से आपकी स्थितियों, काम तथा मानसिकता को समझते हुए, आपको समझाते हुए तथा कभी कभी कठोरता से भी आप से काम करवाती है, तो उसमें नाराज या नासाज होने की क्या जरूरत है? आखिर वह आपकी 'बॉस' है.

मेरा सभी महिलाओं से एक ही अनुरोध रहेगा–

'हर चीज से बढ़कर,
अपने जीवन की नायिका बनें'

✦✦✦

Matrilineal Culture

Rajashri Baglari
RO, Siliguri

As we celebrate women in the issue of Union Dhara, it is only natural that there should be an article on the matrilineal culture followed by two tribes in North Eastern part of India. Before we go into detail, I would like to clarify the difference between a matriarchal society and a matrilineal society.

A matriarchal society is a system in which women has control over all the activities, be it social, cultural or political; women hold all the power and call all the shots very much like the legend of the amazons in Greek history, exemplified by Gal Godat in the Warner brother Movie 'The Wonder Women' 2017.

A matrilineal society on the other hand is one where the affairs of the tribe and domestic affairs are controlled by women, inheritance of property passed through females but women have no say or very little voice in the political affairs. For example in the state of Meghalaya, where this is practiced, women have almost no representation in politics with only 4 women legislature out of total 60.

In India which is commonly acknowledged to be a highly patriarchal society, there are actually 3 societies which follow/used to follow the matrilineal system: 2 in the North East, and 1 in Kerala, out of three, the khau tribe in Meghalaya is largest surviving matrilineal society in the world today, followed by the Garo tribe, also from Meghalaya.

The Khaw

The Khaw is the name given to a number of sub-tribes having in the hilly areas of Meghalaya, who follow the matrilineal system. The birth of a daughter in the family is celebrated with joy while the birth of a boy is a quiet affair. The family property passes on to the youngest daughter in the family, who stays with the parents and looks after them. Remaining daughters get a portion of the property. Since men do not inherit any property they leave their own family after marriage and come and live with their wives at their in-laws house. Marriage are permitted only between men and women of different clans/sub-tribes, and not between families of the same clan, which has a scientific basis, as it is proven that children from inter family marriages usually inherit genetic disorders.

The Garos are the second tribe from the North East who follow the matrilineal culture. The family is headed by the mother and daughter carry the clan name. The sons take up the clan name of their wives after marriage. However there is a slight difference from the kahu culture as Garo men are responsible for the sustenance of their families. Although only 2 socieites from the total 220 different ethnic groups in the North East follow the matrilineal system, there is the misconception that the whole of North East is matrilineal or matriarchal this may be due to the fact that women in the North are held in high esteem and a lot more independent socially responsible. May be the fact that they have not been subjected to restrictions on movement attire purdah system widow marriage etc have led to this belief. As a result, there are no stories of bride burning, female infanticide or foeticided, and contrary to the practice of dowry in the rest of India, men have to pay a "bride price". Which was earlier paid in the form of heads of cattle as agriculture was and still is one of the main sources of livelihood. Growing up in an environment which placed no restrictions on what you can or cannot do is liberating- I remember going bird hunting with catapults, wrestling with the boys, bungee jumping 15 feet of a broken bridge with no hope to hold me back. I was only 10 years old then having competition on who could climb to top of the tamarind tree the fastest etc. It is only looking back now that I realize how empowering all those experiences were. I think this is one reason why the north east has also birthed a significant number of women competing in sports that are generally coincided male territory- boxing, archery, shooting, cycling, football, mountaining, hockey, judo, weightlifting etc.

The fact that a matrilineal society leads to a more educated and cultured society is also borne out for the example of Kerela, where matrilineal inheritance was followed by the Nair castes including the royal families and some tribal groups. Although the system of inheritance was abolished by an act of the Kerela State legislature in 1975 we can see the positive effects of the system woman in Kerela enjoys a higher political stature when compared to woman of other states in India.

Women from the North East as a whole also take up a large portion of social responsibility through taking care of children and the elderly bear an equal, if not greater burden

in the activities connected to livelihood. For example, if agriculture is the main activity, the men do the ploughing while the women do the planting of the harvesting, if it is business woman help in the sales and keeping the accounts. Women also supplement the family income by wearing, fishing, raising poultry, pigs etc. Women also act as the social conscience by raising their ---- against social evils or atrocities eg, the Meira Paibis (or Women Torchebeasess) of Manipur, who got their name because they march through the streets at night, carrying flaming torches, have been fighting against drug abuse, crimes against women, the AFSPA (Armed forces special power act) etc.

The author Diane Mariechild said "A woman is the full circle within her is the power to create, nurture and transform". The women of the North East have been doing just that, and in todays world we see this has rubbed off on the new generation of women, who are successfully juggling their responsibilities of carrer and home taking on the responsibility of providing for the families while at the same time nurturing their children their homes. There is a beautiful description of a capable woman in the Bible, which says in proverb chapter 31, 3 excellent women is more precious than jewels and her worth is far above rubies or pearls. She confronts encourages and does good and not evil. She looks for wool and flax and works with willing hands. She is like the merchant ships abounding in treature. She brings her households food from far away. She rises while it is still night and gives food to her household. She assings tasks to her maides. She confides a field before she buys it or accepts it, expanding her business prudently….Her lamp does not go out…. She smiles at the future knowing that she and her family are prepared….She reaches out her filled hands to the poor strength and dignity are her clothing and her position is strong….secure"

This is a tall order for a woman but the women of the North East doing all this admirably. We as individuals and women of today's generation ------- from their example and commit to living our lives so that we unleash our powers to truly create, nurture and transform our world into a better place.

✦✦✦

दिव्यदर्शिनी काबत
पैरेयूर शाखा

मैं नारी हूँ...

असंख्य अनमोल गुणों का भंडार है नारी... जहां उसमें कोमल और करुण भावों का मखमली एहसास पनपता है वहीं अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने की शक्ति, साहस, निर्णय क्षमता और क्रोध भी है. वैचारिक मतभेदों पर विजय पाने के लिए उसके पास तार्किक क्षमता भी है और स्थिति–परिस्थिति के अनुरूप बरती जाने वाली समझ भी. वह घर, परिवार, रिश्ते–नातों और समाज के साथ देश चलाने का हौंसला भी रखती है और विनम्र और श्रद्धा भाव के साथ झुकने का गुण भी.

अस्तित्व से लेकर व्यक्तित्व और पहचान के कई रंग हैं उसके जीवन के. कितनी ही सुगंध है उसके भावों की. तो फिर कैसे उसे सिर्फ एक गुलाबी रंग में समेटा जा सकता है? क्या यह गुलाबी रंग स्त्री का प्रतिनिधित्व करता है? नहीं वह स्त्री का प्रतिनिधित्व नहीं करता बल्कि उस सौम्य भाव, मन में छुपे प्रेम, सौभाग्य और कोमल भावना का प्रतिनिधित्व करता है, जो प्रकृति ने स्त्री को सौगात के रूप में दिया है. स्त्री तो कई रंगों से सजी मूरत है जिसके लिए किसी एक रंग को चुना नहीं जा सकता. हर रंग की उसमें चमक है और हर फूल की उसमें महक है. उसे एक रंग में बांधना सही नहीं है. गुलाबी रंग स्त्रीप्रतीक नहीं है.

देखा जाए तो नारी का अस्तित्व एकतरफा नहीं है. वह जरूरत पड़ने पर एक पुरुष का किरदार भी भलीभांति निभाती है. घर की देहरी से संसार तक वह कंधे से कंधा मिलाकर चलना भी जानती है. वो सब कुछ कर सकती है जो उसे बराबरी पर लाकर खड़ा करता है. फिर उसके लिए कोई रंग, फूल, कपड़े, काम या फिर जिम्मेदारी विशेष कैसे हो सकती है. वह अपनी पहचान बताने के लिए किसी रंग विशेष का लबादा क्यों ओढ़े. जब उसकी पहचान से ही संसार परिचित है. अगर उसे ऐसा करना ही पड़े तो यह महिला दिवस कैसे हुआ. जब उसे स्वच्छंदता की जगह किसी रंग, भाव या वस्तु विशेष से बंधना पड़े. जो बंधनों से मुक्त करे वही तो उसका अपना दिवस होगा, जरा सोचिए.....

नारी....मेरा यह नाम अपने आप में अपार शक्ति समेटे हुए है. मैं शक्ति का एक जीता जागता रूप हूं. सुबह की पहली किरण से पूर्व जागने की शक्ति, समय को पीछे छोड़ अनवरत भागने की शक्ति. मेरी अनेक भुजाएं हैं. किसी भुजा में धर्म है, किसी में कर्म है और अपनी संतान के माथे पर प्यार भरी थपथपाहट के साथ किसी भुजा में अपार ममत्व भी. प्राचीन काल से आज तक मैंने इस समाज में होते हुए बदलाव में खुद को समायोजित किया है. यह है मेरी नीर की तरह समायोजन की शक्ति. खुद को घर के कर्तव्यों से बांधती, मैं गांधारी हूं, कभी अपनी निर्णय क्षमता को प्रदर्शित कर अन्याय का विरोध करती सीता भी हूं. कभी मैं प्रेम की धुन पर नृत्य करती राधा हूं, तो कभी अपनी मातृभूमि पर न्यौछावर रानी..... झांसी की.

मेरे कई रूप हैं. सभी रूपों में मैं एक शक्ति हूं, भक्ति हूं, श्रद्धा हूं, विश्वास हूं, आस हूं, मर्यादा हूं, लज्जा हूं, सौंदर्य हूं, क्षमा हूं, विद्या हूं, वाणी हूं. हर रूप में मैं सन्माननीय हूं और जहां नारी का सम्मान होता है वहीं देवता का भी वास होता है. आज बस मुझे मेरा वही सम्मान चाहिए जिसकी मैं अधिकारी हूं. महिलाओं के प्रति नजरों में हवस, तिरस्कार और लघुता का भाव नहीं चाहिए. मुझे वह मिले, जिसकी मैं सदियों से अधिकारी हूं. न कभी हारी थी, न कभी हारी हूं, मैं नारी हूं, सब पर भारी हूँ...

✦✦✦

WOMEN EMPOWERMENT IN INDIA

Mythological, Historical, Social and Financial approach

Meena Khanna
Financial Inclusion,
CO. Mumbai.

Women empowerment a much raised and discussed topic around the globe? But why is it necessary? Why are we trying to fill this gender gap? Why are women not given that equality level and trust in the society! It is 21st century and women still have to run for their rights? If we ourselves could try to get the balance then there would be no need for this whole campaign for women empowerment. A house maker can anytime be a corporate leader! And we have series of example in our country itself! Then why do we yet need this women empowerment concept? Well is this gender gap filled in all states? Are women in the country getting their deserved rights? And are they educated till the age boys are? Are they forced to get married at a young age? Well staying in urban areas we have forgotten this topic! But the reality check says that this topic needs much more attention than it is getting. Women empowerment is not only to be known topic but it is that one should bring in practice. If you aim to empower women you will be an indirect force to empower a family. Women form a chain of knowledge that she has. It is always passed on to someone! Yes, you read it right a house maker is a dynamic source of knowledge! And she is the one who can bring society to betterment. Don't you remember role models laid down by mythological women like Kaushlya, Seeta, Savitri, Draupadi as well as by historical idles like Indira Gandhi, Mother Teresa, Lakshmibai (Jhansi) Savitribai Phule and Sarojini Naidu? It's also proven by present profiles of the rising stars that have made the Woman Ahead list 2016 which includes Shinjini Kumar (CEO, Paytm Payments Bank), Smita Bhagat (Head, Branch Banking and E-commerce, HDFC Bank), Anu Aggarwal (Senior Executive VP, Kotak Mahindra Bank), Zahabiya Khorakiwala (M D, Wockhardt Hospitals), Samina Vaziralli (V. Chairman, Cipla), Karuna Nundy, (Advocate, Supreme Court of India), Pavitra Singh (Associate Director, PepsiCo India), Radhika Piramal (MD, VIP Industries), Gunjan Soni (Chief Marketing Officer, Myntra) and so on.

There is no denying the fact that women in India have made a considerable progress in almost seven decades of Independence, but they still have to struggle against many handicaps and social evils in the male-dominated society. Many forces still prevail in the modern Indian society that resists the forward march of its women folk. It is ironical that a country, which has recently acclaimed the status of the first Asian country to accomplish its Mars mission in the maiden attempt, is positioned at the 29th rank among 146 countries across the globe on the basis of Gender Inequality Index. There has been amelioration in the position of women, but their true empowerment is still awaited.

Swami Vivekananda, one of the greatest sons of India, quoted that, "There is no chance for the welfare of the world unless the condition of women is improved, It is not possible for a bird to fly on only one wing. " Therefore, the inclusion of "Women Empowerment' as one of the prime goals in the eight Millennium Development Goals underscores the relevance of this fact. Thus, in order to achieve the status of a developed country, India needs to transform its colossal women force into an effective human resource and this is possible only through the empowerment of women.

Empowering women to participate fully in economic life across all sectors is essential to building stronger economies, achieve internationally agreed goals for development and sustainability, and improve the quality of life for women, men, families, and communities.

What is women empowerment?

According to websters dictionary the word empowerment indicates the situation of authority or to be authorized or to be powerful. In other words, empowers means to authorize. So empowerment is a process which gives women power or authority to challenge some situation.

Empowerment is not just a word or to provide facilities it is beyond that. Many of us use this word casually or really do not know what the word empowerment stands for? Well Empowerment is a multi-dimensional process which should enable individuals or a group of individuals to realize their full identity and powers in all spheres of life.

Women empowerment means emancipation of women from the vicious grips of social, economical, political, caste and gender-based discrimination. It means granting women the freedom to make life choices. Women empowerment does not mean 'deifying women' rather it means replacing patriarchy with parity. In this regard, there are various facets of women empowerment, such as given hereunder:—

Human Rights or Individual Rights: A woman is a being with senses, imagination and thoughts; she should be able to express them freely. Individual empowerment means to have the self-confidence to articulate and assert the power to negotiate and decide.

Social Women Empowerment: A critical aspect of social empowerment of women is the promotion of gender equality. Gender equality implies a society in which women and men enjoy the same opportunities, outcomes, rights and obligations in all spheres of life.

Educational Women Empowerment: It means empowering women with the knowledge, skills, and self-confidence necessary to participate fully in the development process. It means making women aware of their rights and developing a confidence to claim them.

Economic and occupational empowerment:

It implies a better quality of material life through sustainable livelihoods owned and managed by women. It means reducing their financial dependence on their male counterparts by making them a significant part of the human resource.

Legal Women Empowerment It suggests the provision of an effective legal structure which is supportive of women empowerment. It means addressing the gaps between what the law prescribes and what actually occurs.

Political Women Empowerment: It means the existence of a political system favoring the participation in and control by the women of the political decision-making process and in governance.

The position of Women in India: The position enjoyed by women in the Rig-Vedic period deteriorated in the later Vedic civilization. Women were denied the right to education and widow remarriage. They were denied the right to inheritance and ownership of property. Many social evils like child marriage and dowry system surfaced and started to engulf women. During Gupta period, the status of women immensely deteriorated. Dowry became an institution and Sati Pratha became prominent.

During the British Raj, many social reformers such as Raja Rammohun Roy, Ishwar Chandra Vidyasagar, and Jyotirao Phule started agitations for the empowerment of women. Their efforts led to the abolition of Sati and formulation of the Widow Remarriage Act. Later, stalwarts like Mahatma Gandhi and Pt. Nehru advocated women rights. As a result of their concentrated efforts, the status of women in social, economic and political life began to elevate in the Indian society.

Current Scenario on Women Empowerment: Based on the ideas championed by our founding fathers for women empowerment, many social, economic and political provisions were incorporated in the Indian Constitution. Women in India now participate in areas such as education, sports, politics, media, art and culture, service sector and science and technology. But due to the deep- rooted patriarchal mentality in the Indian society, women are still victimized, humiliated, tortured and exploited. Even after almost seven decades of Independence, women are still subjected to discrimination in the social, economic and educational field.

Major landmark steps taken for women empowerment: Provisions made under the Constitution of India such as: Right to equality under Article 14 of the Indian Constitution guarantees to all Indian women equality before law; Equal pay for equal work under Article 39(d), guards the economic rights of women by guaranteeing equal pay for equal work; and Maternity Relief under Article 42, allows provisions to be made by the state for securing just and humane condition of work and maternity relief for women.

Acts like the Dowry Prohibition Act, 1961, prohibits the request, payment or acceptance of a dowry. Asking or giving dowry can be punished by imprisonment as well as fine; Protection of Women from Domestic Violence Act, 2005, provides for a more effective protection of the rights of women who are victims of domestic violence. A breach of this Act is punishable with both fine and imprisonment; Sexual Harassment of Women at Work Place (Prevention, Prohibition, and Redressal) Act, 2013, helps to create a conducive environment at the workplace for women where they are not subjected to any sort of sexual harassment.

Panchayati Raj Institutions: As per the 73rd and 74th Constitutional Amendment Act, all the local elected bodies reserve one-third of their seats for women. Such a provision was made to increase the effective participation of women in politics.

Women's Reservation Bill: It is a pending Bill in India which proposes to reserve 33% of all seats in the Lok Sabha and in all State Legislative Assemblies for women. If passed, this Bill will give a significant boost to the position of women in politics.

Various Government Policies and Schemes: The Government of India is running various welfare schemes and policies, both at State and Central levels for the empowerment of woman. Some of the major programs and measures include Swadhar (1995), Swayam Siddha (2001), Support to Training and Employment Programme for Women (STEP-2003), Sabla Scheme (2010), National Mission for Empowerment of Women (2010) etc. All such policies and programs focus on social, economic and educational empowerment of women across various age groups.

Thus, there has been no dearth of social, economic, political, legal and Constitutional efforts made for the empowerment of women both prior to and post-Independence. However, women in India continue to face atrocities such as rape, dowry killings, acid attacks, human trafficking, etc. According to a global poll conducted by Reuters, India is the "fourth most dangerous country in the world for women".

Women Empowerment itself elaborates that Social Rights, Political Rights, Economic stability, judicial strength and all other rights should be also equal to women. There should be no discrimination between men and woman. Women should know there fundamental and social rights which they get once they born.

- There should be respect and dignity towards Women.
- Have total independences of their own life and lifestyle inside the home and also outside at their work.
- They should make their decision, by their own choice.
- They should have a high social respect in society.
- They have equal rights in society and other judicial works.
- They should not be discriminated while providing any type of education.
- They should select their own economic and financial choices by their own.
- There should not be any discrimination between woman and man while giving jobs and employment.
- They should have safe and secured Working location with proper privacy.

'There is no tool for development more effective than the empowerment of women."

✦✦✦

Women in Banking and Financial Sector

Diana V. Alurkar
PBOD, C.O.

The industry that offers the best service condition to their employees is banking industry. Growth in banking industry has created opportunities for women in this sector. In the early nineties, we could hardly find an Indian woman at the top of banking or financial institution. During the last ten years, Indian women are placed at the topmost position of many major banks and are very successful. Their leadership qualities, managerial and administrative skills help them to climb the ladder of success.

Previously many women were attracted at clerical levels in banks because of attractive salary, security, work stability, good working conditions and low risk. Now the scenario is changing. Women have become more ambitious. The hands that were used for washing, cooking and cleaning are now being used for signing important documents.

Women are not afraid of shouldering responsibilities. They are taking the opportunities that are being offered in the banking sector and are climbing the ladder of success thereby gaining fame and recognition. The banking sector is considered to be a facilitator of women work culture that made the women monopolize the field. Having more women on the boards of institutions does help because women take moderate risk, are practical and are balanced. They are empathetic towards the needs of the customer.

What makes women so successful in the banking industry and financial services is more of a relationship and women excel at that. Women have been handling relationships at home as a wife, sister and as a mother. This nurturing and adjusting attitude flows into the workplace.

The mid 80's saw a number of smart women graduating from B-schools. The leaders in the private banks like ICICI, HDFC, HSBC, Citibank were all expanding and they realised that women were great assets. Hence they started hiring more women. Ms Chanda Kochhar was appointed by ICICI as management-Trainee in 1984 and rose through the ranks to become the MD and CEO of ICICI bank. In the year 2010, she was awarded Padma Bhushan by Govt of India.

Some women who have made their presence felt in the Banking and Financial Sector besides Ms Chanda Kochhar are Ms. Shikha Sharma, M.D. & C.E.O of Axis Bank, Ms. Renu Sud Karnad Ex M.D. of HDFC Ltd, Ms. Naina Lal Kidwai, former Country Head of HSBC bank, Ms. Meera Sanyal former CEO and Chairman of Royal Bank of Scotland in India, Ms.Manisha Girotra- Ex CEO of Indian Operations of Union Bank of Switzerland, Ms. Ranjana Kumar Ex Chairman and M.D of Indian Bank, Ms. H A Daruwalla Ex CMD of Central bank of India, Ms.Vijaylakshmi Iyer Ex CMD of Bank of India and Ms. Kalpana Morparia CEO of the Indian Division of JP Morgan & co. All of them are living inspirations for Indian Women.

Arundhati Bhattacharya ex Chairman & MD of SBI is a real role model to the women of our country. Forbes listed her as the 36th most powerful woman in the world in 2014 and the 30th most powerful woman in the world in 2015.

Usha Ananthasubramaniam, former CEO & MD of Punjab National Bank is first woman Chairman of IBA. She was honoured by the Ministry of Finance for her leadership in establishing the all-women's bank Bharatiya Mahila Bank in India. She also received the Asian Banker Achievement Award 2015 in the technology implementation category of Best outsourcing project.

Naina Lal Kidwai former country head of HSBC Bank (India) and former president of FICCI. She has worked as head of Investment banking in Morgan Stanley India. She has received various awards for her achievement in the Industry. She has been repeatedly listed in the fortune Global List for Top Women in Business.

Kalpana Morparia - CEO of the Indian Division of JP Morgan & Co. has previously worked with ICICI bank for 30 years. She was part of the merger of ICICI ltd with ICICI bank. She has also been listed in the fortune 50 Most powerful women in International Business in 2008.

Shikha Sharma, MD & CEO, Axis Bank is an IIM-A and LSR Alumni. In the year 2012 she was awarded with transformational business leader of the year at AIMA's Managing India Awards, Woman Leader of the year at Bloomberg-UTV Financial Leadership Awards and Business world's banker of the year award.

Ranjana Kumar, Ex Chairman & M.D. of Indian Bank restructured and transformed the bank in 2000 with her wide experience in banking. She revived Indian bank within 3 years from Loss making Bank to a Profitable one.

In Union Bank of India, 23.74% work force are women. Our bank should be given a lot of credit. They have allowed women to grow, prosper, handle responsibilities and offered equal opportunities. Many of our lady staff have reached great heights which include Ms. Rekha Nayak and Ms. Monika Kalia, presently General Managers and Ms. Hemlatha Rajan, Ms. Mangala Prabhu ex General Managers. Ms. H.A. Daruwalla and Ms. Vijaylakshmi Iyer have been GM's in our Bank and then joined other banks as ED's and MD's. They have become role models for many women who have ambition to make it big in banking industry. Most of the women bankers owe their success to their family. Their parents, spouse and in-laws made it possible for them to focus on their career.

A woman who walks in purpose doesn't have to chase people or opportunities. her light causes people and opportunities to pursue her.

Qualities of Woman Executives in banks

Traits required for banking professionals include a clear, logical mind, alertness, friendliness, assertiveness, diplomacy, efficiency, sincerity, tact, sound knowledge, adaptability, dynamism & result oriented outlook. Women employees in banks are eager to learn, are more sincere and diligent. They have the ability to take initiatives and are good in motivating team members. They are honest and compassionate. They are good workers, serious at work, dealing politely with customers, very focussed, and manage crisis very well.

The qualities of patience and emotion free attitude of women have proved to be advantageous for the growth of women in banking industry. Women employees meticulously complete their work. They are time-conscious. They do not shirk responsibilities. They perform all types of jobs well.

Women executives shoulder the dual responsibilities of household chores and bank responsibilities. Women complete their work at home before coming to office and finish the remaining household work after going home. Though many women are capable some of them put their families first and do not accept managerial jobs in the banks. They are afraid of taking promotions. It is difficult for them to cope up with transfers especially rural postings as it hampers their family. Many of them are not opting for overseas posting. The acceptance of promotion by women depends on their family's support.

The fact that banks are making opportunities available for women and making them want to stay in their jobs not only in India but also around the world is seen as a positive step forward that other industries can learn from. The gender neutral policies and conducive work conditions for women in the banking sector helped the women to grow in large numbers.

Women are successful both at work and in personal life by efficient time management, hard work and the right prioritisation. Today women are breaking barriers and conquering great heights. There is nothing that women across the country cannot achieve. Successful women have a dream, they live it, work on it and achieve it through hard work and perseverance.

Women have made their mark across banking and financial sectors. They have proved their mettle and have become an inspiration for women in the society.

The trend of women rising to high positions in the banking sector is a boost for female equality in India.

Women have proved that they are capable of running a successful professional as well as a successful family life. I would like to end with an inspiring quote from Ms. Chanda Kochhar:

"Plan better, be organized. I chose to be a working wife and mother.

Why should I COMPROMISE on either"

✦✦✦

बैंकिंग उद्योग में महिलाएं

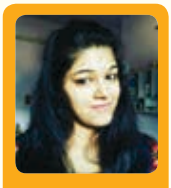

नेहा अग्रवाल
सैयद वासना रोड शाखा, बड़ौदा

भारतीय संस्कृति में महिलाओं को हमेशा से ऊंचा स्थान मिला है. पंडित जवाहर लाल नेहरू द्वारा कहा गया मशहूर वाक्य है, "लोगों को जगाने के लिए महिलाओं का जागृत होना जरूरी है". महिला सशक्तिकरण के जरिये आज महिलाएं, परिवार एवं समाज में बंधनों से मुक्त होकर अपने निर्णयों का निर्माता खुद ही बन रही हैं.

नब्बे के दशक के शुरुआती दौर में हम एक भारतीय महिला को बैंकिंग अथवा वित्तीय संस्थान के शीर्ष पर नहीं खोज सकते थे. लेकिन अब बैंकिंग क्षेत्र के विस्तार ने महिलाओं को बैंकिंग क्षेत्र में रोजगार पाने के नए अवसर पैदा कर दिये हैं.

कई सरकारी एवं निजी बैंकों के शीर्षतम स्थान पर महिलाएं कायम हैं और वे खुद को इस प्रतियोगिता में प्रतिभागी के रूप में शामिल किए जाने के लिए दृढ़ हैं. वे बड़े से बड़े निर्णय लेने में सक्षम हैं. वे नए विचारों को पेश कर रही हैं और अर्थव्यवस्था के विकास की दिशा में बराबर का योगदान भी दे रही हैं.

1969 में भारतीय बैंकिंग क्षेत्र के राष्ट्रीयीकरण ने बैंकिंग नौकरी में लैंगिक भेदभाव को कम करने के लिए पहला बड़ा कदम उठाया था. हालांकि, उस दौरान महिलाओं का बैंकिंग रोजगार में एवं शीर्षस्थ पदों पर आना एक चुनौती भरी बात थी. काम एवं परिवार के बीच बेहतर तालमेल बनाना और अपने पद को निभा पाना निश्चित रूप से एक बहुत बड़ी चुनौती है.

भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में आज महिलाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं.

अरुंधति भट्टाचार्य ने सन 1977 में एसबीआई बैंक में एक पीओ के पद पर कार्यग्रहण के पश्चात बैंक में 36 साल के कार्यकाल में बैंक की मर्चेन्ट बैंकिंग ब्रांच, एसबीआई कैपिटल मार्केट में मुख्य कार्यकारी अधिकारी के रूप में और बाद में एसबीआई की प्रथम महिला अध्यक्ष बनी.

बैंकिंग उद्योग में **चंदा कोचर**, सीईओ, आईसीआईसीआई बैंक का नाम उल्लेखनीय है. भारत के चार प्रमुख/बड़े निजी बैंकों में से एक आईसीआईसीआई बैंक, भारत में खुदरा व्यापार के सफलता के स्तंभों में से एक है. अमेरिका की विश्वविख्यात पत्रिका फोर्ब्स ने 2015 में चंदा कोचर को विश्व की 35 सबसे शक्तिशाली महिलाओं की सूची में शामिल किया है.

नैना लाल किदवई हारवर्ड बिज़नेस स्कूल से एमबीए करने वाली पहली भारतीय महिला हैं, जिन्हें उनकी उपलब्धियों के लिए कई बार कई विशेष पुरस्कारों तथा भारत सरकार की ओर से पद्मश्री से सम्मानित किया जा चुका है.

शिखा शर्मा : भारत के वित्तीय परिदृश्य में शिखा शर्मा, एमडी एंड सीईओ, एक्सिस बैंक का नाम भी प्रमुख है. उनके पास वित्तीय उद्योग में तीन दशकों से अधिक का लंबा अनुभव है. उन्होंने आईसीआईसीआई बैंक और जेपी मॉर्गन एंड कंपनी जैसी बड़ी संस्थाओं के लिए भी काम किया है.

शांति एकम्बरम : भारतीय बैंकिंग उद्योग के चौथे सबसे बड़े बैंक कोटक महिंद्रा बैंक की अध्यक्षा शांति एकम्बरम भारतीय बैंकिंग उद्योग में एक और शानदार व्यक्तित्व हैं. कॉर्पोरेट और निवेश बैंकिंग के अध्यक्ष बनने के साथ ही उन्होंने इक्विटी और डेब्ट मार्केट की अस्थिर स्थितियों को झेलते हुए वर्ष 2012–13 में अपने इकाई के लाभ को दोगुना किया.

क्रिस्टीन लैगार्डे : आईएमएफ़ के प्रमुख के रूप में लैगार्डे ने चीन, रूस और यूके सहित कई देशों के लिए एक आर्थिक अनुशासन लाने हेतु काम करना जारी रखा है.

जेनेट येलेन : जेनेट येलेन ने 3 साल पहले इतिहास बनाया था, जब वह फेडरल रिजर्व बैंक की पहली महिला प्रमुख बनीं. आज परिदृश्य बदल रहा है. समग्र अर्थव्यवस्था के संचालन एवं प्रबंधन में महिलाओं की भूमिका अग्रणी है. न केवल उच्च स्तरीय प्रबंधन में हम महिलाओं की भागीदारी को देख सकते हैं बल्कि लिपिकीय स्तर पर भी वे अपने कार्यों में दक्षता और कौशल का प्रदर्शन कर रही हैं. देश में महिलाएं वित्तीय क्षेत्रों में विभिन्न बढ़ते अवसरों की ओर कदम तो रख ही रही हैं लेकिन साथ ही साथ प्रगति की पथप्रदर्शक भी बन रही हैं.

✦✦✦

धर्म एवं नारी

निवेदिता जेना
राउरकेला शाखा
(ओडिशा)

संस्कृत के 'धृ' धातु से बना है शब्द 'धर्म'.
"धार्यते इति धर्म:"

अर्थात जो धारण किया जाये वह धर्म. निर्जीव वस्तु से लेकर सजीव पशु, पक्षी, वृक्ष, लता सबका अपना अपना धर्म है. उनके गुणों को प्रदर्शित करता है उनका 'धर्म'.

जैसे पंछी का धर्म व्योमचारी होना, पानी का धर्म बहना. पेड़-पौधे अपना वानस्पत्य धर्म निभाते हैं. सूर्य की रोशनी में, पत्तों में मौजूद क्लोरोफिल की सहायता से प्रकाश संश्लेषण कर अपना भोजन तैयार करते हैं. ठीक वैसे ही मानव का धर्म 'मानवधर्म' कहलाता है.

मानव को छोड़ बाकी सारे सजीवों में नर और मादा दोनों का धर्म एक है. हर सजीव-नर, प्रजनन में भागीदारी तो लेता है पर सृष्टि नहीं कर सकता है. मादा-मानव भी दूसरे मादा प्राणी की तरह वंश को आगे बढ़ाने का काम करती हैं. परंतु आश्चर्य यह है कि मादा-मानव का धर्म, नर-मानव के धर्म से अलग है. 'क्योंकि मादा-मानव या 'नारी', नर-मानव या 'मर्द' से कमतर है, ऐसा धर्म के ग्रंथों में लिखा है' ऐसा कह कर सदियों से उनका शोषण किया जा रहा है.

शास्त्रों में पुरुष और नारी के जन्म का समय और कारण भी अलग अलग बताये गये हैं. पुरूष को सृष्टिकर्ता ने अपना स्वरूप दिखाने के लिये या अपनी श्रेष्ठता का बखान करने के लिये सर्जना की परंतु नारी की सृष्टि पुरूष के अकेलेपन को दूर करने के लिये की गयी. अन्य शब्दों में कहा जाये तो पुरूष की 'आवश्यकता पूर्ति' के लिये स्त्री का जन्म हुआ है. यह विचार अपने आप में स्त्री के प्रति अपमानजनक है और हम इसे सदियों से ढ़ोते आ रहे हैं.

ईसाइ धर्मग्रंथ 'बाइबल' में स्त्री की उत्पत्ति पुरूष की एक पसली से हुई है ऐसा बताया गया है. हिंदु धर्म में पुराणों के अनुसार मर्द (ब्रह्मा) जन्म होने के बाद नारी को अपने हाथों से बनाता है. यानी पुरूष के बाद नारी. औरत द्वितीय श्रेणी की मानव है.

मनुस्मृति का अनुसरण करते हुये तुलसीदास ने कहा- 'ढोर गंवार शुद्र पशु नारी'
ये सब ताड़न के अधिकारी'

शंकाराचार्य ने तो स्त्री को 'नरक का द्वार' कह दिया. कबीर जैसे मानववादी कवि भी कहते हैं- 'नारी की झाईं परत/अंधा होत भुजंग/ कबिरा तिन की क्या गति/ जे नित नारी के संग.'

ईसाइ धर्मानुसार, नर और नारी का परस्पर स्वेच्छा से और उल्लास के साथ मिलना 'मूल पाप' या 'ओरिजिनल सिन' कहलाता है. यही मूल पाप करने के लिये नर को नारी ने प्रलोभित किया था. इसलिए नारी 'शैतान की बेटी' है. बौद्ध धर्म में चौरासी सिद्धों में एक मात्र महिला 'लक्ष्मींकरा' थी. परंतु बाद में सिद्धों में केवल पुरूष थे और उनमें कोई नारी नहीं थी, कह भ्रमित किया जाने लगा. शायद सिध्दपुरूष कहना अभ्यास में है और कोई नारी सिद्धि प्राप्त कर सकती है, यह बात पुरूष प्रधान समाज व्यवस्था के गले नहीं उतर रही थी.

इस्लाम में भी कहा गया है कि पुरुष स्त्रियों से श्रेष्ठ हैं. कुरान में लिखा है, ''पुरुषों को स्त्रियों से ऊंचा दर्जा प्राप्त है" (सूरा -बकरा 2 :228) पुरुष स्त्रियों से श्रेष्ठ है, क्योंकि अल्लाह ने उनको बड़ाई दी है" (सूरा निसा 4 :34)

इस्लामी मान्यता है कि अल्लाह ने पुरुषों को श्रेष्ठ और स्त्रियों को हर प्रकार से निकृष्ट बनाया है. इसलिए स्त्रियों को समान अधिकार नहीं दिए जा सकते.

इस द्वितीय श्रेणी की मानव का धर्म भी प्रथम श्रेणी के मानव द्वारा लिखित धर्म ग्रंथों में दर्ज है. पुरूष निर्धारित मानकों को मानने के लिये स्त्री बाध्य है.

नारी के कर्तव्य के बारे में 'कुर्रान' कहता है-

''स्त्रियाँ बस घर में रहें और सजधज न करें और नमाज पढ़ती रहें" सूरा -अहजाब 33 :33

क्योंकि औरत का स्टेटस केवल एक दिल बहलाव की चीज है, उसके लिये उसका एक मात्र धर्म है, पति या मालिक को खुश रखना. कहा गया है कि वह इस तरह से रहे कि जब उसका पति उसे देखे तो खुश हो जाये. पति जब कोई हुक्म दे तो वह उसे पूरा करे. पति अगर दूर हो तो उसकी सम्पत्ति और अपने सतीत्व की सुरक्षा करे. ऐसी ही स्त्री आदर्श पत्नी समझी जायेगी. जो पांचों समय को रोजाना नमाज पढ़े, रमजान के रोजे रखे और अपने पति का कहा माने तथा अपने सतीत्व की सुरक्षा करे, ऐसी औरत जिस रास्ते से चाहे, जन्नत में प्रवेश करे.

यानी पति चार-चार शादियाँ एक साथ कर सकता है, पर औरत को एक पतिव्रता धर्म का पालन करना होगा. ऐसा नियम बनाने के पीछे कारण दिया गया है कि मर्द हमेशा सहवास के योग्य बने रहते हैं. उन्हें किसी भी समय अपनी काम तृष्णा की जरूरत पेश आ सकती है. लेकिन औरतें माहवारी के दिनो में, गर्भावस्था के दौरान नौ-दस माह तक और प्रसव के बाद के कुछ माह तक सम्भोग करने में असमर्थ रहती हैं. मर्द काम ईच्छा को नियंत्रित ना कर पाने पर नाजायज तरीके से अपनी जरूरत पूरी करेंगे. इससे बचने के लिए बहुस्त्रीवाद की कानूनी इजाजत इस्लाम ने दी है.

इस दोहरेपन का एक और उदाहरण है कि जो सच्चा मुसलमान है, उसे जन्नत में हूरों का संग मिलेगा, कहा जाना. यानी मृत्यु के पहले और बाद में उनके

अय्याशी के सामान के रूप में उन्हें औरतें हासिल होंगी.

हिंदु धर्म ने भी औरत को मर्द की आवश्यकताओं को ध्यान में रखना ही उसका नारी–धर्म बताया है.

''कार्येषु दासी करणेषु मन्त्री रूपे च लक्ष्मी क्षमया धरित्री

भोज्येषु माता शयनेषु रम्भा, षटकर्मयुक्ता कुलधर्मा पत्नी.''

नीतिसार की इस बहु लोकप्रिय पंक्ति में नारी को बताया गया है कि वह गृहकार्य में दासी, कार्य प्रसंग में मंत्री, सजने संवरने में लक्ष्मी, भोजन कराते समय माता, रति के समय रति निपुणा रंभा, क्षमाप्रदान में सर्वंसहा धरित्री बने. यानी पुरूष के किसी भी प्रकार के व्यभिचार के विरूद्ध आवाज़ न उठाना उसका 'नारी धर्म' है.

जब पुरूष अपनी बनायी नीति स्त्री पर थोपना चाहता है तो वह बहुत चालाकी से एक अन्य स्त्री के कण्ठ में अपनी भाषा और मानसिकता डाल देता है. जैसे कि 'श्रीरामचरितमानस' के अरण्य कांड में ऋषि आत्रि की पत्नी अनुसुइया के द्वारा तुलसी दास ने सीता को स्त्री धर्म के बारे में उपदेश दिया है –

''धीरज धर्म मित्र अरू नारी, आपद काल परिखिअहि चारी

बृद्ध रोगबस जड धनहीना, अंध बधिर क्रोधी अति दीना

ऐसेहु पति कर किए अपमान नारि पाव जमपुर दुख नाना

एकइ धर्म एक ब्रत नेमा, कायँ वचन मन पति पद प्रेमा.''

जिसका भावार्थ है धैर्य, धर्म, मित्र, और स्त्री इन चारों की विपत्ति के समय ही परीक्षा होती है. पति चाहे वृद्ध,रोगी, मूर्ख, निर्धन, अंधा, बहरा, क्रोधी और अत्यंत दीन हो परंतु उसे प्रेम करना नारी का धर्म है, अन्यथा यमपुर में उसे तरह तरह की यातनाएं मिलती हैं.

पुनरावृत्ति का जोखिम उठाते हुये हम यह तुलना कर सकते हैं कि तुलसी दास ने पुरूषों को अपनी स्त्री के प्रति शारिरिक अत्याचार करने के लिये प्रेरित किया है. उनके विचार में वही पुरूष धर्म है. अनुसुइया के माध्यम से नारी को नर्क का भय दिखा, शारिरिक प्रताड़ना के बावजूद पुरूष को प्रेम करते रहने एवं प्रतिरोध ना करने के लिये नियम बना दिया.

वास्तव में औरत के शास्त्र–सम्मत धर्म को उसके मासिक धर्म ने प्रभावित किया है. यह मासिक धर्म स्त्री की शारिरिक सरंचना का अभेद्य अंग है. मासिक स्राव है तो प्रजनन की क्षमता है. इसी के कारण पुरूष भी इस धरती पर आये हैं. माँ को ऊँचा दर्ज़ा दिया गया है, हर धर्म या संप्रदाय में. परंतु उसके मातृत्व के कारण को अपवित्र, नापाक मान लिया गया है.

कहा जाता है, पैगम्बर मुहम्मद की पत्नी 'आयशा' रितुस्राव के कारण मक्का के लिये अपनी यात्रा पूरी नहीं कर पाईं. मुहम्मद ने यह जानने के बाद कहा कि 'आदम की बेटियों' के लिये अल्लाह की ऐसी रज़ा रही होगी. और उसके बाद औरत का मस्जिद या हज़ जाने पर पाबंदी लग गई.

ईसाइ धर्म में तो औरत के मासिक धर्म को श्राप मान लिया है. 'ईव' ने 'एडम' को निषिद्ध फल 'सेब' खाने के लिये उकसाया और स्वयं भी खाया. इसीलिये स्त्री को मासिक धर्म का दंड मिला है. इस दौरान महिलाओं को चर्च में जाने की अनुमति नहीं है.

हिंदु धर्म में मासिक धर्म के दौरान औरत को 'अछूत' मान लिया जाता है. उसके स्वास्थ्य को दाँव पर लगा कर शास्त्रों की मान्यता बनाये रखा जा रहा है. उस दौरान वह घर में रह नहीं सकती. इसलिये कई बार तो महिलाओं को पशुशाला में रात बितानी पड़ती है. वह अलग बर्तन में खाना खाती है और खाना स्वयं नहीं पका सकती. पूजाघर या मंदिर में जाना एवं पूजा या शुभ अवसर पर उपयोग में आनेवाली सामग्री को छूने में पाबंदी रहती है. उसे एकवस्त्र हो रहना पड़ता है. यानी ठंड, बरसात सहन कर उसे अपने औरत होने के पाप का प्रायश्चित करना होता है. आज भी यह स्थिति पश्चिम बंगाल, ओडिशा, हिमाचल प्रदेश और अन्य कुछ प्रांतों में विद्यमान है. यह अपवित्रता मासिक धर्म की समाप्ति के साथ समाप्त होती है.

ओडिशा में धरती माता का रजस्वला होने का पर्व रज संक्रांति के नाम से जून 14 के आसपास तीन दिन तक मनाया जाता है. उसके उपरांत ही कृषक, खेत जोतना प्रारंभ करते हैं. गुवाहाटी के कामाख्या मंदिर की देवी की तब पूजा करना पुरूषों के लिये सबसे ज्यादा पवित्र है, जब वे रजस्वला हों.

औरतें अब जागरूक हो रहीं हैं. पुरूष वर्चस्व बनाये रखने के लिये किए जा रहे सारे हथकंडों को वे समझने लगी हैं. शिक्षित, आत्मचेतन महिलाओं ने अपने औरत होने की हीनभावना से मुक्त हो, अपने अधिकारों के लिये लड़ना सीख लिया है. तीन तलाक के खिलाफ विरोध प्रदर्शन कर रही हैं. इसीलिये वे केरल के सबरीमला मंदिर, महाराष्ट्र के शनि शिगणापुर मंदिर और मुंबई के हाज़ी अली में प्रवेश अधिकार चाहती हैं. मंदिरों, मस्जीदों या गीर्जाघरों में फैली गंदगी से प्रार्थनास्थल अगर अपवित्र नहीं हो रहे हैं तो औरत के प्रवेश से वे अपवित्र कैसे होगें या देवियों का पूजन पवित्र है तो नारी के प्रवेश पर रोक क्यों? जैसे प्रश्न बार बार स्वघोषित धर्माधिकारियों के सामने आ रहे हैं और वे तिलमिला रहे हैं. उनकी सत्ता छिनने लगी है, वे अधिक से अधिक आक्रामक हो रहे हैं. उनके आक्रमण में शास्त्र ही उनके शस्त्र हैं और धर्म उनका आयुध. वे तर्क कर रहे हैं– झूठ, दुस्साहस, कपट, मूर्खता, लालच, अपवित्रता और निर्दयता स्त्रियों के स्वाभाविक दोष हैं.(चाणक्य नीति दर्पण)

शैतान की बेटी औरत; सम्मोहक या सेड्यूसर है. इसलिये उसे मासिक धर्म, प्रसव पीड़ा, गर्भधारण तथा सदा पुरूष की अधीनता में रहने और दंडित किये जाने का शाप है. (बाइबल)

यही लोग स्त्रियों पर घरेलू हिंसा, एसिड अटैक और रेप जैसे घिनौने अपराध कर रहे हैं. यही लोग ही बलात्कार का कारण औरतों का बाहर काम करना, जिंस पहनना या फास्टफूड खाना बताते हैं. यही लोग वकील बनकर पीड़िता को चरित्रहीन बता कर, डॉक्टर बन कर बलात्कार नहीं हुआ है का रिपोर्ट देकर, जज बन कर बलात्कारी को निर्दोष करार देकर, अपने मर्दवादी मानसिकता को बचाने और जीताने में लगे हैं. ये लोग दफ्तर में महिला कर्मचारी की 'मैटर्निटी लीव' को गलत कह वकालत करते हैं. यही लोग उनसे आगे जा रही महिला सहकर्मी को चरित्रहीन और कामचोर बताने की कोशिश में लगे रहते हैं. ऐसे लोगों से हमें सतर्क रहना होगा. ये लोग धर्म के नाम पर नारी को भोग्यवस्तु की स्थिति से उपर उठने नहीं देने के लिये जी तोड़ मेहनत कर रहे हैं.

ये लोग कह रहे हैं– धर्म के बारे में कोई प्रश्न नहीं कर सकता है, विशेष रूप से कोई नारी तो बिलकुल ही नहीं. धर्म के बारे में कोई तर्क या विवेकपूर्ण वैज्ञानिक सोच को बर्दाश नहीं किया जायेगा. यह केवल आस्था है. हमारी संस्कृति और परंपरा है. इसलिये महान है, और प्रश्नोत्तरों से परे है.

हमें भी इन चोंचलों को समझना होगा.

वरिष्ठ लेखक–पत्रकार विष्णु नागर कहते हैं– ''सामंतवाद आज की तारीख में इसी धार्मिक चोले में अपनी अतार्किकता, अपनी अमानवीयता को बचाकर रख सकता है, क्योंकि उस पर प्रश्न लगाना सबसे कठिन है, संवेदनशील मामला है. सामंतवाद स्त्री के हर तरह से इस्तेमाल में विश्वास रखता है, उसे अधिकार देने में नहीं.''

सबसे अहम बात; हमें पुरूषवादी मानसिकता की कठपुतली बनने से बचना होगा. श्रीरामचरितमानस के अनुसुइया ने सीता को जो उपदेश दिया और जिस उपदेश को सीता ने जीवन भर निभाया; उसका फल विषम रहा. पतिव्रत धर्म पालन करने के बाद भी सनकी पति का विश्वास वह कभी जीत नहीं पाईं. उसे आत्महत्या करना पड़ा. हम या हमारे बेटियों को कोई उसी रास्ते पर चलने के लिये बाध्य नहीं कर सकता. हमें धर्म की सत्यता को पहचानना होगा.

ओशो (आचार्य रजनीश) कहते हैं– धर्म एक तरह का ज्ञान है. और धर्म के जितने भी सिद्धांत हैं, वे किसी के ज्ञान से निःसृत हुये हैं, किसी के विश्वास (या आस्था) से नहीं. और धर्म अज्ञान नहीं सिखाता.

तो जब भी हमारे सामने धर्म पाबंदी बन कर, हमारे जीवन को रौंदने के लिये खड़ा मिले तो हम स्वयं से प्रश्न करें, तर्क करें, विवेकपूर्ण और वैज्ञानिक विश्लेषण करें और सत्य को खोज निकालें. फिर सत्य के साथ जीयें. हमें इस बात को समझना होगा कि कोई भी धर्म जीवन से बडा नहीं है. हमें एक दूसरे के साथ मिल कर इस लड़ाई को लड़ना और जीतना भी है.

✦✦✦

WOMEN URBAN RURAL

Saumya Sridhar
CAG, C.O. Mumbai

Woman - the word sounds powerful isn't it. Since eternity she has played a role that is far more superior than men – that's definitely no exaggeration. She plays the role of a mother, daughter, wife, sister etc all on her own so magnificently – then be it an urban woman or a rural woman. One of the main characteristics of women is her multi-tasking dexterity. She is usually the one who handles both home as well as her occupational field or office with equal competency. Her managing of the household budget with such precision would put any Finance minister to shame.

Position of women in India is a bit complicated one - while in some places their status is "equal to men" while in others they are held not only in disrespect but even in positive hatred. In India theoretically women enjoyed the status of devi (goddesses) or ardhangini, but in practice she had a subservient position than man. She had no personality of her own. In her early years she lived in the shadow of her father, then her husband and finally her son.

In the Vedic period women had equal rights as men. Their status was fairly high and were treated as equals with men in almost all spheres of life. This position enjoyed by women deteriorated in post Vedic period and gradually degraded in the Puranic and Smriti periods. Medieval period between 11th and 18th century witnessed further deterioration in the position of women. Female Infanticide, Child Marriage, Purdah system, Sati, Slavery were the main social evils affecting the position of women. During British period substantial progress was achieved in eliminating inequalities between men and women in matters of education, employment, social and property rights and so on. Many social reformers like Justice Ranade, Swami Vivekanand, Dayanand Saraswati, Ishwar Chandra Vidyasagar, Raja Ram Mohan Rai etc made efforts and legislations were passed to abolish Sati, facilitate remarriage etc. Christian missionaries took great interest to educate young girls. This slowly and steadily helped improve the status of women.

To talk about Women – Urban / Rural, let me first describe her in simple words …

An Urban Woman – Educated, Confident, Independent, Gorgeous, Go-Getter.

A Rural Woman – Illiterate, Dependent, Frail, Timid.

Pandit Jawaharlal Nehru rightly said – "You can tell about the condition of a nation by looking at the status of their women". Though we are almost 70 years into independence, the rural- urban divide is still as prominent in our country as it was in the yesteryears. The birth of a girl child is still unwelcome in many communities – more so in the rural areas where literacy rates are very poor. A daughter is regarded as a curse. She continues to suffer discrimination, harassment, humiliation and exploitation in and outside her home. Power to govern the home still rests in the hands of the male head of the family. She is not financially independent and has to be looked after by the male member in the family.

Women's lower status in Indian society contributes to early marriages, lower literacy, poor nutrition, high fertility and mortality levels. Majority of women in rural India presently in the age group of 35-65 have been kept away from any form of formal education. According to 2011 census the population of rural women who are literate is just 58.8%. This lack of basic education has indeed prevented the girls in rural India in comprehending what their basic civil liberties are. Their real empowerment is thus confined within the four walls of their homes and there too they are a shadow of their own self and have to follow the wish of their menfolk.

Due to poverty and illiteracy they suffer from malnutrition, improper hygiene and sanitation facilities which lead to many communicable diseases, repeated pregnancies and lack of proper maternal nutrition makes them weak and also increases infant mortality rates.

Rural areas provide less opportunity to earn income as compared with urban areas. As they lack industries and infrastructure which is found in urban areas, the rural folk primarily take to activities such as farming, fishing, handicrafts, weaving etc. With high fertility rates, rural women generally have many children and as a result many mouths to feed. The menfolk many a times take to addictions such as tobacco and alcohol and rearing the children and running the family is left to women. As a result, the rural women are often exploited and at times have to sell themselves to ensure that their children don't go to bed hungry or get atleast some basic education. They thus play a key role in supporting their households and communities, in achieving food and nutrition security, generating income and improving rural livelihoods and overall well being. They contribute to agriculture and rural enterprises and fuel local and global economies. They can be called active agents for achieving the transformational economic, environmental and social changes required for sustained development. This crucial role that women and girls play in ensuring the sustainability of rural households and communities, improving rural livelihoods and overall wellbeing, is now being increasingly recognised. Some examples of successful rural women are: Co-operative Milk Marketing Federation and Dairy Business in Gujarat is primarily run by women, SEWA (Self Employed Women's Association) is a non profit organization run exclusively by women in Lucknow.

The scene is changing rapidly for the better for the present younger generation where a large number of young girls from villages are seen to be attending schools and even colleges, but this was not so earlier. Government has taken many steps for improving the status and livelihood of women; especially women in rural areas. The Central government is running about 147 schemes and state governments are running about 195 schemes for women in the country which cater to the different needs of women in the society. These schemes are mainly being run to empower women in every field including education, healthcare, self-employment, and others. Financial assistance is also given to pregnant women for their nutritional and health needs. Toilets are being built in rural areas to improve sanitation and hygiene. Primary health centres, anganwadis for children, schools for primary education and introduction of mid days meals in schools are some schemes met to improve the lives of girls in rural areas.

Improvements in maternal nutrition, access to sanitation and health services, Universal primary education – reducing gender bias, reducing social and cultural barriers, reducing distance to school and services, reducing cost of education, providing quality reproductive health services etc which surely go a long way to improve the lives of rural women. Literacy and education can be powerful tools for empowering rural women and fighting poverty and hunger. Educated women are more likely to be healthy, generate higher incomes and have greater decision making power within their households.

On the other hand, the urban woman is far more educated, sophisticated, glamorous, independent, career minded, outspoken, demanding and aware of her own rights and liberties and generally more well equipped to take care of her own self. In urban centers due to increased literacy rates, a girl child is more or less accepted; though in some areas a male child is still preferred. The old time notion that only boys will take care of their parents during their old age and a girl has necessarily to be married off is slowly changing. Girls in urban centers get primary education and those who are from financially well to do families go ahead and complete their graduation and higher studies. Girls now a days have shown remarkable progress in every field and are moving ahead shoulder to shoulder with their male counterparts. In metro centres it is observed that girls outnumber boys in many fields – be it academics, sports, entertainment etc. Women have made their mark in every field now – mountaineering, civil services, armed forces, astronomy, engineering, medicine……and the list goes on. Ms. Kiran Bedi, Ms. Kalpana Chawla, Ms. Bhachendri Pal, Ms. Indira Nooyi, Ms. Arundati Roy etc are some women who have scaled heights in different professionals and made the nation proud. Their sincerity, hard work and inherent strength helps them march ahead.

The urban women can be divided into four categories – the poor, the middle class, the rich and the super rich. The rich and the super rich class of women in India get the maximum advantage of women rights, civil liberties, programmes beneficial to women etc and are generally in command of their situation both at home and at their workplace. This is generally the situation of urban women belonging to the upper strata in India across bigger metros as well as smaller cities. She is in control of her own life, as well as the people and circumstances around her.

The situation is not so rosy when it comes to women in the upcoming growing middle class in India. This category generally forms the bulk of women in urban India spread across big and smaller cities as well as the metros. The women in this group are basically stuck between their homes and the office routine as most of them are in gainful employment either in the vast majority of Govt offices or in private workplaces. They don't have sufficient time or freedom on their hands to put into practice the various benefits emanating from either schemes of social welfare or women oriented schemed announced by either Govt or private sector. They are sandwiched between family demands and official responsibilities. They are neither able to do justice to their work nor attend to their loved ones at home. They constantly live with a feeling of guilt of not being able to satisfy anyone – neither self nor family nor their profession.

The last affected is this category of urban poor women who come from a rural background looking for jobs in the city. These women are generally from poor families who are fed up of the life of misery in their villages and migrate to the cities of urban India in the hope of getting a far more satisfactory lifestyle. They get fascinated by the alluring lifestyle and glamour seen in movies. With their limited education and skiils, they end up doing menial jobs as labourers in building sites, ayas in hospitals or maid servants in the bigger cities of India where household chores are generally looked down upon and frowned by the upper stratum of women.

Overall the position of an urban woman is far better when compared to a rural woman. She is many a times financially independent, educated, confident and takes decisions. If she is a career woman she is normally much more efficient- as she does not have the time to dawdle. She does everything twice as fast and twice as methodically. A working woman being more disciplined and pressured for time often makes a much more efficient housewife. If she is highly educated and financially well off she may not decide to take up a full time job; instead opt for a part time job or for a work-from-home model. Else she may even opt to be a good homemaker. This would help her to devote enough time to her family and her children to whom she may play the role of an expert cook, a tutor, a guide, a mentor, an advisor, a Consultant, a play mate or a physical trainer or a nutritionist. Whatever role she chooses, she does it professionally.

Role of women is continuously changing now. Days are not far away when women will leave the menfolk far behind in the race of life. Overall, women have proved themselves in the past, are proving themselves in the present, and have the mindset to do so in the future.

With all these changes in mindset, improving literacy and the empowerment of women that we are seeing today we can confidently say that the "Age of the Women has arrived" or to put in a lighter vein " Men Beware ".

✦✦✦

स्वातंत्र्योत्तर भारत में महिलाओं की आर्थिक स्थिति

मनीषा सिंह
क्षे.म.प्र.का. रांची

लंबे स्वतंत्रता संग्राम के पश्चात भारत को 15 अगस्त, 1947 में आजादी मिली. आजादी की इस लंबी लड़ाई में देश भर के लाखों स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने नियमित रुप में आंदोलन किया तथा जेल गए. हजारों स्वतंत्रता सेनानियों ने अपनी जान की कुर्बानी दी. तब जाकर हमारा देश स्वतंत्र हुआ. पूरे स्वतंत्रता आंदोलन का यदि आकलन किया जाए तो हम पाते हैं कि इसमें पुरुषों के साथ-साथ असंख्य महिलाओं ने भी भागीदारी की तथा अपना नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित कराया. आजादी के उपरांत सबके मन में एक लालसा थी कि देश में विकास की गंगा बहने लगेगी तथा सभी समस्याओं का अंत हो जाएगा. इन सब के बावजूद हम जानते हैं कि किसी देश की संप्रभुता, आन, बान एवं शान की परिचायक होती है.

आजादी के पश्चात पूरे देश में परिवर्तन की नदी बहने लगी. चारों ओर विकास तथा नए भारत का स्वरुप सामने आने लगा. स्वतंत्रता की नई सुबह के साथ ही नए विहान का आगाज होने लगा. चारों तरफ यह चर्चा चलने लगी कि अब तो राम राज्य ही कायम हो गया. हर घर में खुशियां अठखेलियां करने लगी. परंतु इन सब के साथ ही यह प्रश्न भी मुंह बाए खड़ा होने लगा कि देश की आधी आबादी जो कि महिलाओं की है, इनके विकास तथा आर्थिक स्वावलंबन का क्या होगा?

आज देश को आजाद हुए लगभग 70 वर्ष से अधिक हो गए हैं. परंतु अभी भी महिलाओं के उत्थान तथा इनके शोषण के विरुद्ध बहुत कुछ किए जाने की जरुरत है. हम जानते हैं कि किसी भी व्यक्ति का आर्थिक स्वावलंबन उसके स्थायित्व का निर्धारण करता है. आज के आर्थिक उदारीकरण के युग में भी महिलाएं उस मुकाम तक नहीं पहुंच पाई हैं, जहां तक के लिए ये हकदार थीं. इनकी आर्थिक स्थिति आज भी शोचनीय एवं दयनीय है. यदि कुछ प्रतिशत महिलाओं को छोड़ दिया जाए तो शेष महिलाएं आज भी पुरुष प्रधान समाज के दबाव में जीवन यापन कर रही हैं.

हालांकि शिक्षा, प्रशिक्षण, रोजगार के अवसर कुछ बढ़े हैं किंतु कुल मिलाकर स्थिति काफी निराशाजनक है. अधिकतर महिलाओं के पास न तो चल संपत्ति है न अचल. इससे केवल महिलाओं पर ही नहीं पूरे देश के विकास पर असर पड़ा है. आजादी के पश्चात् महिलाओं की स्थिति के आकलन क्रम में विभिन्न आयाम उभर कर सामने आते हैं. इनमें मूलभूल विचारणीय संदर्भ हैं, आर्थिक और सामाजिक. इन दोनों संदर्भों में महिलाओं के परिप्रेक्ष्य का आकलन किया जा सकता है.

कृषि क्षेत्रः

हम जानते हैं कि भारत एक कृषि प्रधान देश है. यहां की तीन चौथाई आबादी कृषि के कार्यों में संलिप्त है. असंगठित क्षेत्र में पुरुषों के साथ ही महिलाएं भी कार्यरत हैं. यदि हम देखें तो पूरे देश में 10 प्रतिशत ही महिलाएं संगठित क्षेत्र में काम करती हैं. चूंकि उनके पास जमीन नहीं होती तो वे पारिवारिक या दूसरों की जमीन पर मजदूर किसान के रुप में काम करती हैं. किसी प्रकार की ऋण अथवा अन्य सुविधाएं नहीं मिलने के कारण उनकी उत्पादकता पर सीधा किंतु प्रतिकूल असर पड़ता है. इसके साथ आमदनी जो कम होती है वह अलग. वस्तुस्थिति यह है कि 20 प्रतिशत खेती योग्य जमीन की देखभाल महिलाएं मुखिया की तरह करती हैं. सारा इंतजाम देखती हैं मगर जमीनें उनके नाम नहीं है.

निर्माण क्षेत्रः

निर्माण क्षेत्र पर दृष्टि डालने पर स्थिति कोई ज्यादा बेहतर नहीं दिखती है. कई शोध के आधार पर यह देखा गया है कि निर्माण क्षेत्र में कुल योगदान का 30 प्रतिशत योगदान महिलाओं का है पर महिलाओं का अक्सर रजिस्टर में नाम ही नहीं होता. साथ ही, इन कामों के लिए पुरुषों के बराबर उन्हें मजदूरी भी नहीं दी जाती. पुरुष बड़े बड़े मशीनों पर बैठकर काम करते हैं तो महिलाएं अपने सिर पर बोझ ढोने का काम करती हैं. विभिन्न फैक्टरियों में महिलाएं 8-8 घंटे काम करती हैं परंतु उन्हें मेहनताना बहुत कम दिया जाता है. जिसका असर सीधे उनकी आर्थिक स्थिति पर पड़ता है. आज आवश्यकता है कि महिलाओं को भी समान काम के लिए समान मजदूरी/पारिश्रमिक दिया जाए ताकि उन्हें स्वावलंबी बनाया जा सके.

उद्योग एवं कार्पोरेट क्षेत्रः

यदि हम कल-कारखानों एवं कार्पोरेट क्षेत्र का अवलोकन करते हैं, तो पाते हैं कि कपड़ा मिलों में काम करनेवालों में महिलाएं अधिक पाई जाती हैं. परंतु वहां भी उनके साथ लिंग के आधार पर भेद-भाव किया जाता है तथा पुरुषों के बनिस्बत उन्हें कम पारिश्रमिक दिया जाता है. विभिन्न समाचार पत्रों में समय समय पर प्रकाशित आकंड़ों से पता चलता है कि वस्त्र उद्योग में महिलाओं को बिना पंजीकृत किए काम कराया जाता है तथा उन्हें उचित मजदूरी भी नहीं दी जाती है. एक तो उन्हें इन कल-कारखानों में शोर-शराबे के बीच काम करना पड़ता है, दूसरी उनके श्रम का शोषण भी होता है. यदि किसी प्रकार की दुर्घटना इन फैक्टरियों में हो भी जाती है तो महिला श्रमिकों का कहीं भी नाम नहीं होता. यह अंसगठित क्षेत्र महिलाओं के लिए काफी घातक है.

गुजरात एवं महाराष्ट्र में वस्त्र उद्योग, राजस्थान में कालिन एवं मार्बल उद्योग, उत्तर प्रदेश तथा कर्नाटक एवं तमिलनाडु में सिल्क उद्योग तथा रेडिमेड गारमेंट उद्योग ऐसे क्षेत्र हैं, जहां काफी अधिक संख्या में महिलाएं कार्यरत हैं परंतु इन सभी स्थानों पर उनका शोषण किया जाता है एवं निर्धारित मजदूरी से वंचित रखा जाता है.

आजादी के इतने वर्ष पश्चात भी अभी कमोबेश यही हाल बना हुआ है. आज आवश्यकता है कि जिस भी जगह महिलाएं काम करती हों, उन्हें निर्धारित मजदूरी दिलायी जाए तथा उन्हें भी पहचान प्रदान कर एक नियमित श्रमिक की श्रेणी में रखा जाए.

विस्थापनः

देश में बड़ी–बड़ी परियोजनाओं के कारण विस्थापित होते अपार जन–समूह ने देश में बेरोजगारी का सामना किया है तो महिलाएं भी इससे वंचित कैसे रह सकती थीं. प्राकृतिक संसाधनों से वह धीरे–धीरे वंचित होती जा रही हैं. विस्थापन के पश्चात घर के पुरुषों के नाम पर घर या जमीन मिल भी जाती है. पर महिलाओं का व्यावहारिक हक नहीं रहता है. ऐसे में जरुरत है कि विस्थापन के पश्चात जहां कहीं भी सरकार द्वारा मुआवजा या फिर जमीन/घर का आबंटन किया जाता है, वह घर की महिला एवं पुरुष दोनों के नाम पर संयुक्त रुप से होना चाहिए.

साथ ही महिलाओं के नाम पर प्राकृतिक संसाधनों जैसे खेत, बगीचा आदि की खरीद के समय रजिस्ट्री प्रभार में छूट मिलनी चाहिए ताकि महिलाओं के नाम पर प्राकृतिक संसाधनों की ज्यादा से ज्यादा खरीद हो सके एवं महिलाएं स्वावलंबी हो सकें. इस क्षेत्र में झारखंड सरकार का यह निर्णय महिला सशक्तिकरण की दिशा में मील का पत्थर साबित हो रहा है जिसमें सरकार ने महिलाओं के नाम पर क्रय होने वाले घर/प्लॉट/खेती की जमीन के रजिस्ट्री को प्रभार मुक्त कर दिया है. आवश्यकता है कि पूरे देश में इस तरह की व्यवस्था बनाई जाए.

शहरी क्षेत्रः

गांव की महिलाओं की स्थिति तो बदतर है ही परंतु शहरों में रहने वाली महिलाओं की स्थिति भी कोई खास बेहतर नहीं है. शहरी झुग्गी बस्तियों में रहने वाली महिलाओं को, इनके दो तिहाई श्रम के बदले दसवां भाग मेहनताना प्राप्त होता है. विश्व संपदा का सौंवा भाग भी महिलाओं के पास उपलब्ध नहीं है. वे बहुत कम वेतन पर काम करने को मजबूर होती हैं. कई संस्थानों में पीने का पानी तथा शौचालय भी उन्हें नसीब नहीं होता है. अशुद्ध पानी पीने तथा शौचालयों की अनुपलब्धता के कारण इन्हें कई प्रकार की संक्रामक बीमारियां घेर लेती हैं जो कभी कभी जानलेवा भी हो जाती हैं.

सरकारी योजनाएं व महिलाएंः

यह देखा जाता है कि सरकार द्वारा महिलाओं की स्थिति में सुधार हेतु कई योजनाएं समय–समय पर लागू की जाती हैं. उदाहरण के लिए जवाहर रोजगार योजना, ड्वाकारा, क्यूनिटी डेवलपमेंट प्रोग्राम, हिल एरिया डेवलपमेंट प्रोग्राम, स्मॉल फार्म्स डेवलपमेंट एजेन्सी, अप्लाइड न्यूट्रीशन कार्यक्रम, आंगनबाड़ी कार्यक्रम आदि.

कई कन्या शिशु योजनाएं भी बनी हैं ताकि उनकी हत्या एवं भ्रूण हत्या को रोकने के लिए हर संभव प्रयास किए जाएं परंतु इसके बावजूद भी महिलाओं/लड़कियों से भेदभाव जारी है तथा उनका पुनर्वास कार्यक्रम बाधित है.

इसी तरह दिव्यांग लड़कियों/महिलाओं का जीवन और भी अधिक दूभर है. एक तरफ किसी परिवार पर उनकी निर्भरता उन्हें गुलाम की जिंदगी जीने पर मजबूर कर देती है तो दूसरी तरफ माता–पिता के देहांत के पश्चात उनकी घोर उपेक्षा होती है. आवश्यकता है कि ऐसी दिव्यांग लड़कियों/महिलाओं को विशेष सुविधा उपलब्ध कराते हुए उनके पुनर्वास हेतु हर संभव प्रयास होना चाहिए.

पूंजीवादी व्यवस्था एवं महिलाएंः

पूंजीवादी व्यवस्था में जिस तरह से गरीबों की आर्थिक स्थिति अत्यंत दयनीय है, वही हाल समस्त महिलाओं का भी है. ढांचागत समायोजन, लिंग भेद को बढ़ावा दिया जाता है तथा महिलाओं को उनके अधिकार से वंचित रखा जाता है. अतः आवश्यकता है महिलाओं को वित्तीय मदद प्रदान कर उन्हें आर्थिक रुप से सक्षम बनाया जाए.

वर्तमान सरकार द्वारा चलाई गई प्रधानमंत्री स्टार्ट अप योजना काफी लाभप्रद प्रतीत हो रही है लेकिन अभी भी इसकी व्यापकता नहीं बन पाई है.

महिलाओं के लिए बेहतर संभावनाएंः

पूरे भारतीय समाज में आज महिलाओं को बेहतर स्थान देने तथा उनके आर्थिक स्वावलंबन को बढ़ाने की जरुरत है. परिवार से शुरु होकर समाज, गांव, पंचायत, जिला, राज्य एवं पूरे देश में महिलाओं की हर क्षेत्र में भागीदारी सुनिश्चित करने की दरकार है. बिहार जैसे राज्य जहां स्थानीय निकाय चुनावों में महिलाओं के लिए कुछ सीटें आरक्षित कर उन्हें सबल बनाया जा रहा है तो विभिन्न राज्यों की विधानसभाओं एवं देश के संसद में महिलों का प्रतिनिधित्व अभी भी चिंता का विषय है. महिलाओं के बीच किसी भी तरह का भेद–भाव नहीं करते हुए उन्हें एक श्रेणी में रखा जाना चाहिए एवं उन्हें किसी तरह से जाति एवं धर्म के आधार पर विभाजित नहीं किया जाना चाहिए. महिलाएं चाहे किसी भी धर्म एवं जाति की हों, उनकी स्थिति एक जैसी है.

अभी हाल ही में उच्चतम न्यायालय द्वारा पैतृक संपत्ति में लड़कियों को लड़कों के बराबर अधिकार प्रदान किया गया है, यह खुशी की बात है. बिहार में राज्य सरकार द्वारा दहेज प्रथा के उन्मूलन के लिए सार्थक कदम उठाए जा रहे हैं, जिससे कई ऐसे मामले सामने आएं हैं जिसके तहत लड़कों ने घर में बगावत कर दहेज की रकम को लड़की के पिता को लौटाया है. यदि ऐसे ही कार्यक्रम पूरे देश स्तर पर चलाये जाएं तथा दहेज उन्मूलन कानून को सख्ती से लागू किया जाए तो इस क्षेत्र में और अधिक बेहतर परिणाम मिल सकते हैं.

दिव्यांग महिलाओं/लड़कियों के लिए आर्थिक स्वावलंबन हेतु ब्याज मुक्त ऋण की व्यवस्था, उनके लिए सरकार की ओर निःशुल्क घर तथा बेरोजगार/मजबूर दिव्यांग महिलाओं/लड़कियों के लिए दिव्यांगता भत्ता की योजना को सख्ती से लागू किया जाना चाहिए ताकि इस तरह की महिलाएं/लड़कियां अपना जीवन सम्मानजनक तरीके से व्यतित कर सकें.

सारांशः

उपर्युक्त विभिन्न विषयों को देखते हुए हम यह भी कह सकते हैं कि आजादी के बाद महिलाओं की आर्थिक स्थिति में थोड़ा बदलाव तो देखा जा रहा है, परंतु यह बदलाव ऐसा नहीं जिसके आधार पर हम खुश हो सकते हैं. धीरे–धीरे, कदम दर कदम इस बदलाव को गति देने की जरुरत है. महिलाओं को घर की चौखट से बाहर निकल कर काम करने, अपने अधिकारों की रक्षा करने हेतु आगे आकर प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है.

देश और समाज के विकास के लिए हर क्षेत्र में जितनी अधिक महिलाओं की भागीदारी होगी, देश एवं समाज की तरक्की की रफ्तार उतनी ही ज्यादा तेज होगी. अतः हम सब मिलकर संकल्प लें कि नारी बढ़े, देश बढ़े!

✦✦✦

Women Empowerment The need of the hour

Dr. Chetna Pandey
Staff College, Bengaluru

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता :

This shloka from Manu Smriti throws the light on the importance of women to be given at home and in the society as it narrates that the place where women are revered are abode of Gods and further when they have been degraded misery and pain becomes prevalent. The status of women in Indian Society reveals various phases of highs and lows. Let us have a look.

Status of Women in Indian Society: Women in ancient times held very high status. If we recall the name of Gargi who was a Philosopher, Public Speaker and Royal Advisor. She is one of the composers of the Upanishads and advisor in the court of King Janaka. She has been considered as an epitome of intellectual contributions and power of questioning. Another name which comes to our minds is of Akka Mahadevi who was a poet and social reformer, who was influential in the development of Veerashaivism a form of Shiva- centered Hinduism which rejects caste-based hierarchy. Without naming the Rani of Jhansi the warrior queen, freedom fighter our gratitude to the great soul will be incomplete as she has become a simile for every strong women for today as she fought the 1857 War of Independence taking her son strapped on her back. In Modern India too, many women could achieve historic feats for instance Ms Kiran Bedi the first woman Officer in Police Service, Ms Kalpana Chawla the first women astronaut, Ms Nirupama Rao the Indian Foreign Service Officer and former Indian Ambassador to the United States, Ms Kiran Mazumdar Shaw the Chairperson of Bangalore based biotechnology company Biocon Limited, Ms Chanda Kochhar the Managing Director and Chief Executive Officer of ICICI Bank, Ms Arundhati Bhattacharya who led the huge banking giant State Bank of India to such greater heights as CEO, Ms Indira Nooyi the Current Chairperson and CEO of Pepsico. The list is immense and hence reveals the status and position which Indian women have since been enjoying and have been successful in exceling all fields.

One of the major objectives against introducing Women reservation was to achieve the goal of equal participation of women and men in decision making which will bring in a balance in the composition of society in order to strengthen democracy and also promote proper functioning. When we strive for equality, development and peace we must consider the participation of women's perspectives at all level of decision making.

The Women Reservation Bill which was first introduced in 1996 and then introduced in Rajya Sabha in 2008 had the following main provisions of reserving one-third of Lok Sabha and state assembly seats for women but it is still to become a law. Introducing

women reservation in the Legislature was initiated to involve women participation in the decision making process of the country and also aim towards women empowerment.

Why women empowerment is important? As we all know women constitute around 50 percent of population and the large number of them are unemployed, underemployed or having disguised employment. This has created a lopsided growth of the economy of many countries. Similar is the case in our country too. Industrialization, Advancement in technology, digital disruption have opened vast opportunities of growth and employment for women in these sector. Today's women go to office, college to work for a wage. They can sustain their own living. Gone are the days when woman had only two alternatives of early marriage and children and continued dependence on the family.

Talented and Creative: Women are as talented as men, rather excel in creativity and innovation too. Previously the women in our country and many other underdeveloped countries were deprived of higher education but now a days the scene is different. They are given ample opportunities to study and benefit themselves individually and also society at large.

Intelligence and Competence: Women are equally competent and even ahead of men in many socio cultural and economic activities.

Overall development of the society. When a women earns she not only sustain her family, shares the burden of other earning members but also helps in developing society at large. They are not confined to homes, involved in cooking and other household activities rather they contribute in many economic activities, are self-independent contributing to the economic growth.

Reduction in anarchy through domestic violence: Women are educated and can earn for their sustenance. Hence they are fully aware of their rights and duties. They cannot fall victim to domestic violence and the family atmosphere is also peaceful and conducive for the development of their children.

Reduction in illiteracy, poverty and other social evils: Women empowerment has appeared as a greatest tool in eradicating the social evils since Independence. Many a times the amount of money earned by the male member may not be sufficient enough, hence if women also contribute they have a better standard of living, children can be educated and literate. As we all know that our mothers are our first and foremost teachers so if they are educated they may inculcate better values and also help the children in performing well in studies.

What are the barriers of women empowerment?

So much talk on women empowerment takes place but if we look at the barriers we can have an overall view of them. Some of the major barriers have been illiteracy, poverty, decline of household and cottage industries which has affected the overall country's economic development. Women have been deprived of Opportunities in the field of education, participation in social and civic life, upliftment activities, forced to live in abject poverty conditions.

Lack of technical knowhow and decline of household and cottage industries have also added to women under-employment and they become victim to deterioration of economic, physical and social health. Hence to cope up to these challenges women have to be given a protective environment so as to make her comfortably work in technologically advanced factories and industries.

Another important barrier restricting them in their workplace is the rigid and conservative mindsets of male dominated society at large wherein they pose a lot of challenges for women. Many still believe in the four fold role alternatives for a women as a daughter growing to wife, homemaker and mother. But women of today apart from taking due care of their family and household contributes to social, economic and political activities successfully.

Women's equality is still being questioned in terms of education, employment, and a majority of women are content with their present status and also working women feel lack of insecurity at their work place. A majority of woman in rural areas do not enjoy the rights and privileges as incorporated in our Constitution and the dream of Mahatma Gandhi through Swadeshi Movement to bring the women at equal platform and play an important role in the national development is yet to take its final shape.

How can we empower our Women?

Providing Hygienic conditions and education and helping them to get safe and clean drinking water may help all the women who have to travel for fetching drinking water in rural areas and tribal areas.

Protect the girl child and women from abuse, child labor, sex trafficking, child marriage by equipping them and providing those necessary skills, training, education, counselling and mentoring, medical care, creating within them the ability to get and service loans

Taking Care of new born as well as Moms by providing essential aids, counselling and creating a community where the moms of new born can meet and embrace the journey of motherhood. Creating amiable conditions for the moms to work with self-respect also needs attention.

Most importantly how to change the mindset. This will start once we empower women right from our families, workplaces and neighbourhoods. We should start with giving respect to our mother by simply writing to her how she has brought a difference in our lives, recall the teacher and extend your thanks through a written note, recall your childhood girlfriends and share the memories how they have been supportive enough in our growth, share a cup of coffee of tea with a new mom in our workplace and inform her how much important job she is doing in rearing her child, appreciate your daughter and tell her how much you love her. Thus these small instances of gestures towards women necessarily will bring the desired change in this area and the women empowerment will no longer be a dream or aim to achieve.

To quote G. D Anderson "Feminism isn't about making women stronger. Women are already strong. It's about changing the way the world perceives that strength" So let us all take a small leap in this process.

RESERVATION BILL ON WOMEN

Nidhi Yadav
R.O., Udaipur

Women, once considered fit only for carrying out domestic chores, looking after the house and babies have expanded their role as professionals. In India especially they have made major inroads in various male dominated professions. However, in spite of the fact that we have had a woman Prime Minister, Chief Ministers and President, women have not really made any remarkable inroads into fulltime. The Women's Reservation Bill has been framed keeping in mind this need of the women to participate in politics.

Women's Reservation Bill or The Constitution (108th Amendment) Bill, is a pending bill in India which proposes to reserve thirty three per cent of all seats in the Lok Sabha, the Lower House of Parliament of India, and state legislative assemblies. The Bill says the seats to be reserved in rotation will be determined by draw of lots in such a way that a seat shall be reserved only once in three consecutive general elections.

This Bill has been passed by the Rajya Sabha, the Upper House of the Parliament in March 2010. It needs to be passed by the Lok Sabha and at least fifty per cent of all state legislative assemblies, before it is put before the President of India for approval.

Women already enjoy 33 per cent reservation in gram panchayats and municipal elections. In addition, women in India get reservation or preferential treatments in education and jobs. For instance, several law schools in India have a 30 per cent reservation for females. The political opinion behind providing such reservations to women is to create a level playing field for all of its citizens. The argument is that social norms strongly favour men and therefore, reservation for women would create equal opportunity for men and women. The concept of democracy will only assume true and dynamic significance when political parties and national legislatures are decided upon jointly by men and women in equitable regard for the interests and aptitudes of both halves of the population.

Among the other benefits that the Bill is expected to provide is an increased participation of women in politics and society. Due to female foeticide and issues related to women's health, sex ratio in India is alarming at 1.06 males per female. It is expected that the Bill will change the society to give equal status to women. Women are supposedly more resistant to corruption, so this bill might prove to be a factor restraining the growth of corruption.

The proposer of the policy of reservation states that although equality of the sexes is enshrined in the Constitution, it is not the reality. Therefore, forceful affirmative action is required to improve the condition of women. Also, there is evidence that political reservation has increased redistribution of resources in favour of the groups which benefit from reservation. A study about the effect of reservation for women in panchayats shows that women elected under the reservation policy invest more in the public goods closely linked to women's concerns. In 2008, commissioned by the Ministry of Panchayati Raj, reveals that a sizeable proportion of women representatives perceive an enhancement in their self-esteem, confidence and decision-making ability.

Some opponents argue that separate constituencies for women would not only narrow their outlook but lead to perpetuation of unequal status because they would be seen as not competing on merit. On the other hand, the passing of the Women' Reservation Bill may cause bias in the democratic process. It may hurt the self-respect of women who have come up on their own ability, and may result in lesser respect for women in the society. It may also bring down the quality of leaders. It may create a new kind of hatred between genders as males may feel deprived of certain privileges, which in turn may create more social issues.

Another issue will be for the political parties, which will be forced to find women whether or not the women identify with the overall party agenda and the rest of the issues concerning all citizens, as opposed to just

women's issues. There are no provisions to prevent discrimination against men because of finding women who are inclined towards women's issues alone, or, in other words, biased against men. Further, powerful male members of parties will be tempted to find female relatives to 'reserve' the seat for themselves. So, it is feared that reservation would only help women of the elitist groups to gain seats, therefore causing further discrimination and under-representation to the poor and backward classes.

Irrespective of whether the Bill comes into effect or not, the fact is that women are as ever underrepresented in the election fray and in party structures. Very little has changed at one level since Independence. The candidates fielded by the various political parties are still dominantly male: women account for only five to ten per cent of all candidates across parties and regions. This is the same broad pattern that has been observed in virtually all the general elections in the country.

This is the case despite the Bill relating to women's reservation even political parties that are most explicitly in favor of pushing for women's reservation put up the same proportion of women as always in elections, and certainly not more than other parties that oppose the Bill. What may be more significant in terms of political power than the proportion of women fighting the Lok Sabha polls is the importance of women in inner party structures. Here women are by and large even less represented, in all parties.

In most parties, the women members are by and large thin on the ground if not invisible in the actual decision-making bodies and rarely influence the more significant party policies. Most often, indeed, they are relegated to the 'women's wing' of the party, and made to concentrate on what are seen as specifically 'women's issues' such as dowry and rape cases, and occasionally on more general concerns like price rise which are seen to affect housewives.

Despite all this, women are playing an important part in Indian politics today. This is most evident in the proliferation of women leaders and in the fact that, even though some of them may head parties that are relatively small in the national context, they simply cannot be ignored.

Of course, one myth that is easily exploded by the role played by such women leaders is that political leadership by women is dramatically different from that by men. Indeed, the truth is that most of our women political leaders are no better or worse than men. What all this suggests, therefore, is that the political empowerment of women not only still has a long way to go, but it also may not have all that much to do with the periodic carnivals of Indian electoral democracy.

This is not to say that the electoral representation of women is unimportant, but rather that it needs to be both deeper and wider than its current manifestation in the form of the prominence of a few conspicuous women leaders. This will lead to de-jure and de-facto enjoyment of all Human rights and fundamental freedom.

There are divergent views on the reservation policy. Proponents stress the necessity of affirmative action to improve the condition of women. Some recent studies on panchayats have shown the positive effect of reservation on empowerment of women and on allocation of resources.Opponents argue that it would perpetuate the unequal status of women since they would not be perceived to be competing on merit. They also contend that this policy diverts attention from the larger issues of electoral reform such as criminalisation of politics and inner party democracy.Reservation of seats in Parliament restricts choice of voters to women candidates. Therefore, some experts have suggested alternate methods such as reservation in political parties and dual member constituencies. Rotation of reserved constituencies in every election may reduce the incentive for an MP to work for his constituency as he may be ineligible to seek re-election from that constituency.

The final objective of reservation is to increase women's visibility in all policy decisions on the basis that all policy decisions affect women as well as men, and affect women differently to men. This applies equally to the "harder" issues such as trade, industry, agriculture, defence, employment etc., as it does to those "softer" issues which are traditionally assigned to women politicians.

By passing this bill we make women's more responsive and hardworkers. Along with this there is increase in participation of Indian women's and improvement in status of women and nation as wrightly said by Shri B R Ambedkar "I measure the progress of a community by the degree of progress which women have achieved."

✦✦✦

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में महिला स्टा

केंद्रीय कार्यालय, मुंबई : मुंबई स्थित बैंक की 'महिला कार्यपालकों हेतु राजभाषा संगोष्ठी' का आयोजन किया गया. कार्यशाला का उद्घाटन प्रसिद्ध गायिका तथा सहायक निदेशक, दूरदर्शन डॉ. शैलेश श्रीवास्तव के कर कमलों से किया गया. इस कार्यशाला में महिला कार्यपालकों की मानसिकता/संघर्ष/समस्याओं, राजभाषा का प्रयोग तथा जीवन के बारे में विचार विमर्श किया गया. फोटो में – संगोष्ठी में सहभागी कार्यपालक महिलाओं के साथ (बायें से दायें) डॉ. सुलभा कोरे, संपादक, यूनियन धारा; श्रीमती मीना खन्ना, उमप्र. (वित्तीय समावेशन); श्री राजेश कुमार, समप्र (रा.भा.); डॉ. शैलेश श्रीवास्तव, सहा. निदेशक दूरदर्शन एवं प्रसिद्ध गायिका; श्रीमती रेखा नायक, महाप्रबंधक (पीबीओडी) तथा श्रीमती डायना अलूरकर, समप्र (पीबीओडी).

क्षे. का., इलाहाबाद के तत्त्वावधान में दि. 06.02.2018 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के मद्देनजर, क्षेत्र की महिला स्टाफ सदस्यों हेतु हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में केन्द्रीय विद्यालय, ओल्ड कैंट, इलाहाबाद की प्राचार्या, श्रीमती शालिनी दीक्षित को अध्यक्ष के रूप में आमंत्रित किया गया था.

दि.07.02.2018 को **क्षे.का., भोपाल** द्वारा महिला स्टाफ सदस्यों के लिए विशेष हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया. इस कार्यक्रम की अध्यक्षता, अंचल प्रमुख श्री योगेंद्र सिंह जी की धर्मपत्नी श्रीमती संध्या सिंह एवं उद्यमिता विकास केंद्र की प्रशिक्षण प्रभारी श्रीमती संध्या जोशी ने की. कार्यक्रम में श्रीमती संध्या जोशी,पीएचडी (लोक प्रशासन) द्वारा महिलाओं के लिए चलाये जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी दी गयी.

क्षे.का., पटना में दि. 22.02.2018 को विशिष्ट महिला हिन्दी कार्यशाला का उदघाटन क्षेत्र प्रमुख, श्री जगमोहन सिंह द्वारा किया गया. सभी महिला स्टाफ सदस्यों के साथ उप क्षेत्र प्रमुख श्री सतीश कुमार भार्गव ने भी इसमें सहभागिता की.

दि. 17.02.2018 को **क्षे. का., बड़ौदा** में महिलाओं हेतु विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया. कार्यशाला में विशेष अतिथि वक्ता के रूप में श्रीमती पारुल मशर, सहायक महाप्रबंधक, बैंक ऑफ बड़ौदा ने 'भारतीय परिवार एवं महिलाओं की उपस्थिति–स्ट्रेस मूल्यांकन' पर उपस्थित 18 महिलाओं के साथ विचार विमर्श किया.

दि. 23.02.2018 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के मद्देनजर **क्षे. का., हावड़ा** द्वारा एक दिवसीय विशेष हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया. कार्यशाला का उदघाटन क्षेत्र प्रमुख, श्री कुन्दन लाल द्वारा किया गया. इस कार्यक्रम की मुख्य वक्ता मुख्य प्रबन्धक, श्रीमती पूनम सहाय रहीं.

दि.07.02.2018 को **क्षे. का., पुणे** द्वारा आयोजित महिला सशक्तिकरण पर एक दिवसीय विशेष हिन्दी कार्यशाला का उदघाटन श्री शैलेश कुमार सिंह, क्षेत्र प्रमुख ने किया और इस कार्यशाला में पुणे क्षेत्र की कुल 40 महिलाओं ने सहभागिता की. कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती ज्योति प्रिया सिंह, आईपीएस–डीसीपी ने शिरकत की.

फ सदस्यों हेतु आयोजित विशेष हिन्दी कार्यशाला

महिला स्टाफ सदस्यों हेतु आयोजित विशेष हिन्दी कार्यशाला **क्षे.का. हैदराबाद** में उपस्थित – क्षेत्रीय प्रमुख, श्री डी चिरंजीवी; डॉ कौशल्या, सहायक निदेशक एवं प्रभारी अधिकारी, हिंदी शिक्षण योजना, स्थानीय केंद्र, हैदराबाद; नाबार्ड से श्री मद्दल्ली सुब्रमण्या मूर्ति, सहायक महाप्रबन्धक (राजभाषा); उप क्षेत्रीय प्रमुख, श्री आर रंगय्या एवं राजभाषा अधिकारी.

प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता की सहायक प्रोफेसर, सुश्री मुन्नी गुप्ता की अध्यक्षता में दि. 15.02.2018 को **क्षे. का., कोलकाता** द्वारा महिला विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया.

क्षे. का., मेहसाणा में दि. 19.02.2018 को महिला स्टाफ सदस्यों के लिए 'महिला सशक्तिकरण' पर एक विशेष हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया.

क्षे.का., सिलीगुड़ी द्वारा दि. 17.02.2018 को महिला स्टाफ सदस्यों हेतु विशेष एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया. इस कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में सुश्री मंतू घोष (अंतर्राष्ट्रीय स्तर की टेबल टेनिस खिलाड़ी, दो बार राष्ट्रीय विजेता रह चुकी एवं अर्जुन अवार्डी) ने सहभागिता की.

दि. 17.02.2018 को **क्षे. का., जयपुर** द्वारा 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' के उपलक्ष्य में महिला स्टाफ सदस्यों हेतु विशेष हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया. इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में जयपुर की समाज सेविका, श्रीमती शशि लता पुरी एवं क्षेत्र प्रमुख श्री आशीष पाण्डेय ने सहभागिता की.

क्षे.का., लुधियाना में दि. 06.02.2018 को महिला विशेष हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया. कार्यशाला का उद्घाटन श्री प्रकाश चंद्र पति, उप क्षेत्र प्रमुख ने किया एवं समापन श्री जे. एन. शेठ, क्षेत्र प्रमुख द्वारा किया गया. इस कार्यशाला में अतिथि वक्ता के रूप में श्रीमती किरण साहनी, सहायक निदेशक, मुख्य आयकर भवन उपस्थित थीं.

दि 09.02.2018 को क्षे. का. नासिक में विशेष हिन्दी कार्यशाला (महिला सशक्तिकरण) का आयोजन किया गया. जिसमे अतिथि वक्ता के रूप में श्रीमती जयश्री साठे (सेवानिवृत्त राजभाषा अधिकारी, करेंसी नोट प्रेस, नासिक) ने सहभागिता की.

क्षे.का., मुंबई (द.) की ओर से 15.02.2018 को महिला विशेष हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया. इस अवसर पर प्रतिभागियों के साथ क्षेत्र प्रमुख, श्री एच.सी. मित्तल, के साथ संकाय एवं महिला प्रतिभागी गण.

विश्व की महत्वपूर्ण महिलाएं

अनिता मीना
क्षे.का., महेसाणा

भारतीय संस्कृति में नारी के सम्मान को बहुत महत्व दिया गया है. नारी का सारा जीवन पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने में ही बीत जाता है. पहले पिता की छत्रछाया में उसका बचपन बीतता है. पिता के घर का कामकाज करना होता है तथा साथ ही अपनी पढ़ाई भी जारी रखनी होती है. अगर आजकल की लड़कियों पर नज़र डालें तो हम पाते हैं कि ये लड़कियां बहुत बड़ी बड़ी बाजी मार रही हैं. इन्हें हर क्षेत्र में आगे बढ़ते हुए देखा जा सकता है. विभिन्न परीक्षाओं की मेरिट लिस्ट में लड़कियां तेजी से आगे बढ़ रही हैं. किसी समय इन्हें कमजोर समझा जाता था, किन्तु इन्होंने अपनी मेहनत और मेधा शक्ति के बल पर हर क्षेत्र में प्रवीणता अर्जित कर ली है. इनकी इस प्रतिभा का सम्मान किया जाता है.

आज ऐसे ही कुछ विश्व की प्रभावशाली महिलाओं का उदाहरण आपके सामने है :-

*** झूलन गोस्वामी (भारत):-** झूलन गोस्वामी का जन्म 25 नवम्बर 1983 में चकदा (प.बंगाल) में हुआ. झूलन गोस्वामी सितम्बर 2007 में अचानक सुर्ख़ियों में आईं, जब उन्हें विश्व की सबसे तेज गेंदबाज होने के नाते आई.सी.सी. 'महिला क्रिकेटर ऑफ द ईयर' चुना गया. दक्षिणी अफ्रीका के जोहान्सबर्ग में हुए आई.सी.सी. पुरस्कारों में जब झूलन गोस्वामी का नाम पुकारा गया तो सभी आश्चर्यचकित रह गए. वह उस स्थान को प्राप्त कर सकी, जहां अब तक भारतीय पुरुष क्रिकेटर भी नहीं पहुँच पाए. 2007 में किसी भारतीय क्रिकेटर को आई.सी.सी. का व्यक्तिगत अवार्ड नहीं मिला है. झूलन की गेंदबाजी की गति 120 किमी. प्रति घंटा है, जो विश्व महिला क्रिकेट में सर्वाधिक है. झूलन को मुंबई के कैस्ट्राल अवार्डस् में (2006) 'स्पेशल अवार्ड' दिया गया.

*** सुजैन केफेल (आस्ट्रेलिया):-** आस्ट्रेलिया के उच्च न्यायालय की प्रथम महिला मुख्य न्यायाधीश के रूप में सुजैन केफेल ने केनबरा में शपथ ली. सुजैन ने रॉबर्ट फ्रेंच का स्थान लिया है. आस्ट्रेलिया के 113 वर्ष पुराने इतिहास में सुजैन पहली महिला हैं जो इस पद पर आसीन हुई हैं.

*** जसवंतीबेन जमनादास पोपट:-** भारत और कई अन्य देशो में 'लिज्जत पापड़' से धूम मचा देने वाली 70 वर्षीय जसवंती बेन पोपट को इकनॉमिक टाइम्स की ओर से महिला उद्यमी का पुरस्कार मिला. लेकिन जसवंती बेन को इस मुकाम तक पहुँचने के लिए मुहावरे के नहीं बल्कि सचमुच में काफी पापड़ बेलने पड़े. जसवंती बेन एक गरीब परिवार में जन्मी थीं और उन्होंने कोई औपचारिक शिक्षा नहीं पाई थी. भारतीय उद्योग में जसवंती बेन की सफलता की कहानी अद्भूत है. जसवंती बेन और सात अन्य महिला बेरोजगारों ने मिलकर 1959 में लगभग सौ रुपए का ऋण लेकर पापड़ बनाने का काम शुरू किया. अब उनके उद्योग में 40,000 महिलाएँ काम करती हैं और वे 200 करोड़ रुपए का वार्षिक कारोबार कर रही हैं. जसवंती बेन के उद्योग का नाम श्री महिला गृह उद्योग है और उसमें काम करने वाली अधिकतर महिलाएँ गरीब, अशिक्षित हैं जो उनके परिवारों की आमदनी बढ़ाने का भी जरिया हैं.

***एंजेला मर्केल :-** बर्लिन मूल के पिता होर्स्ट कैस्नर और पोलिश मूल की माता हर्लिन्ड की संतान के रूप में मर्केल का जन्म हुआ. बचपन में उनका नाम एंजेला डोरोथी कैज्नर रखा गया. मर्केल की माँ जर्मनी की सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी की सदस्या रह चुकी थीं. वे 2005 में जर्मन चांसलर बनीं. एंजेला मार्केल जर्मनी की पहली महिला हैं, जो वर्ष 2000 से क्रिस्टियन डेमोक्रेटिक यूनियन (जर्मनी) का नेतृत्व संभाल रही हैं. आज के वैश्विक परिदृश्य में उनकी गिनती एक प्रभावशाली राजनेता और महिला के रूप में होती है. फोर्ब्स द्वारा विश्व के सबसे प्रभावशाली लोगों की सूची में मर्केल को महिलाओं में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है. उन्होंने यूरोपीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर वित्तीय संकट के प्रबंधन में मुख्य निर्णायक भूमिका निभाई है.

***मलाला युसुफजई:-** मात्र 17 वर्ष की उम्र में नोबल पुरस्कार पाने वाली मलाला युसुफ़जई का जन्म पाकिस्तान के खैबर पख्तून्ख्वा प्रांत के स्वात जिले में स्थित मिंगोरा शहर में 12 जुलाई 1997 को हुआ. जिस उम्र में बच्चे पढ़ाई-लिखाई और खेल-कूद में व्यस्त होते हैं, उस छोटी सी उम्र में इस लड़की ने शिक्षा को अपना हथियार बनाकर दुनिया के सबसे खतरनाक आतंकवादियों से लोहा लिया था. पाकिस्तान की 'न्यू नेशनल पीस प्राइस' हासिल करने वाली मलाला युसुफ़जई ने तालिबान के फरमान के बावजूद लड़कियों को शिक्षित करने का अभियान चलाया. तालिबान आतंकी इस बात से नाराज़ होकर उसे अपनी हिट लिस्ट में ले चुके थे. मात्र 14 वर्ष की आयु में अपने उदारवादी प्रयासों के कारण! 9 अक्टूबर 2012 की दोपहर को मलाला उत्तरी पाकिस्तानी जिले स्वात की स्कूल बस में चढ़ी. एक गनमैन ने उनसे उनका नाम पूछा और उनकी तरफ पिस्तौल भी दिखाई और तीन गोलियां चलाई एक गोली उनके सिर के बाईं तरफ लगी और

दूसरी उनके कंधे पर लगी. वह पूरी तरह अचेत हो चुकी थीं और उनकी हालत भी काफी खराब हो गयी थी. लेकिन जब उन्हें जल्दी से इलाज के लिए इंग्लैंड में बर्मिंगहम के क्वीन एलिज़ाबेथ अस्पताल में ले जाया गया तो उनकी हालत में थोड़ा सुधार हुआ. टाइम्स पत्रिका के 2013, 2014 और 2015 के संस्करणों में युसुफ़जई को दुनिया के 100 सबसे प्रभावशाली लोगों की सूची में भी शामिल किया गया. वह पाकिस्तान की पहली नेशनल यूथ पीस प्राइज़ प्राप्त करने वाली महिला हैं. इन्हें बहुत से पुरस्कारों से सम्मानित किया गया. जैसे:– पाकिस्तान का राष्ट्रीय युवा शांति पुरस्कार, अंतर्राष्ट्रीय बाल शांति पुरस्कार (2013), सखारोव पुरस्कार (2013), मैक्सिको का समानता पुरस्कार (2013) संयुक्त राष्ट्र का 2013 मानवाधिकार सम्मान और नोबल पुरस्कार.

*** ओपरा विनफ्रे :–** ओपरा विनफ्रे एक अमेरिकी मीडिया उद्योजक, वार्ता शो मेजबान, लिपिकार और निर्माता हैं, 20वीं सदी की 'मीडिया की रानी' के नाम से वह अमेरिका में जानी जाती हैं. इनका जन्म मिसीसिप्पी के एक गरीब गाँव में कुंवारी माँ के यहाँ हुआ था. बाद में वे मिल्वोकी में बड़ी हुईं. अपने बचपन में उन्हें कई मुसीबतों का सामना करना पड़ा, जिनमें उनके अनुसार नौ वर्ष की आयु में उनका बलात्कार किया गया था और 13 वर्ष की आयु में ही उन्हें घर से भागना पड़ा था. चौदह वर्ष की उम्र में वह गर्भवती हो गईं, उनके अनुसार उनका बेटा गर्भ में ही मर गया था. जब वह हाईस्कूल में पढ़ रही थीं तभी उन्होंने रेडियो में नौकरी भी की. 19 की आयु में वे रेडियो में शाम के कार्यक्रम की सह–एंकर बनीं. उनके भावनाओं से प्रेरित वक्तव्यों के चलते उन्हें दिन में प्रसारित होने वाले वार्ता शो का कार्यभार प्रदान किया गया. 32 वर्ष की आयु में ही वे लखपति बन गईं. उस समय उनका शो पूरे राष्ट्र में प्रसारित किया जाता था. उन्होंने मिडिया में बातचीत करने के कई मामलों में कई सारे बदलाव किये, इसीलिए उन्हें 'मीडिया क्षेत्र की रानी' भी कहा जाता है. फोर्ब्स की दुनिया में सबसे अमीर काले लोगों की सूची में 2004 से 2006 तक शामिल होने वाली वह पहली महिला भी बनीं.

*** हिलैरी क्लिंटन:–** हिलैरी डायेन रोढम का जन्म 26 अक्टूबर 1947 को इलेनोइस के शिकांगो के एजवॉटर अस्पताल में हुआ. शिकांगो के यूनाइटेड मेथोडिस्ट परिवार में वे पली बढ़ीं. राजनीतिक परिवार से जुड़े होने की वजह से राजनीति में उनकी बहुत रुचि रही है. हाई स्कूल के समय से ही उनके राजनीतिक करियर की शुरुआत हो चुकी थी. 1969 में वेल्सले कॉलेज से उन्होंने ग्रेजुएशन किया और 1973 में याले लॉ स्कूल से J.D. की उपाधि हासिल की. कांग्रेशनल लीगल काउंसिल में सेवा करने के बाद वह अर्कान्सस गईं और 1975 में बिल क्लिंटन से शादी कर ली. 1978 में लीगल सर्विस कॉर्पोरेशन में अध्यक्ष के पद पर नियुक्त की जाने वाली वह पहली महिला बनी और उसी साल रॉस लॉ फर्म की पहली महिला सहयोगी बनी. अर्कान्सस की पहली महिला होते हुए उन्होंने कई काम किये. जिसमें मुख्य रूप से अर्कान्सस पब्लिक स्कूल को पुनः स्थापित करना और बोर्ड ऑफ कॉर्पोरेशन में काम करना भी शामिल है. 1997 और 1999 में उन्होंने चिल्ड्रेन्स हेल्थ इंश्योरेंस, एडोप्शन(दत्तक) और उनकी देखभाल के लिए कई जरूरी कदम उठाए. वॉलमार्ट और TCBY के बोर्ड पर उन्होंने लॉयर का काम भी किया. 'बेस्ट स्पोकन वर्ड' के लिए 1997 में उन्हें ग्रैमी अवार्ड भी मिला था. उनकी किताब ''ईट टेक ए विलेज'' के ऑडियो वर्जन के लिए उन्हें यह अवार्ड मिला था. क्लिंटन 2009 में अमेरिका की विदेश मंत्री भी बनी थीं.

*** इंद्रा नूई :–** भारत में पैदा हुई इंद्रा कृष्णमूर्ति नूई एक वरिष्ठ बिजनेस एग्जीक्यूटिव और वर्तमान में पेप्सिको कंपनी की अध्यक्ष और मुख्य कार्यकारी अधिकारी हैं. पेप्सिको खाद्य और पेय पदार्थों के व्यवसाय में संलग्न दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी कंपनी है. प्रसिद्ध पत्रिका फोर्ब्स की 'दुनिया की प्रभावशाली महिलाओं' की सूची में उनका नाम लगातार कई सालों तक रहा. येल यूनिवर्सिटी में अध्ययन के दौरान उन्होंने 'बूज एलन हैमिलटन' में समर इंटर्नशिप भी की. सन 1980 में उन्होंने येल से अपनी प्रबंधन की पढ़ाई पूरी की. जिसके पश्चात नूई ने अमेरिका में कार्य करने का फैसला किया और बोस्टन कंसल्टेशन ग्रुप ज्वाइन किया और 'मोटोरोला' और 'एसिया ब्राउन बोवेरी' जैसी कम्पनियों में महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया. इंद्रा नूई 1994 में पेप्सिको में शामिल हुईं और सन 2001 में कंपनी की अध्यक्ष और मुख्य वित्त अधिकारी बनाई गयीं. वे पेप्सिको की दीर्घकालीन विकास रणनीति की शिल्पकार मानी जाती हैं. सन 2007 में भारत सरकार ने उन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया. सन 2006 में इंद्रा नूई पेप्सिको की मुख्य कार्यकारी अधिकारी बनी. इस प्रकार वे पेप्सी के इतिहास में पाँचवी मुख्य कार्यकारी अधिकारी हैं.

✦✦✦

क्या नारी ही नारी की शत्रु है?

राधा मिश्र
क्षे. का., बड़ौदा

''एक अकेली लड़की खुली तिजोरी के समान होती है'', ''औरत का श्रृंगार उसकी लज्जा है'', ''एक स्त्री अपना प्रतिशोध लेना कभी नहीं भूलती'', ''नारी ही नारी की शत्रु है''...इत्यादि...इत्यादि. ये तो कुछ उदाहरण मात्र हैं. इनके अलावा भी, औरतों को लेकर बहुत प्रकार के जुमले और कहावतें भारत जैसे विकासशील देश के समाज में निरंतर गति से विकास कर रही हैं. भले ही, इस विकास के मार्ग में स्त्रियों का हाथ हो या न हो, केंद्र में तो स्त्रियाँ हैं और रहेंगी ही. निश्चित रूप से इन उक्तियों की खोज किसी औरत द्वारा तो नहीं की गयी होगी और न ही इनके प्रचलन में उन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया होगा. अब उन सभी सूक्तियों का विश्लेषण एक बार यदि किया जाए तो बहुत सारे प्रश्न मुंह बाए हमारे दाएँ-बाएँ खड़े दिखाई पड़ेंगे. यथा, यदि 'एक अकेली लड़की खुली हुई तिजोरी की तरह होती है' तो किनकी नज़रों में? निश्चित रूप से किसी महिला/औरत/स्त्री या नारी के लिए तो नहीं; यदि स्त्री का श्रृंगार केवल उसकी लज्जा ही है तो ये 16 श्रृंगार वाली अवधारणा नहीं रहती और न ही 'फेयर एंड लवली' जैसी कंपनियाँ दिन-दोगुनी, रात-चौगुनी पैर पसार रही होती. स्त्रियाँ अपना प्रतिशोध लेना नहीं भूलती तो फिर प्रथम और द्वितीय विश्वयुद्धों में केवल स्त्रियों का ही हाथ रहा होगा और सबसे महत्वपूर्ण ''नारी ही नारी की शत्रु है'' यदि ऐसा है तो औरतों से जुड़े सभी अपराध केवल औरतों द्वारा ही किए जाते, चाहे वह स्त्री-हत्या हो, बलात्कार हो, दहेज उत्पीड़न हो या वेश्यावृति में औरतों को जबरदस्ती धकेलना हो...इन सभी में जड़ से लेकर फल-फूल, डाली-पत्ते सभी में नारियों का ही हाथ होता, पर अफसोस आज के अखबारों में, न्यूज चैनलों पर दिखाए जाने वाले समाचारों में एक पुरुष द्वारा स्त्री के बलात्कार की घटना तो सुनने को मिलती है परंतु किसी औरत के द्वारा औरत के बलात्कार की घटना सुनने का अवसर शायद ही किसी को मिला हो.

'औरत' केवल एक शब्द मात्र है जैसे कि 'पुरुष'. इसे भावनाओं की चाश्नी और संस्कारों के गंगाजल से डूबाकर यदि हम देखना बंद करें तो यह 'औरत' व्यक्ति अथवा मनुष्य कहे जाने वाले" प्राणी रूपी सिक्के का ही एक पहलू है. लेकिन, हमारी मानसिकता ऐसी है कि यदि हम जब भी कभी 'मनुष्य' या 'व्यक्ति' शब्द कहते हैं तो लोगों के मानस-पटल पर अनायास रूप से पुरुष की ही छवि उभरती है, किसी औरत की नहीं. तो क्या औरत व्यक्ति नहीं है? निश्चित रूप से, वह व्यक्ति है. हाँ, यदि अपने अस्तित्व पर कोई स्त्री विचार नहीं करती तो वह स्त्रियों की शत्रु है. यदि वह समाज के बने-बनाए नजरिए से निकल कर खुद का नजरिया नहीं बनाती तो वह स्त्री स्वयं की शत्रु है, यदि वह धर्म तथा अंधविश्वास, परंपरा तथा रूढ़ियों और संस्कार तथा मानसिक गुलामी के बीच के अंतर को नहीं समझती तो वह स्त्री खुद की शत्रु है. यदि कोई औरत अपने पैरों में पड़े पायल या बेड़ियों के बीच भेद नहीं कर पाती तो वह स्त्री अपनी ही शत्रु है.

यह सत्य है कि, अपने वजूद को साबित करने के लिए हमें भीड़ से अलग हटना होता है, लेकिन एक सामाजिक प्राणी होने और समाज का एक बड़ा भाग होने के नाते हमें भीड़ में भी शामिल होना होता है. समाज एवं धर्म के नियम-कायदे जहां महिलाओं पर लागू होते हैं वहीं समान रूप से समाज के दूसरे महत्वपूर्ण हिस्से अर्थात पुरुषों के लिए भी लागू होने चाहिए...लेकिन अगर देखा जाए तो ये नियम-कायदे पुरुषों के लिए जहां 'चॉइस' होते हैं वहीं महिलाओं के लिए 'मानसिक कम्पल्शन' और इसके अनुपालन को कड़ाई के साथ सुनिश्चित करने/कराने का दायित्व भी महिलाओं पर ही होता है. जब कभी कोई औरत उसे 'चॉइस' मानकर खत्म करने की जिद पर आती

है तो उसे सामाजिक भीड़ से अलग खड़ा कर दिया जाता है और जब कभी इस मानसिक गुलामी को झेल रही महिला द्वारा उसी 'मानसिक कम्पल्शन' के अनुपालन के लिए अपनी किसी पीढ़ी या आस-पड़ोस की सजातीय पर दावा किया जाता है तो वही सूक्ति दोहराई जाती है – "नारी ही नारी की शत्रु हैं." जाहिर है कि हमारे पैरों की बेड़ियों को वह समाज कभी नहीं काट सकता जो या तो बेड़ियों को बनाता हो या खुद बेड़ियों से बंधा हो.

अब हमारे समाज में थोड़ा फेर-बदल किया जाए और इस भारतीय समाज को उल्टे नजरिए से देखा जाए. यदि एक बेटी को उसके पिता की संपत्ति/साम्राज्य पर एकाधिकार मिले. एक नौकरीपेशा लड़की भी दहेज की सुपात्र हो. एक पुत्री अपने आत्मीय स्वजनों के अर्थी को कंधा देने और मुखाग्नि देने के लिए निर्विवाद रूप से उत्तराधिकारी हो या समाज को यह बात पच जाए कि एक स्त्री के उसके इच्छानुसार दो या दो से अधिक विवाह हो सकते हैं, 'यौन-शुचिता' और 'बलात्कार' जैसे शब्द/परिकल्पना संसार के किसी भी शब्दकोश में ही न हो तो कोई भी नारी भ्रूणहत्या, दहेज-उत्पीड़न अथवा बलात्कार या उसके बाद के सामाजिक बहिष्कार का शिकार नहीं हो सकती. औरतों पर होने वाला अत्याचार कितना प्रतिशत कम हो जाएगा इसका अंदाजा नहीं लगाया जा सकता है.

इन सभी फैले हुये 'रायतों' के बीच कहीं-न-कहीं धर्म का बहुत बड़ा हाथ है. उदाहरण के तौर पर, हिजाब या पर्दा-प्रथा को लिया जाए. तो एक दिन किसी न्यूज़ चैनल पर मैंने औरतों को हिजाब का कट्टर समर्थन करते हुये देखा. शायद इन्हीं महिलाओं को महिलाओं का शत्रु कहा जाता रहा है किन्तु इसके गहराई में क्या वाकई महिलाओं का ही हाथ है? वो पर्दा किसके कहने पर और किससे कर रही हैं? तो जवाब शायद यह हो सकता है कि धर्म और संस्कृति के कहने पर. पर फिर वही प्रश्न है कि धर्म की स्थापना और तथाकथित से नीति नियम किसके द्वारा ईज़ाद किए गए हैं? निश्चित रूप से किसी स्त्री द्वारा तो नहीं किए गए. सारे धर्म चाहे वह हिन्दू हो, सिक्ख हो, ईसाई हो, मुस्लिम या फिर बौद्ध सभी धर्म पुरुषों द्वारा बनाए गए और उसके नियम महिलाओं के लिए. प्राचीन काल में जहां महिलाओं ने खेती का आविष्कार किया वही पुरुषों ने शिकार का. यह अलग बात है कि वह शिकार प्रत्यक्ष हो या परोक्ष आज भी यह स्थिति बनी हुई है. धर्म की उत्पत्ति शायद लोगों को एक धरातल, विश्वास या संस्कार से जोड़ने के लिए की गयी होगी किन्तु जब धर्म हमारी सोच और आज़ादी पर अंकुश लगाने का कार्य करने लगे तो वह धर्म नहीं रह जाता, रूढ़ि और अंधविश्वास बन जाता है. और यह तथ्य निर्विवाद है कि धर्मग्रंथ लिखने और उन्हें मंदिरों मस्जिदों गिरिजाघरों में बाँचने की फुर्सत जहां पुरुषों द्वारा ही दिखाई जाती है वही ग्रंथ के नियमों के पालन की जहमत स्त्रियों द्वारा ही उठाई जाती हैं. ये रूढ़ियाँ जब तक जिंदा हैं हम पिछड़े सोच का समर्थन करते रहेंगे. स्त्री विमर्श और महिला सशक्तिकरण, वैश्वीकरण, आधुनिकता जैसे सशक्त शब्दों का काफी बोलबाला आज के परिदृश्य में हैं किन्तु बहुत कम लोग ही अपने व्यक्तित्व के साथ इसका तादात्म्य स्थापित कर पाते हैं. मैंने एक चीज बहुत ही साधारण पायी है कि जब भी स्त्री विमर्श पर भाषणबाज़ी के लिए विद्वानों को आमंत्रित किया जाता है तो जहां महिलाएं लक्ष्मीबाई और दुर्गावती का दामन छोड़ नहीं पाती वहीं पुरुष 'नारी तुम केवल श्रद्धा हो' से मोह का त्याग नहीं कर पाते हैं.

अब एक औरत की दृष्टि से देखा जाए, तो मैंने भी कई नारी प्रजाति के व्यक्तियों की ईर्ष्या, अपमान, हीन भावना, हिंसा, और कुटिलता का सामना किया है...शायद कुछ महिलाओं को मेरे द्वारा भी उन सभी भावों का तदनुसार यथोचित प्रतिउत्तर भी प्राप्त हुआ होगा या कभी-कभार मूल सम्प्रेषण भी प्रेषित किया गया होगा. किन्तु इन सभी के साथ ही उपरोक्त भाव मुझे पुरुषों से भी समान रूप से या कहें कुछ अतिरिक्त कुभाव के साथ भी झेलने को मिले हैं. तो क्या ये कहना उचित नहीं होगा कि नारी ही नारी की शत्रु है, जितना कि पुरुष नारी का शत्रु है. बहुतेरे महिला मित्रों ने मेरे रूप-रंग का मज़ाक उड़ाया है तो पुरुष मित्रों ने भी उस पर चुटकियाँ ली हैं. ईर्ष्या जहां कहीं भी किसी लड़की ने मुझसे की है तो कभी-कभी लड़कों में भी अपने प्रति ईर्ष्या भाव को मैंने देखा है. ये सभी व्यक्ति विशेष के मन के विकार हैं न कि जाति विशेष के. अतः सभी विकारों को केवल महिलाओं पर बेकार थोपना सही नहीं लगता.

समाज में एक औरत जब भी उठती है तो उसे कई तरह की बन्दिशों और बेड़ियों को तोड़कर ऊपर उठना होता है. अधिकांश औरतें तो इसलिए भी नहीं उठ पाती हैं कि ये अदृश्य, अबोध-सी बन्दिशों और बेड़ियों के बोझ उन्हें खड़ा ही नहीं होने देते या उनके सोचने-समझने की शक्ति को ही पनपने नहीं देते. यदि नारी ही नारी की शत्रु होती, तो लड़कियां पैदा ही नहीं होती और न ही यह वाक्य चलाने वाला तथाकथित समाज रह पाता. मैं यह भी नहीं मानती कि पुरुष ही नारी का शत्रु है क्योंकि यदि पुरुष न हो तो नारी स्वतन्त्रता का अर्थ नहीं समझ सकती. इतिहास गवाह है कि रज़िया को भले ही उसकी माँ ने पैदा किया हो लेकिन उसे रज़िया सुल्तान बनाने वाला, उसमें सुल्तान के गुण को स्थापित करने वाला और कोई नहीं बल्कि उसका पिता इल्तुतमिश था, जिसने अपने बेटे के होते हुये भी बेटी को उसकी योग्यता के आधार पर सुल्तान बनाया और वही इतिहास गवाह है कि उस रज़िया का विरोध और हत्या किसी स्त्री ने नहीं की थी. यह उदाहरण केवल इसीलिए है कि स्त्री का शत्रु केवल कोई जाति विशेष नहीं है यह एक विकृत मानसिकता से घिरे कुछ लोग होते हैं...वो लोग स्त्री या पुरुष कोई भी हो सकते हैं. रानी लक्ष्मीबाई को एक जीवन देने वाली झलकारीबाई थी. जिसने अंग्रेजों की आँखों में धूल झोंकते हुये दुर्ग पर मोर्चा संभाला और रानी को दुर्ग से भगाने में मदद की और उनके वेश में खुद ही अंग्रेजों से लड़ी और अपनी जान दे दी. इस प्रकार, उनके इस जीवनदान ने रानी के उस ऐतिहासिक युद्ध को मार्ग प्रदान किया जिसका गुणगान आज भी सुभद्राकुमारी चौहान द्वारा रचित कविताओं में सुनने/ पढ़ने को मिलता है.

"नारी, नारी की शत्रु हो सकती है" यह उक्ति अगर चले तो मान्य हो सकती है लेकिन "नारी ही नारी की शत्रु है" की यह सूक्ति सुपाच्य नहीं लगती. इस समग्र सूक्ति के केवल एक शब्द से मुझे परहेज है वह है "ही", जो कि सर्वथा गलत है. और यह "ही" शब्द ही इसे प्रमाणित करता है कि इस वाक्य की खोज निश्चित रूप से किसी स्त्री ने नहीं की होगी और आँख मूँद कर इस सूक्ति को दोहरने वाली भी केवल औरतें तो नहीं होंगी. नारी भी नारी की शत्रु हो सकती है पर "नारी ही नारी की शत्रु है" यह मुझे अमान्य/ अस्वीकार्य है.

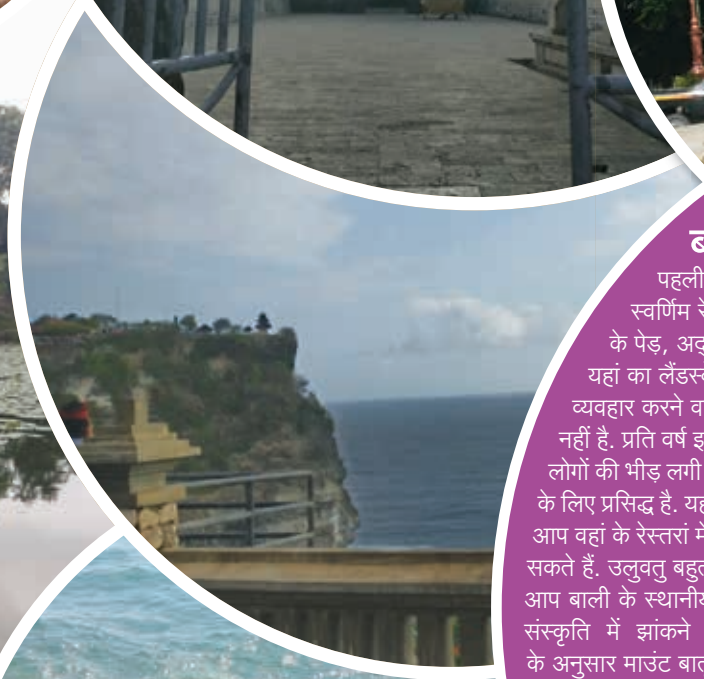

पर्यटकों क
बाल

बाली हमेशा से पर्यटकों के स्वर्ग के रूप
पहली नज़र में देखने पर इंडोनेशिया का ये
स्वर्णिम रेत की ओर लुढ़कता गहरा नीला सागर
के पेड़, अद्भुत दृश्य बनाते हैं. पर्यटकों के बीच यह
यहां का लैंडस्केप बहुत शानदार है. यहां के समुद्र तट
व्यवहार करने वाले हैं. इस देश के बारे में सबसे बड़ी बा
नहीं है. प्रति वर्ष इसके समुद्र तटों पर कलाकारों, नर्तकों,
लोगों की भीड़ लगी रहती है. बाली में उबुद नामक स्थान प्रा
के लिए प्रसिद्ध है. यहां तनाह लोट में एक मंदिर के सामने का
आप वहां के रेस्तरां में भी भोजन का लुत्फ लेने के साथ-साथ
सकते हैं. उलुवतु बहुत शानदार स्थल है. यहां के समुद्र तट,
आप बाली के स्थानीय केसैक नृत्य का शाम के समय आनंद
संस्कृति में झांकने का मौका मिलेगा बल्कि
के अनुसार माउंट बातूर ज्वालामुखी पवित्र पर्वतों
सबसे बेहतरीन कलाओं में से एक है. उबद में
जाना जाता है. तनाह लॉट मंदिर बाली का एक
अवस्थथीती और सूर्यास्त के शानदार दृश्यों
प्रकार के समुद्री तट हैं, उनमें से बहुत से बड़े
हुआ है जो पूरी तरह से सफ़ेद और काले
पर्यटकों के लिए एक पूरा पैकेज है.

आभा जै
क्षे.का., मुबई

स्वर्ग–
ी

में जाना जाता रहा है. आसमान से
द्वीप नयनाभिराम दृश्य प्रस्तुत करता है.
और किनारों पर दूर–दूर तक लगे नारियल
देश 1980 के दशक से ही लोकप्रिय रहा है.
पिक्चर परफैक्ट हैं. स्थानीय लोग बहुत मित्रवत
त यह है कि यहां का भ्रमण करना अधिक खर्चीला
संगीतकारों तथा पूजा स्थलों पर श्रद्धावनत होने वाले
चीन शैली के बारोंग नृत्य तथा स्थानीय क्राफ्ट बाजारों
दृश्य बहुत ही शानदार है. तनाह लोट से मी गोरेंग जाकर
थ ही दूर–दूर तक फैले धान के खेतों का नजारा भी देख
मंदिरों की चोटियों का दृश्य बहुत ही शानदार है. यहां पर
ले सकते हैं जिससे आपको न सिर्फ यहां की स्थानीय
आपका मनोरंजन भी होगा. हिन्दू मान्यताओं
में से एक है. केकेक अग्नि नृत्य बाली की
तेगल्लाग अपने सुंदर धान के खेतों के लिए
अत्यंत महत्वपूर्ण केंद्र है, जो समुद्रमुखी
के लिए जाना जाता है. बाली में बहुत
चट्टानों का निर्माण कोरल और लावा से
बालू से ढके हुए हैं. कुल मिलाकर बाली

न
(प.)

REVENGE OF A WOMAN

Tajvinder Kaur
DIT, CO Mumbai

Behind every successful man is a woman is a common saying. But this not only in case of a man, this saying stands for the functioning of whole world. She is said to be ultimate strength and support behind success of an individual. She is soft, caring and connected to her nears and dears. She is a good manager and manages her family, binding everyone in one thread i.e. she is a reason for everyone to be together. She is also ready to help others in the surrounding. Like every other human being she needs peace of mind. She takes all pains and gives comfort to her surrounding but when question is about her nears and dears or her own respect, she might turn Vengeful.

Before talking about the revenge of woman it is important to understand revenge & factor that lead to it.

Historically, there are two schools of thought on revenge. The Bible, in Exodus 21:23, instructs us to "give life for life, eye for eye, tooth for tooth, hand for hand, foot for foot" to punish an offender. But more than 2,000 years later, Martin Luther King Jr., responded, "The old law of 'an eye for an eye' leaves everybody blind." Question is "why everybody?"

Who's right? As psychologists explore the mental machinery behind revenge, it turns out both can be, depending on who and where you are. If you're a power-seeker, revenge can serve to remind others you're not to be trifled with. If you live in a society where the rule of law is weak, revenge provides a way to keep order.

Revenge is payback; a way of settling the score. It can be something trivial and fleeting or it can consume you and last many years. Of all revenge, the affairs of the heart appear to cause the greatest need for revenge. That being the case, that is what I'm focusing on here even though a work related revenge is what made me want to write this.

There are several sayings on revenge:

- Don't get mad, get even.
- One good act of vengeance deserves another.
- Revenge is a dish best served cold.
- Forgive your enemies, but first get even.
- Women do most delight in revenge.

But revenge comes at a price. Instead of helping you move on with your life, it can leave you dwelling on the situation and remaining unhappy. Considering revenge is a very human response to feeling slighted, humans are atrocious at predicting its effects.

Still people keep doing it anyway. They keep hoping that this time it will finally pay off, and they will be vindicated. That almost never happens.

Women have been routinely victims of physical and psychological abuse, mistreatment and discrimination. Prey of sexism and its violent by-products, the big screen representatives of the female gender have faced multifarious threats and humiliation often without been given the chance to defend themselves. But there are exceptions to every rule and the women on this list just had enough repression and oppression on their plates.

Being surrounded by people who turn a blind eye to their plight, being repeatedly tortured and scorned, they decide to take the law into their own hands. When justice doesn't seem to respond to their desperate calls and men turn their lives into a never ending nightmare they have to crush this vicious circle and break free. No longer damsels in distress, they realise that there is only one solution to their problems: revenge.

Common cases when woman thinks of revenge are

- If someone hurt their loved ones.
- If someone plays with her emotions.
- If someone whom they trust break the trust.
- If she loose someone near due to some act of others.

- If she or her near ones are insulted.
- If she is cheated or injustice happens.
- In case of physical assault which is a very common cause of revenge. It would not be wrong if I say 80% cases of revenge are driven by this factor.

The justification when revenge is taken is generally spelt as:

- "You did it to me. It is only fair that I do it back to you!"
- "I am doing this to teach you a lesson!"
- "You need to be punished for what you did, and It is my responsibility to make sure you learn a lesson."
- "I cannot let you get away with this."
- "You have hurt and I have to stop you from hurting others"
- "You need to realize the pain given"
- Rejection, jealousy and envy is also a reason for revenge.

Whatever be the reason, it is pain and emotional assault which leads to this kind of feeling. Females generally tend to take revenge with intend to correct the wrong. Since, they are known to have strength, forgiveness and patience, they go revengeful only when hurt /loss is to extreme.

Females by nature are very sincere and determined. Therefore, when she thinks of revenge, the same attributes work. She will go to any extreme to accomplish the task She has thought off. Therefore, when pain exceeds and they think of taking revenge, they do anything to punish a wrong doer, which has long lasting impact. Generally, time is the best healer of any pain, but if is of serious nature then females does not react impulsive instead they plan and then execute.

Some example of revenge are:

1. Draupadi is an excellent example of revenge. Her revenge led to mahabharat and brought an end to the rule of wrong and start of new rule of righteous people. Also, Bhagwat Geeta came into existence which is the guiding book for the mankind. This all could happen only due to determination, management and revenge for honor of a female.

2. This literally traumatizing event, added to her grief for her parents' unfair suicide, pushes her towards the edge and the heroine goes under a disciplined self-training process to prepare herself for vengeance. Clutching a shotgun, her impaired vision doesn't seem to be an obstacle between herself and her targets.

3. Another example when teacher's beloved daughter is murdered by two of her students. The teacher comes up with a really masterful and ingenious revenge plan in order to avenge the death of her only child. The structure is only as labyrinthine as her outraged mind and fits perfectly the intricate nature of the vengeance that she is willing to serve. The teacher stands before her students and announces that she contaminated their milk drinks with HIV virus spreading chaos and paranoia around her. The murder weapon is nothing less than her ability to create discord in the minds of the young criminals that stay unpunished by the law because they are still minors.

Just a thought came to my mind that reason for such vengeful feeling could be attributed to our society structure too. Our society being a male dominating society, woman since childhood are taught to suppress their anger and are kept in highly protected atmosphere. They are not taught to deal/ defend the wrong. They are emotionally connected to everything their family, friends, nears and dears and they are far from the real world. Woman being a home maker, tend to forgive others for all the pains just to avoid a fight as they are afraid of such situations. While avoiding such situations and accepting all that others expect, there is a need of recognition, acceptance and understanding which generally remains unaddressed as we generally feel "she will understand" whether that be mom, sister, wife or daughter. Therefore, she is generally taken for granted. The cumulative effect, when something wrong happens, come as volcano which when erupts causes disaster.

Armed with all kinds of weapons; from katanas and axes to acupuncture needles and poison, these ladies know exactly what they are doing. They grab the bull by the horns, face violence with violence and get vengeful. Still women are not helpless anymore, they prove that a world of pain awaits those who try to mess with them.

The feeling is real regardless of whether the event is a tangible or perceived. These strong emotions rise up and overwhelm the civilized part of our nature all the same. The issue is that these painful feelings of hurt must be relieved. If we do not know how to relieve it in a mature, civilized way, we regress and act just as we did in childhood. We have a temper tantrum. But when adults throw tantrums it becomes scary with violent consequences.

The antidote to reacting out of mindless, immature attitudes for revenge is to be found in our self-respect. Our self-respect has taken a beating here. We can't respect anyone so "stupid" as to let this disaster happen, who failed to see it coming, who failed to take appropriate remedial action, who didn't even know what that might have been and it's too late now. Our anger at ourselves is turning into poison in our veins.

Our first priority is not to right the wrongs, it is to get our own act together. This is hard to do if we don't know how we fell apart in the first place. It was the combination of anger, stress and pessimism in a context of self-doubt, worthlessness, and inferiority that did us in.

Each of these components of our problem needs to be identified properly and put in a manageable perspective. This is hard to do with professional support. Its near impossible to do alone using trial and error. It is no different then being lost without a road map.

All should remember that "Revenge is like grabbing a hot coal to throw it at someone else, you are the one that gets burned first." We all should remember not to hurt anyone to the extent that the pains become unbearable and they become vengeful. For victims, I would only say "The Best revenge is to be unlike him/her who performed the injury"

"If you spend your time hoping someone will suffer the consequences for what they did to your heart, then you're allowing them to hurt you a second time in your mind", thus the best way is to leave them and totally cut off, as they are not worth being thought of.

✦✦✦

GIRL CHILD - GIRL ABUSING & BIRTH OF A GIRL

Dimple Kaur
RO Agra

In ancient India the birth of a girl child was hailed as auspicious. An old Indian proverb lies down that a home without a daughter is like a body without a soul. The coming of the daughter in the house was compared with the advent of Lakshmi, the goddess of wealth and Saraswati, the goddess of fine arts. The usual blessing of a father at the time of his daughter's marriage was "May you excel in learning and public speaking". No ceremony was considered complete without presence of women. The belief was that "No home is complete without a women." Women are the receiving end in Indian society.

Pandit Jawahar Lal Nehru had opined that "Women empowered means mother India empowered" and to have empowered women in future we need to empower our girl child of today. Presently champions of women excellence in India are numerous – from a women President Pratibha Patil, to the heroic deeds of Kiran Bedi, the first women IPS officer of India, there should be no doubt that our women excel the world. Our country is zooming ahead in all fields that count at break neck speed. The boom in economy, innovative technologies and improved infrastructure are testament to that. Women have provided considerable contribution to this progress, with them taking up every possible job. From preparing the morning breakfast to each and every household chores, they have made their presence felt in every sphere of life. Yet in every strata of the Indian society, there still remains a cloud of appreh-ension and insecurity when a girl child is born.

Discrim-ination against a girl begins at her conception and shapes up to be the monster she has to fight every moment of her waking existence. Her second rate citizenship is reflected in the denial of fundamental rights and needs and in such harmful attitudes and practices as a preference for son, female genital mutilation, sexual exploitation, domestic abuse, discrimination, early marriage and less access to education. Deep-rooted patriarchal perceptions project women as liabilities. There lurks in the Indian conscience, a foul monster of hypocrisy, when the Kali-Durga-Lakshmi worshippers take no time in putting women down or dismissing them as mere afterthought. Traditions and rituals outline the existence of the Indian girl child. Amidst uproars of gender equality and enforcement of laws protecting their well being, female infants are being found dumped in trash, by the dozens. Unborn foetuses continued to be sniffed in the womb and terminated without second consideration if their existence is even hinted at. "The girl child is discriminated against boys from the earliest stage of life through her childhood and into adulthood. In this connection, some vital statistics cited by the United Nations may also be added:

1. By age 18, girls have received an average of 4.4 years less education than boys.
2. Of the more than 110 million children are not in school, approximately 60% are girls.
3. Of the more than 130 million primary school age children world-wide who are not enrolled in school, nearly 60% are girls.
4. Pregnancies and childbirth related health problems take the lives of nearly 1.46 lakhs teenage girls each year.
5. At least one in three girls and women world-wide has been beaten or sexually abused in her lifetime.

The realities of women especially in rural areas are difficult to comprehend. Women there are even deprived of some of the fundamental human rights and this denial is justified often in the name of tradition. Women are generally meant for household work.

Indian society is still male dominated and women are often looked down upon. The birth of a female child is often regarded as a disaster, and female foeticide is very common practice in India. When a male child is born everyone rejoices but when a female child is born many seems dejected and crest-fallen, as if a tragedy has occurred. Family, workplace, community and

anywhere, the act of violence in form of aggression, exploitation and discrimination is clearly evident and experienced by female and girl children. Also the act of violence directed at the females consists of eve teasing or intimidation of females in public places, sexual harassment on the jobs, rapes & acid throwing etc. Absence or insufficiency of dowry became a source of the bride's maltreatment, victimization and even 'accidental death.' The latter amounts to clandestine murder, often make to look like suicide. Besides this, the trafficking of girls has been on rise lately. A large number of young girls are being pushed into flesh trade trafficked from countries like Nepal and Bangladesh. Innocent and poor girls, on false lures and promises of jobs, marriages or confession of undying love by men, are being sold or deserted or forced into prostitution. Indian courts are flooded with cases of crime against women. In fact such act seems to have grown by leaps and bounds.

If survival of girl child is necessary for the existence of the world, their education is equally important for her development. "Investing in women is smart economics. Investing in girls catching them upstream is even smarter economics." Educating girls yields a higher return in improving the local economy rather than any other type of investment. Education is the greatest weapon in knowing their rights and how to protect and promote them. All forms of discrimination against the girl child and violation of her rights must be eliminated by undertaking strong measures both preventive and punitive within and outside the family. Removal of discrimination in the treatment of the girl child must be actively fostered. There should be special emphasis on the needs of the girl child and earmarking of substantial investment in the areas relating to food and nutrition, health and education, and in vocational education. Added to this, self defense trainings such as Karate must be introduced and made compulsory to make them self reliant and cope with unforeseen circumstances. If the society has to grow into a civilized social fabric, the enlightened mass has a responsibility to shoulder but also mobilizing the women and organizing the society for equality in all spheres of social and national activities where any discrimination of gender basis is entrenched.

India is a famous country proving the common proverb like 'Unity in diversity' where people of many religious beliefs from the Indian society. Women have been given a special place in every religion which is working as a big curtain covering the eyes of people and help in the continuation of many ill practices (including physical and mental) against women as a norm since ages. In the ancient Indian society, there was a custom of Sati Pratha, Nagar Vadhu system, Dowry system etc. All such types of ill practices exists because of male superiority complex and patriarchal system of the society. Socio Political rights (right to work, right to education, right to decide for themselves etc.) for the women were completely restricted by the male members of family. Some of the ill practices against women have been eliminated by the open minded and great Indian people who raise their voices for the discriminatory practices against women. Through the continuous efforts of the Raja Ram Mohan Roy, Britishers were forced to eliminate the ill practices of sati pratha. Later, the social reformers of India (Ishwar Chandra Vidhyasagar, Acharya Vinoba Bhave & Swami Vivekanand etc.) also had raised their voices and worked hard for the upliftment of women in Indian society. In India, the Widow Remarriage Act, 1856 was initiated efforts of Ishwar Chandra Vidhya Sagar in order to improve the condition of widows in the country.

In order to provide safety to women and reduce crime against women in India, government has passed various act. Recently government has passed another act Juvenile Justice (Care and protection of children) bill 2015 (especially after Nirbhaya case when an accused Juvenile was released). This act was replaced earlier Indian juvenile delinquency law of 2000 (Juvenile justice care and protection of children Act, 2000) in order to reduce the juvenile age from 18 to 16 years in case of heinous offenses. Some of the most recent initiative regarding this is Beti Padhao Beti Bachao which is very actively supported by the government, NGOs, Corporate groups and human right activists. Various social organizations have helped the campaign by building toilet at girl schools. Crime against girl child and human are big obstruction in the way of India's growth and development. Following are some initiatives launched by Central or State government regarding the upliftment of girl child:

1. In order to protect the girl child, Laadli scheme was launched and implemented by the Delhi and Haryana government in 2008. The aim of this scheme was to control female foeticide as well as improving the status of girl child through education and equal gender rights.

2. Sabla scheme was launched by the Ministry of Women and Child development in 2011 aiming to empower adolescent girls through education.

3. Dhanlakshmi scheme was launched in 2008 by the Ministry of Women and Child Development aiming to improve cash transfer to the family of girl child after birth, registration and immunization.

4. Kishori Shakti Yojna was launched by the Ministry of Women and Child Development aiming to improve nutritional and health condition of adolescent girls.

5. Sukanya Samriddhi Yojna was launched to ensure equitable share to the girl child by the family.

6. Beti Bachao Beti padhao (means save girl child and educate girl child) scheme was launched in 2015 for the welfare of girl child.

The crisis is real, and its persistence has profound and frightening implications for the society and the future of mankind. Although sounding promises, the current scenario is far from being satisfactory. Despite legal provisions, incentive based schemes and media messages many people across all societal strata are shunning the girl child from thriving. In order to really bring women discrimination down in the society, it needs to understand and eliminate the main cause of the ill practices against women which are patriarchal and male dominated system of the society. It needs to be open minded and change the old mind set against women together with the constitutional and other legal provisions. Current policies have been directed towards the symptom rather than targeting the direct root cause. Instead of addressing the basic son preference/daughter aversion and low status of women in India, efforts are being made primarily towards the eradication of sex-selection practices. The women themselves desire that their status and position in society should rise higher. Though a proper climate for such a change is still wanting, yet there have been many structural and statutory innovations for the improvement in women's position. The traditional status and role sets of women are breaking up and new role–sets based on achievement, independence and equality are gradually coming up. The future of women in India seems bright but it is women themselves who can ensure it by being vigilant, alert and united. They will have to raise their voices against any violation of their rights and privileges. It is said that God help those who help themselves and it is equally true in the case of equality and liberty of women in India.

✦✦✦

Devadasi & Prostitution

- Blots on Society OR a New Industry

Ruchi Yadav
SARAL, RO Jaipur

"The same community who has deprived her identity;
The same society who has erased their children's destiny;
The same community who thinks a girl as burden;
The same society who made the purpose of her life uncertain."

The term Devadasi is a Sanskrit word, which literally translates to "Female slave of God". The practice is particularly interesting as well as difficult to combat, as it arises out of crossroads of religion, poverty and societal norms. The historical account of Devadasi is murky due to its early inception. The first confirmed reference to a Devadasi was during Keshari Dynasty in the 6th century A.D. in South India. The practice began when one of the great queens decided that in order to honor the gods, certain women who were trained classical dancers, should be married to the deities. The inception of the practice was one that was imbued with great respect as woman whom were chosen to become Devadasi were subject to two great honors: first, because they literally married to the deity, they were to be treated as if they were the Goddess Lakshmi herself and second, the women were honored because they were considered to be "Those great women who control natural human impulses, their five sense and submit themselves completely to God. And as they were married to immortal they were considered as auspicious."

The esteemed Devadasi began to wane under Islamic and British rule. Following the successful invasions and shift in the paradigm of rulers and conceptions, Devadasi's who were effectively tied to temples, were left to fend for themselves. Originated with the noblest motives, the institution of Devadasi gradually degenerated into something, highly objectionable. With the destruction of dynasties, Devadasi not only lost their patronage, but also their status and meaning in society. Priests, borkers and other groups had vested interest in the continuation of the system. A combination of religious pressure, economic necessity and social construction formed the basis of the Devadasi institution and perpetuated its survival. Even with the inception of new society, humane laws, educational institutions and governments, the only change brought in the practice of Devadasi was the modification in its meaning and parlance thus naming them as prostitutes, however, yet scared, continuing the exploitation of lower caste girls.

For all their efforts, however, the reformers have not succeeded in ending the institution, only demeaning and criminalizing it.

"False word of attainment of moksha was spread in the community;
Destroying each and every opportunity;
Thus began the story of religious prostitution;
Leaving them with no permanent solution."

Prostitute is derived from the Latin prosituta, which literally translates to "to put up front for sale". The modern iteration of the Devadasi system while not nearly as pervasive both in term of influence and sheer numbers as in the past, is one that continues to promote the sexual exploitation of lower caste girls in India. The system is also, especially in its current form, inextricably linked to poverty and tradition. Its modern face is different from its historical institution, in terms of both its physical manifestation and underlying goals. In its current form, the practice is not as much about temple worship or temple dancing; rather, it is almost singularly related to the sex trade, prostitution and exploitation of the lower caste. While many medieval temple women had honored positions within the temple hierarchy, the overwhelming majority of modern devadasis are straightforward sex workers. Prostitution pre-exists as a system and as institution that patriarchy, religion and society as a whole has a stake-in.

As a society today, we collectively condemn them for their work, their identity, and their existence, and yet as per estimates the annual revenue generated by prostitution worldwide to be over $100 billion. There are about 42 million prostitutes in the world, living all over the world. Pornography as an industry bids $10billion - $14 billion in annual sales (*Source@Statistic Brain Research Institute*). In 1970's the entire population of prostitutes, altered their professional status to sex workers, thus identifying themselves as workers by choice. If we, as a society, really care about women, we will not only provide them with equal rights and opportunity, but we will stop turning some of them into criminals merely because they have chosen to exchange sex for money. Women, who, for any reason, chose to engage in prostitution, do not need to be incarcerated to their own good. The contradiction between individual will and common good is dismissed, rather it has become a matter of feminism, capitulation, morality, and ethics.

One need not romanticize prostitution to distinguish between prostitution as coercion or slavery and prostitution as an economic choice. Lament them both from a moral standpoint if that is the disposition, however, criticize only that involves not merely error but force. Focus should not be on eradicating the commercial sex worker, whether by punishing the suppliers and/or the users, making no distinction whatever regarding the circumstances, this way one is collaborating with the views blaming the victims of prostitutions for their victimization. Violence against them is thus obscured and focus is off the perpetrators. A reasonable authority rather can search out and punish the coercion, while seeing to it that the response to those who choose 'the life' is humane and that as a society we are not adding to their calamities.

Laws regarding the prostitution as a profession differ all over the world. Certain countries such as Denmark, Switzerland, Korea,

Japan, Sweden, Netherlands, have legalized the system and count them as tax payers. Not only this has significantly reduced the violence and victimization against the workers but has also opened up different avenues for them and their families. These societies identified that not all those who choose to migrate were the product of coercion, rather, the reasons were same as connected to all kinds of labor. They have not been abducted or enslaved. They are full-fledged members of the society. Some entered the sex industry as a part of an economic strategy for supporting themselves and their families, many have children, partners and parents whom they support through their work.

"Do they have a law? Yes. However, it is in their favor? It never is."

Prostitution is legal in India, but other activities that include prostitution are a punishable crime under Indian laws. It is also stated that a sex worker is not protected under the labor laws. They are not protected under any law towards their health and safety. We need to ask the question that, the laws in place for, and/or, against prostitution, is it really to save victims of it or the perpetrators. Because of the cloud of illegality hanging over their heads sex workers subject to violence have absolutely no recourse. We blame society, but we are the society. Integration of any element in existing societal norms has always been a taxing task, unless the same is propagated by religion, politicians or globalization.

"We judge by what we see,
We judge by what we hear,
We elected hypocrisy.
Will we help to destroy a girl,
Will we help to save a soul?"

Women empowerment as a construct has been behaviorally manifested, today, in speeches globally, however, in practice, it is still in its rudimentary state. A government's job should be to protect its citizen from any threat that they are facing. Sex work as a profession has grown exponentially. Instead of victimizing the existence of a practice borne as an outcome of interplay of history and religion, we must make sure that there are laws in place which ensures that minors and those who are incapable of giving consent aren't dragged in sex work and that the existing sex workers are not subjected to coercion and violence. Human trafficking, Rape, Sexually transmitted diseases, literacy, sex education, laws regarding providing the structure to the already existing profession should become the priority of the societal institutions. Creating a safer environment, providing them with good medical facility, legalizing their profession and developing the attitude of acceptance, is the need the society and law makers must acknowledge.

✦✦✦

Madhushmita Mohapatra
NRO, Chennai

MANAGEMENT QUALITY OF WOMEN

The aim of good management is to provide service to the community in an appropriate, efficient, equitable, and sustainable manner. Critical management consideration for assessment and planning managing the process to achieve the strategize plan. Management skill literally means to control and deal with situations effectively. Management skill overlaps with the leadership skill as both involve problem solving, decision making, planning, dedication, communication, time management and most effectively implementation in positive way.

Good leaders invest so much time in making their followers better that they sometimes neglect one important thing: themselves. And women are the greatest sacrifice for all the time. They have inbuilt mechanism of managing harsh situation even in the worst condition like a essential hormone.

Some Inevitable features of Managerial Skill

1. **Make time**

   The best leaders continuously learn about what's relevant to their personal and organizational success – business operations, employee needs, industry trends, new management tools. Allocate time at least weekly to broaden your knowledge in those important areas. Confident woman building positive trend graph with hammer in hand.

2. **Boost your Emotional Intelligence**

   Research shows women tend to react more emotionally than men, and we need to keep that kind of emotion in check: Displaying extreme ends of emotions – stoic or frantic, for example – can be a leadership detriment.

   On the other hand, women in leadership want to develop their Emotional Intelligence (EI) – which is the ability to control and express your own emotions and properly respond to others' emotions. Showing a high level of EI is a research-proven sign of a great leader.

   One way to improve EI: Practice observing how you and others feel. Between meetings, jot down or just think about the emotions you felt or others expressed – and possibly the effect they had on what happened.

   It will help you become even more effective at "reading" emotions and acting appropriately on them in future, similar situations.

3. **Communicate with sincerity**

   There's a difference between relaying news and sharing information to nurture growth – and great leaders do the latter. For instance, when leaders pass information up and down the chain of command they want to include the relevance – how it affects people emotionally and professionally. As a leader, you might give details on a new initiative that stretches your organization into a different market. Then you'll want to explain how short-term extra work will likely lead to heightened stress and eventually new career opportunities. Another best practice: Reflect on and share business lessons you've learned with your employees. Your mistakes can help them avoid similar situations and help you recall unique ways to overcome adversity.

4. **Practice decisiveness**

   Noon makes all the right decisions. But every leader can become more decisive and on-target by taking these steps before settling on a decision:

   - ✓ Gather information and data
   - ✓ Look at past decisions
   - ✓ Get several points of view, and
   - ✓ Consider multiple options.

5. **Be inspired**

   Almost every leader who reaches the top still looks to someone else for inspiration. Former GE CEO Jack Welch credits his mother, Grace, for much of his business sense. Hillary Clinton praises Eleanor Roosevelt. Yet most managers graduate from mentor programs, become mentors themselves and then have no one to turn to. That

leaves it on you to informally work with a trusted boss or colleague to identify skill gaps and growth opportunities.

6. **Inspire**

Good leaders coach and train when necessary. Better leaders do that with a focus on inspiring their employees. When you critique, offer actionable options for people to try, and emphasize your confidence in their ability to manage it. Emphasize the big picture. People aren't inspired to work because they're directed to do it. Remind them of the value their efforts add to the company, customers and colleagues. One of the best career investments women leaders can make is in their own development. Despite a busy schedule, it's important to invest time at least weekly into improving your skills so you can manage people and projects better.

Dwight D. Eisenhower once said: "Leadership is the art of getting someone else to do something you want done because he wants to do it." In other words, leadership is about influence. Stellar soft skills are necessary to exert the right kind of influence over others to achieve desired goals. Soft skills are personal attributes that allow positive interactions with others. Regular positive interactions produce greater influence. Various studies have defined a number of leadership soft skills that affect influence in a positive way. Ten of these emerge as frontrunners for success.

Leadership is an inherently subjective notion. However there are notions of leadership that are assumed either implicitly and explicitly in the literature on female leadership. Other way of conceptualizing this managerial dictomy is through contrasting concept with concern for relationships and a focus consideration for people. In recent years the transformation –transactional skill has become popular in management literature.

Transformation skill includes

- ✓ Idealized influence on chrism
- ✓ Inspirational motivation
- ✓ Individual Consideration
- ✓ Intellectual stimulation

Transactional skill include

- ✓ Contingent Reinforcement/Reward
- ✓ Active management by exception
- ✓ Passive management by exception

There is a line of argument in literature on gender and managerial skill contending that female leaders are more transformational and multidimensional in skills.

Psychological Strength of a Woman

- ✓ Structural skill through rationality efficiency, adhering policy
- ✓ Human leadership through feasibility and empower
- ✓ Political leadership through negotiation, networking, and collation
- ✓ Symbolic skill through emphasizing ritual ceremonies
- ✓ Educational skill through the dissemination of educational knowledge and instructional information.

However, women have proven to be better leaders in an increasing number of cases. This can be seen as more and more countries have entrusted women to be their leaders. These women have a more 'feminine' approach to leadership which is more sensitive towards the needs of society. For instance, history is peppered with exemplary female leaders such as Indira Ghandi, Benazir Bhutto, Eva Peron and present day heroines such as Aung San Suu Kyi. Women tend to be more caring in nature and quite patient in dealing with problems which makes them better leaders compared to men who could be less sensitive and impatient. Most women are also known to be perfectionists, and this is an advantage because they are often very meticulous and detailed in carrying out their duties as leaders. Thus, with a more open-minded society, an increasing number of women are being given the onus to take the lead and may even one day supersede men in their traditional leadership roles! Leaders are not born, they are made through hard work, presidency, ability and irrespective of gender.

✦✦✦

Statement about Ownership and other Particulars concerning "Union Dhara"

Form IV (See Rule-8)

1.	**Place of Publication**	:	Union Bank of India, Union Bank Bhavan, 239, Vidhan Bhavan Marg, Nariman Point, Mumbai 400 021.
2.	**Periodicity of Publication**	:	Quarterly.
3.	**Editor, Publisher and Printer's name, nationality and address**	:	DR. SULABHA KORE, Indian, Union Bank of India, Union Bank Bhavan, 239, Vidhan Bhavan Marg, Nariman Point, Mumbai 400 021.
4.	**Name and addresses of Individuals who own the newspaper**	:	Union Bank of India, Union Bank Bhavan, 239, Vidhan Bhavan Marg, Nariman Point, Mumbai 400 021.

I, DR. SULABHA KORE, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/-
Dr. Sulabha Kore
Signature of Publisher

March, 2018

POST RETIREMENT LIFE

Naina Kulkarni
Retd.Staff

Very shortly in May 2018, I will be completing five years of my retirement what better occasion could I find to share my journey of last five years than the Women's Day falling Internationally on 8th March?

Women have uplifted themselves appreciably on a large scale in various fields. Society has also encouraged and uplifted them to do so. They have cast their image and impressions in Economics,cultural, education,political, sports, space and various other fields International Woman's day will be celebrated on a grand scale in all these fields.However one negative and dark side faced by this gender is the discrimination/ disparity faced by them. The crimes we get to read in the daily newspaper is just a part of the actual heinous and disgusting acts committed against women. The jealousy and negative attitude is truly hurting.

So friends, we must call ourselves lucky that we are a part and parcel of this esteem institution our Bank. Though we are taught to live each day, we need to make provisions for our future too.

After retirement, we experience financial security by way of our retiring funds and a regular pension. Sixty is an age where health attracts our attention. We just cannot afford to neglect it at any cost. All these years our priority was our family who were dependent on us for many factors.

By sixty, most of us are relieved from our major responsibilities like children's education and marriage etc. We have given our best of attention time and energy to them to see this day.

Each one of us has some hidden talent within us. Be it singing, drawing, writing, and gardening. Perhaps during the past few years we couldn't prioritize this talent. This is the right time to bring out all our dormant dreams. Let the dreams bloom and cheer us post retirement. On the day of taking an exit from the bank, let our dreams welcome us to implement them. Let there not be a sudden vaccume or depression. Cooking is an art and talent for sure, we have already been doing it in the past. As my younger daughter who is a mother of two kids and working for Wipro (B.E.MBA) says, Mumma, you can easily delegate the kitchen to a cook and pursue your passions. Hiring some help is also a sort of social awareness indirectly.

As for me, I was lucky that my grand children were awaiting my company and assistance. It was a great pleasure spending time with them. It's a blessing to see them grow. I was too occupied while my daughters were growing up and studying. We work like machines which I realized now.

I was also blessed by the Almighty to visit a few places in and out of India with my daughters and family. Immediately after retirement in May 2017 I got to visit London and Scotland. In August 2014 I also visited the east and west coast of USA.

In March 2015 enjoyed the Bhutan trip with bank employees/colleagues (so do keep in touch with the Bank post retirement. It keeps you young). Again in August 2015 visited Europe (entire) with Kesari Travels.

In 2017 got to visit Singapore with family.

In 2018 visited Srilanka.

In India too, travelled a lot with family and friends. There is so much to see which is accessible after retirement. I had good experiences in religious tours too. As one ages one tends to draw closer to nature and super natural powers.

Srilanka is a foreign country which I liked not only for its natural beauty but for the Srilankan Government which encourages women employment. The famous tea factory is well organized by entire female staff we were eager to see the Rama-Ravana-Hanumana temples but our chauffer who was a local over there said that for them Rama-Ravana were just kings. They follow Bhuddhism and humanity above all. Hence crime rate is very low.

Friends, there is so much to share! Sharing is caring.It gives me a great pleasure to visit my parent branch from time to time. Thanks to Union Bank my friend and bread to this day! I wish all my colleagues happy days ahead. Let us give and get respect which is the honor one deserves at any age.

My good and sincere wishes to Union Dhara and all of you for International Women's Day!

SEXUAL HARASSMENT

REDRESSAL COMMITTEE– SOCIAL LEGISLATION AND

PROTECTION OF WOMEN'S

RIGHTS AT WORKPLACE

Padma Neelkanthan
HRM Dept., C.O.

Social legislations are an active process of preventing or changing wrong course in society with an aim to empower groups who are disadvantaged due to certain disenabling factors. In case of such legislations it is important to understand its background and evolution. It is crucial to understand that the current law on sexual harassment is an outcome of long standing struggle by the women's groups and organisations towards realisation of right to work with dignity. Any interpretation of the law devoid of a pro-woman perspective can become counterproductive. It is required that the law is interpreted and understood within the framework of their fundamental rights guaranteed by the Constitution to women and the larger perspective of human rights of women.

Across the globe today, workplace sexual harassment is increasingly understood as a violation of women's rights and a form of violence against women. Workplace sexual harassment, like other forms of violence, involves serious health, human, economic and social costs, which can adversely affect the overall development of a nation. In the above background, it is clear that sexual harassment constitutes a gross violation of women's right to equality and dignity.

A safe workplace is a woman's legal right. Indeed, the Constitutional doctrine of equality and personal liberty is contained in Articles 14, 15 and 21 of the Indian Constitution. These articles ensure a person's right to equal protection under the law, to live a life free from discrimination on any ground and to protection of life and personal liberty. This is further reinforced by the UN Convention on the Elimination of all Forms of Discrimination against Women (CEDAW), which was adopted by the UN General Assembly in 1979 and which is ratified by India. Often described as an international bill of rights for women, it calls for the equality of women and men in terms of human rights and fundamental freedoms in the political, economic, social, cultural and civil spheres.

The Supreme Court in a landmark judgment in respect of the case of Vishaka & others v/s State of Rajasthan & others, defined what constitutes sexual harassment at workplace and laid down certain guidelines to prevent such harassment. As per the directions of the Court, these guidelines were to be strictly observed at all workplaces and they would be binding and enforceable in law until a suitable legislation is enacted. The Sexual Harassment of Women at Workplace (Prevention, Prohibition and Redressal) Act, 2013 was passed by both the Houses of Parliament and it received the assent of the President of India on 22.04.2013. The Act was enacted to ensure safe working spaces for women and to build enabling work environments that respect women's right to equality of status and opportunity. An effective implementation of the Act will contribute to the realization of their right to gender equality, life and liberty, equality in working conditions everywhere. The sense of security at the workplace will improve women's participation in work, resulting in their economic empowerment and inclusive growth.

In our Bank, as per the directions of the Supreme Court / Government of India, an Apex Level Committee has been constituted at Central Office for redressal of complaints of Sexual Harassment. Guidelines have been issued for forming similar Committees at Regional and Zonal levels also to deal with local complaints of such nature. As per the provisions of the Act, the Policy on Prevention, Prohibition of Sexual Harassment at the work place within the Bank and redressal of complaints of sexual harassment has since been put in place in terms of Staff Circular no. 6138 dated 14.11.2014.

It may be mentioned that complaints to SHRC in our Bank has been minimal and wherever such complaints have been made, prompt and immediate steps have been taken by the Bank to inquire into the same in an impartial manner. Appropriate action is also taken against employees wherever the complaint has been found to be substantiated. An annual report on such cases is also forwarded to the Ministry and the National Commission for Women.

It is well established fact that ensuring safe working conditions for women leads to a positive impact on their participation in the workforce and increases their productivity, which in turn benefits the nation as a whole. Economically empowered women are key to the nation's overall development and this can only be achieved if it is ensured that women's workspaces across all sectors and all over the country have a safe and secure environment for work.

Union Bhavishya- Adapting to Excel

The pessimist complains about the wind;
The optimist expects it to change;
The realist adjusts the sail.

-William A Ward

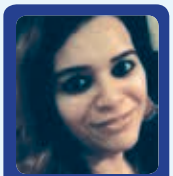

Anu Dhir
TMD, HR, CO

As Stephen Hawking famously said, '*intelligence is the ability to adapt to change*', we attempted to be the flag bearers of this maxim by launching an unprecedented and ambitious organizational development (OD) initiative, aptly christened Union Bhavishya. Union *Bhavishya*, as the name suggests aims at preparing us to ride the waves of change into the future of an industry that has seen some daunting disruptions in recent times. With the launch of this programme, which was conceptualized as early as the spring of 2016, we acknowledged the need for an intervention- a pause, to look within and identify kinks in our armour. For the first time, we quantifiably analyzed the widening leadership vacuum created by mass retirements and the significant shifts in the economic environment that require the greatest agility to manoeuver. A strategy thus materialized, utilizing the science and art of OD to launch us into the new banking era, to carve our *Bhavishya*.

The business outlook of the Bank in FY 2015 & 2016, along with changes in the business climate brought about by the bankruptcy codes, IndAS norms, monetary policy targeting inflation, GST, digital disruption, increased competition and public consciousness, all pointed at a strategic shift to survive and excel.

As a PSU, Bank is experiencing a peculiar phenomenon of shortening career paths for filling in the gaps being created by large scale retirements. This shortening of career paths, though seemingly progressive comes at the expense of shortened field expertise and people management skills. Club this with the high percentage of stagnation in the organization and you have the undesirable situation of younger, less experienced people leading teams of older experienced ones. These two groups form the two polarized demographics in the Bank today.

This paved the way for a first of its kind OD intervention in the Indian banking industry that has endeavoured to make positive and sustainable shifts in the mindsets of the future leaders, by acknowledging that the *soft* or *intangible* aspects of an individual are the key to self actualization, in Maslow's words.

OD is an interdisciplinary field which borrows from organizational psychology, human resources management, communication, sociology, and many other disciplines, to increase organizational effectiveness and facilitates personal and organizational change.

Organizations need to change to become effective, productive, and satisfying to members. Since an organization is *it's people,* organizational members are expected to quickly and flexibly adapt to the newest direction, as reluctance to adapt is a fatal flaw.

Public sector organizations often face additional challenges in the management of change, given the bureaucratic structures, interfaces with governments and legislatures, political pressures, and legislative policies, all complicating the implementation of new processes and changes to organizational practices; - justifying the need for a planned intervention.

Thus was born Union Bhavishya- an organization wide transformation process to bring about positive changes in the way the organization conducts itself; a process that would help organizational members be more candid & adaptable, take greater responsibility for their actions, discover new ways of working with each other, and be more effective in realizing our individual and shared goals.

The journey through Union Bhavishya takes a participant from self awareness, to self actualization. In the first phase, based on certain criteria of seniority and exposure, 1000 managers in senior and middle management have been selected as participants.

To deliver the key learnings the programme is structured in the form of a human process lab, wherein a 'here and now' principle is established.

The programme has been divided into three parts or *forums*:

i) Forum 1: This forum focuses on *'looking within'*. It uses the iceberg concept to melt damaging behaviors and attitude, by targeting their deep rooted causes, thus cleansing an individual of unnecessary emotional baggage, making room for good things to take place.

'Mastering the Self', uses techniques such as role plays, psychometric tests and assessment centers to create self awareness, and assess individual strengths and weaknesses, attitudes and perceptions. It follows Lewin's change management model of 'unfreeze-change-refreeze', where damaging behaviours / thought process are unlearnt, new ones adopted, and reinforced.

The key take-away from this forum is to do away with limitations of thought and perception, and free the mind to realize its potential.

ii) Forum 2: Inspiring Others to Action

This forum focuses on *'expanding consciousness'*. Like Vivekananda said, *all expansion is life,* all contraction is death. Here the participant is made aware of how he is perceiving, judging and forming opinions of others, and how these in turn come in the way of congenial relationships. Learning about dynamics of trust, openness, leading by example shows the way to forging lasting and strong personal relationships at work and building effective teams.

'Inspiring Others to Action', uses group activities such as trust exercises and coaching simulations, to strengthen inter-personal trust, communication and collaboration. It uses T-groups and the managerial grid to understand obstacles to communication and ability to manage teams.

The key take-away from this forum, is the understanding of group processes, developed understanding of differences in perception, and ability to manage teams through accepting and utilizing strengths of each team member.

iii) Forum 3: Becoming a force for change

This forum consolidates the learning from forums 1 & 2 and offers an opportunity to *'be the change'*. It talks about the major shifts that need to happen and propels participants on the path to making them possible for themselves and their teams, by taking up a *'challenge'* to be completed in the next 12 months. This challenge may be anything that they seek to achieve in their journey of professional self actualization.

'Becoming a force for Change' uses the management-by-objectives technique, whereby participants express their renewed enthusiasm and creativity to develop projects that shall showcase their potential.

The key take-away from this forum is the chance to lead by example as projects that are undertaken are considered as gifts to the Bank, as they are developed to portray a change championed by the participant.

Union Bhavishya is at the end of its first phase, and countless stories of triumph in both the personal and professional context have poured in. Participants have reported to have gained invaluable insights into themselves and the human psyche in general, and having been able to thus resolve complex workplace issues. Bank is in the process of building in-house capability to extend the benefits of this programme to all employees in a phased manner.

While the quantitative benefits of this intervention shall be revealed in time, Bhavishya seems to have been successful in affecting a cumulative shift in mindsets, moving people from victim to warrior mode. These positive shifts shall make their presence felt at the bottom line, as we have taken this first step on our journey of a thousand miles.

✦✦✦

पुरस्कार और सम्मान AWARDS GALORE

Our Bank won the Golden Peacock HR Excellence Award for the year 2017. We have won this Award for the fourth time in succession, which is instituted by the Institute of Directors (IOD), New Delhi. The Award was given away by Hon'ble Justice M.N.Venkatachaliah, Padma Vibhushan,National Chairman,Institute Of Directors,India and former Chief Justice of India at a glittering function held at Hotel Lalit Ashok, Bengaluru.

Shri Atul Kumar, General Manager and Shri Kalyan Kumar, Principal, Staff College, Bengaluru receiving the Golden Peacock HR Excellence Award on behalf of the Bank.

Our Bank won two Banking Technology Awards from Indian Bank's Association (IBA): Best Financial Inclusion Initiatives (Winner) and Best Payment Initiatives (Runner). Shri Rajkiran Rai G., MD & CEO received the award from Shri R. Gandhi, Former Deputy Governor, RBI and Shri Ajay Sawhney, Secretary MeitY at the glittering award function organized by IBA at Mumbai.

Shri Rajkiran Rai G., our MD & CEO, receiving the award from Shri R. Gandhi, Former Deputy Governor, RBI and Shri Ajay Sawhney, Secretary MeitY

दि. 10.02.2018 को कोलंबो, श्रीलंका में आयोजित 'यूनियन प्रुडेन्स फंड' के अंतर्गत 100% लक्ष्यप्राप्ति हेतु माननीय प्रबंध निदेशक श्री. राजकिरण रै जी. के द्वारा स्मृतिचिन्ह प्राप्त करते हुए नासिक क्षेत्र के क्षेत्र प्रमुख, श्री विनायक टेंभुर्णे.

Our bank has bagged the following five awards in Public Sector Bank category conducted by PFRDA for outstanding performance during September 2017 to December 2017. Awards were presented on 15.02.2018 by PFRDA at Mumbai.

- 2nd Rank in "NPS LAO ACCHE DIN PAO" campaign conducted from 20.11.2017 to 02.12.2017. (For Target achievement by highest number of POP-SPs).
- 2nd Rank in "LIFE'S GLORY" campaign conducted from 08.09.2017 to 22.09.2017 - for achieving the highest no. of NPS accounts.
- 2nd Rank in "LIFE'S GLORY" campaign conducted from 08.09.2017 to 22.09.2017 - for achieving the highest number of new POP-SP activation.
- 3rd Rank in "NPS LAO ACCHE DIN PAO" campaign conducted from 20.11.2017 to 02.12.2017 - for achieving the Target by highest % among competing POP-SPs.
- 3rd Rank in "LIVE ON NPS LIFE" campaign conducted from 18.10.2017 to 28.10. 2017- for achieving the highest no. of NPS accounts.

On 13.01.2018 our Staff Training Centre, Bhubaneshwar bagged the first prize for garden show at the State level Flower Show 2018, Bhubaneshwar.

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा द्वारा वर्ष 2016–17 के दौरान, राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु उत्तर क्षेत्र – 2 (उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड) में समस्त राष्ट्रीयकृत बैंकों की श्रेणी में क्षे.का., गोरखपुर को दि.09.02.2018 को वाराणसी में द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया.

दि. 09.02.2018 को आयोजित उत्तरी क्षेत्रों के क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में हमारे क्षेत्रीय कार्यालय चंडीगढ़ को तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ. इस अवसर पर उत्तर प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री राम नाईक जी से पुरस्कार प्राप्त करते हुए राजभाषा विभाग प्रमुख श्री राजेश कुमार झींगरन, सहायक महाप्रबंधक.

दि.12.01.2018 को आयोजित पश्चिम एवं मध्य क्षेत्र के राजभाषा सम्मेलन में हमारे क्षे. का., बड़ौदा को राजभाषा विभाग, भारत सरकार, गृह मंत्रालय द्वारा द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया. शील्ड ग्रहण करते हुए श्री एचसी मित्तल, उप महाप्रबंधक, मुंबई (द).

दि.12.01.2018 को आयोजित पश्चिम एवं मध्य क्षेत्र के राजभाषा सम्मेलन में हमारे क्षेत्रीय कार्यालय गोवा को तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ. इस अवसर पर महाराष्ट्र के माननीय राज्यपाल श्री सी विद्यासागर राव जी से पुरस्कार प्राप्त करते हुए राजभाषा अधिकारी, श्री सुधीर भोला प्रसाद.

'मराठी भाषा संवर्धन पखवाड़ा'

उद्घाटन समारोह

समापन समारोह

हमारे बैंक में इस वर्ष पहली बार 'मराठी भाषा दिवस' के उपलक्ष्य में 'मराठी भाषा संवर्धन पखवाड़ा' आयोजित किया गया. मराठी भाषा के विकास एवं समृद्धि हेतु यह पखवाड़ा मनाया गया. इस कार्यक्रम का शुभारंभ केंद्रीय कार्यालय, मुंबई के कैंटीन हॉल में मराठी के प्रसिद्ध कवि श्री अशोक नायगांवकर के कर कमलों से किया गया एवं समापन समारोह रवीद्र नाट्य मंदिर सभागृह, प्रभादेवी, मुंबई में श्री अशोक हांडा द्वारा प्रस्तुत 'मराठी बाणा' कार्यक्रम से किया गया.

समाचार - केंद्रीकृत

Our Managing Director & CEO, Shri Rajkiran Rai G., flanked by our Executive Directors, Shri V.K. Kathuria, Shri R.K.Verma & Shri A.K. Goel at the press conference held in Mumbai on the occasion of announcement of Q-3 Financial Results for the Quarter/ Nine months ended December 31, 2017.

(Seen L/R) former RBI Deputy Governor Shri K.C. Chakrabarty; ICICI Bank MD & CEO Smt. Chanda Kochhar; Standard Chartered India CEO Smt. Zarin Daruwala; State Bank of India Chairman Shri Rajnish Kumar and our MD & CEO Shri Rajkiran Rai G. at the Business Standard Banking Round Table 2017 in Mumbai.

Our Managing Director & CEO, Shri Rajkiran Rai G. unfurling the national flag on the occasion of Republic Day celebrations.

समाचार - उत्तर

दि.14.01.2018 को यूनियन बैंक ऑफिसर्स एसोसिएशन, भोपाल यूनिट द्वारा भोपाल अंचल के सभी अधिकारियों के लिए क्रेडिट वर्कशॉप एवं स्टाफ मीटिंग का आयोजन किया गया. इस अवसर पर उपस्थितों को संबोधित करते हुए, श्री प्रभात सक्सेना, ऑल इंडिया प्रेसिडेंट, एआईबीओसी एवं जनरल सेक्रेटरी, मध्य प्रदेश; साथ मंचासीन हैं श्री योगेंद्र सिंह, अंचल प्रमुख, भोपाल एवं श्री गुरतेज सिंह, क्षेत्र प्रमुख, भोपाल.

क्षे.का., रायपुर में दि. 24.01.2018 को मिड कॉर्पोरेट व्यापार मॉडेल का रिबन काट कर उदघाटन करते हुए श्री योगेंद्र सिंह, महाप्रबंधक, भोपाल. साथ में श्री वी.के.एस. शास्त्री, उप महाप्रबंधक, एमसीवी, कें. का., श्री गणेश तिवारी, सहा. महाप्रबंधक, बीपीटी, कें.का.; श्री एम.पी. सिंह, क्षेत्र प्रमुख, क्षे.का., रायपुर एवं श्री एस.वी. कांबले, उप क्षेत्र प्रमुख, क्षे.का., रायपुर एवं श्री भूपेंद्र सिंह, शाखा प्रबंधक, मिड कॉर्पोरेट शाखा.

समाचार - उत्तर

दि. 22.01.2018 को मिड कॉर्पोरेट एवं सरल के पुनर्निर्माण कार्यक्रम की समाप्ति उपरांत, क्षे.का., इंदौर द्वारा आयोजित ग्राहक गोष्ठी पर श्री ए.के. दीक्षित, महाप्रबंधक; श्री योगेंद्र सिंह, महाप्रबंधक, भोपाल अंचल; श्री वी.के.एस. शास्त्री, उप महाप्रबंधक, मिड-कॉर्पोरेट; श्री गणेश तिवारी, सहायक महाप्रबंधक, कारोबार प्रक्रिया परिवर्तन; श्री जितेंद्र मणिराम, उप महाप्रबंधक ने ग्राहकों से चर्चा की.

दि. 22.01.2018 को आर्य विद्या निकेतन, रसल चौक, जबलपुर में क्षे.का. के स्टाफ सदस्यों द्वारा स्वच्छता संबंधित गतिविधियों का आयोजन किया गया तथा क्षेत्र प्रमुख द्वारा स्वच्छता जागरूकता संबंधित जानकारी दी गई.

बैंक के 99 वें स्थापना दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलन कर शुभारंभ करते हुए श्री एस एन कौशिक, क्षेत्र महाप्रबंधक, वाराणसी; श्री महाबीर वर्मा, क्षेत्र प्रमुख, श्री एस एन सहाय, सहायक महाप्रबंधक तथा बैंक के ग्राहकगण.

वाराणसी अंचल में 'सैलूट तिरंगा' कैम्पेन में अतुलनीय प्रदर्शन करने पर क्षे.का. गोरखपुर तथा क्षेत्रांतर्गत शाखाओं के स्टाफ सदस्यों का उत्साहवर्धन करते हुए श्री महाबीर वर्मा,क्षेत्र प्रमुख.

भारतीय माइक्रो क्रेडिट के स्थापना दिवस के अवसर पर लखनऊ में दि. 30.01.2018 को आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन श्री गिरिराज सिंह माननीय केंद्रीय राज्य मंत्री सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम, भारत सरकार द्वारा किया गया. उस अवसर पर माननीय मंत्री महोदय का पुष्पगुच्छ से सम्मान करते हुए, श्री लाल सिंह, क्षेत्र महाप्रबंधक लखनऊ.

स्टाफ प्रशिक्षण केंद्र भोपाल में स्वच्छता पखवाड़ा के दौरान सफाई करते हुए प्रतिभागी एवं केंद्र प्रभारी श्री बी पी शर्मा एवं अन्य संकाय सदस्य.

स्टा. प्र. कें., लखनऊ द्वारा दि. 22-23 फरवरी 2018 को दो दिवसीय WAR AGAINST NPA पर कार्यशाला का आयोजन किया गया. कार्यशाला में सरफेसिया व डीआरटी मुकदमों से संबंधित सत्रों में श्री आर बी एस गौतम, पीठासीन अधिकारी / न्यायाधीश डीआरटी लखनऊ का मुख्य अतिथि के रूप में पुष्पगुच्छ से स्वागत करते हुए श्री लाल सिंह, क्षेत्र महाप्रबंधक, लखनऊ.

दि. 29.12.2017 को क्षे.का., जयपुर द्वारा एलसीवी शिविर का आयोजन किया गया. इस अवसर पर श्री संजय शर्मा, क्षेमप्र, दिल्ली एवं श्री आशीष पाण्डेय, क्षेत्र प्रमुख, जयपुर उपस्थित थे.

समाचार - उत्तर

दि. 29.01.2018 को श्री नन्दन श्रीवास्तव, आंतरिक बैंकिंग लोकपाल द्वारा क्षे.का., जयपुर का दौरा किया गया, इस दौरान बैंकिंग लोकपाल विषय पर क्षेत्र के शाखा प्रमुखों के साथ बैठक की गई.

दि. 29.01.2018 को भोपाल में प्रोजेक्ट उत्कर्ष के शुभारंभ के पूर्व शाखा प्रबन्धकों के लिए 'उत्कर्ष फोरम' का आयोजन किया गया. इस कार्यक्रम की अध्यक्षता क्षे.म.प्र., श्री योगेंद्र सिंहे द्वारा की गयी. क्षेत्र प्रमुख, भोपाल, श्री गुरतेज सिंह एवं स्थानीय शाखा के शाखा प्रबन्धक भी इस अवसर पर मौजूद रहे. बीपीटी, मुंबई से विशेष अतिथि के रूप में पधारे श्री दिवाकर कामत, उप महाप्रबंधक (बीपीटी) एवं श्री अखिलेश मिश्रा व श्री हेगड़े, सहायक महाप्रबंधक (बीपीटी) ने सभी उपस्थितों को प्रोजेक्ट उत्कर्ष से संबन्धित जानकारी प्रदान की.

दि. 22.01.2018 को इंदौर क्षेत्र के अंतर्गत मिड कॉर्पोरेट के पुनर्निर्माण पर आयोजित कार्यक्रम में, श्री ए के दीक्षित, महाप्रबंधक (ऋण प्रसंस्करण) द्वारा परिसर का फीता काटकर उद्घाटन किया गया. इस अवसर पर उपस्थित, सर्वश्री योगेंद्र सिंह, महाप्रबंधक, भोपाल अंचल, वी के एस शास्त्री, उमप्र, मिड- कॉर्पोरेट, गणेश तिवारी, स.म.प्र, कारोबार प्रक्रिया परिवर्तन, जितेंद्र मणिराम, उमप्र, अमित कुमार सरन, उप क्षेत्र प्रमुख एवं कौशिक व्यास, मु.प्र.

दि. 22.02.2017 को क्षे.का., जयपुर द्वारा स्टाफ सदस्यों एवं परिवारजनों हेतु 'एक शाम अपने परिवार' के नाम का आयोजन किया गया.

दि. 15.01.2018 को बैंक द्वारा आयोजित कम्बल वितरण समारोह में कंबल वितरण करते महाप्रबंधक श्री एस एन कौशिक.

दि. 26.01.2018 गणतन्त्र दिवस के अवसर पर क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय, लखनऊ और क्षे.का., लखनऊ द्वारा आयोजित कार्यक्रम में बैंक में 25 वर्ष की बेदाग सेवा पूर्ण करनेवाले कार्मिकों को सम्मानित किया गया. इस अवसर पर श्री लाल सिंह, क्षेत्र महाप्रबंधक, लखनऊ से सम्मान प्राप्त करते हुए, श्रीमती मीना श्रीवास्तव, प्रबंधक, अमीनाबाद शाखा, लखनऊ. साथ में खड़े श्री एस पी कर, उप महाप्रबंधक, लखनऊ.

दि. 22.01.2018 को इंदौर क्षेत्र के अंतर्गत सरल के पुनर्निर्माण के अवसर पर, बैंक के सम्मानीय ग्राहक द्वारा परिसर का फीता काटकर उद्घाटन किया गया. इस अवसरपर उपस्थित, सर्वश्री ए के दीक्षित, महाप्रबंधक (ऋण प्रसंस्करण एवं एम एस एम ई), योगेंद्र सिंह, महाप्रबंधक, भोपाल; वी के एस शास्त्री, उमप्र, मिड- कॉर्पोरेट; जितेंद्र मणिराम, उमप्र; श्री राजेश बापट, समप्र एवं अमित कुमार सरन, उप क्षेत्र प्रमुख.

दैनिक भास्कर ग्रुप द्वारा दि 16.02.2018 से 18.02.2018 तक आयोजित रियल इस्टेट एक्सपो के उद्घाटन अवसर पर महापौर (इंदौर) श्रीमती मालिनी गौर के साथ क्षेत्र प्रमुख, इंदौर, श्री राजेश कुमार दीप प्रज्ज्वलित करते हुए. इस अवसर पर क्षे. का. इंदौर की विपणन टीम द्वारा बैंक के गृह ऋण उत्पादों की प्रदर्शनी भी लगाई गयी.

दि. 29.12.2017 को 'सरत सदन' के सभागार में आयोजित ऋण मुक्ति शिविर में श्री राजकिरण रै जी, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ, मुख्य अतिथि के रूप में. साथ ही मंचासीन थे अतिथि डॉ रथीन चक्रवर्ती, मेयर, हावड़ा म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन; डॉ एम भी राव, प्रधान सचिव, पश्चिम बंगाल सरकार; श्री बिजीन कृष्णा, आईएएस, हावड़ा म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन; श्री अविनाश कुमार सिंह, क्षेत्र महाप्रबंधक एवं श्री राजेश कुमार, क्षेत्र प्रमुख, हावड़ा. प्रबंध निदेशक एवं सीईओ श्री राजकिरण रै जी के कर कमलों द्वारा 75 ग्राहकों को प्रमाण पत्र प्रदान किया गया.

दि. 12.01.2018 को यूनियन बैंक सोशल फाउंडेशन के तहत पटोरी शाखा में आयोजित कार्यक्रम के दौरान श्री महेंद्र कुमार श्रीवास्तव, क्षेत्र प्रमुख की उपस्थिति में श्रीमती प्रेमलता, जिला परिषद अध्यक्षा के हाथों 200 गरीब एवं निःसहाय लोगों के बीच कंबल का वितरण किया गया.

क्षे.का., समस्तीपुर के तत्वावधान में दि. 18.01.2018 को श्री महेंद्र कुमार श्रीवास्तव, क्षेत्र प्रमुख के नेतृत्व में एनपीए खाताधारकों के विरोध में लोगों ने जागरूकता लाने तथा बकायेदारों के विरुद्ध सामाजिक दबाव बनाने हेतु एक भव्य रैली निकाली.

क्षे.का., हावड़ा द्वारा दि. 18.01.2018 को क्षे.का. हावड़ा से अवनि मॉल तक स्वच्छता अभियान चलाया गया, जिसका नेतृत्व श्री राजेश कुमार, क्षेत्र प्रमुख, हावड़ा ने किया.

दि. 29.12.2017 को समस्तीपुर के स्थानीय पटेल मैदान में यूनियन बैंक सोशल फाउंडेशन के सौजन्य से आयोजित कार्यक्रम में श्री महेंद्र कुमार श्रीवास्तव, क्षेत्र प्रमुख, समस्तीपुर की उपस्थिति में श्री प्रणव कुमार, जिलाधिकारी, समस्तीपुर से 200 लाभार्थियों को कंबल वितरित किए गये.

पटना क्षेत्र में दि. 07.02.2018 को प्रोजेक्ट उत्कर्ष का शुभारंभ

भुवनेश्वर क्षेत्र में प्रोजेक्ट उत्कर्ष का शुभारंभ करते हुए, श्री जी पाडलकर.

समाचार पश्चिम

दि.18.01.2018 को यूनियन 24x7 कम्फर्ट लॉबी एवं चेंबूर (पश्चिम) शाखा के नए परिसर का उद्घाटन करते हुए प्रबंध निदेशक एवं सीईओ श्री राजकिरण रै जी. साथ में हैं, डॉ. के एल राजू, क्षेत्र महाप्रबंधक, मुंबई तथा श्री अमरेन्द्र कुमार झा, क्षेत्र प्रमुख, मुंबई (उत्तर) एवं अन्य गणमान्य.

वक्रांगी की मोबाइल बैंकिंग वैन का फीता काटकर उद्घाटन करते हुये, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ श्री राजकिरण रै जी., साथ में हैं, वक्रांगी के प्रबंध निदेशक एवं सीईओ, श्री दिनेश नंदवाना एवं श्री अनुराग चतुर्वेदी, क्षेत्र प्रमुख, मुंबई (पश्चिम).

क्षे.का. मुंबई (पश्चिम) के अंतर्गत मानिकपुर शाखा द्वारा निर्मला माता गर्ल्स हाईस्कूल में 29 जनवरी, 2018 को स्वच्छता अभियान आयोजित किया गया. इस दौरान शाखा प्रबंधक, श्री राजेश प्रसाद एवं शाखा के अन्य स्टाफ सदस्यों ने बच्चों को स्वच्छता के महत्व पर संबोधित किया, परिसर की सफाई कर बच्चों को जागरूक किया और स्कूल को आवश्यक कूड़ेदान भी वितरित किये गए.

दि. 27.02.2018 को पवन नगर शाखा के नवीनीकरण कार्यक्रम में उद्घाटन कर्ता, क्षेत्र प्रमुख, श्री विनायक टेंभुर्णे, लेफ़्टिनंट कर्नल, श्री विजयानंद हथंगडी, शाखा प्रबंधक, श्री वैश्वनार पाठक, कार्यालय सदस्य एवं ग्राहक.

दि.18.01.2018 को गोधरा शाखा द्वारा क्षे.का., बड़ौदा के सहयोग से ऋण मुक्ति शिविर का आयोजन किया गया. इसकी अध्यक्षता श्री सत्यनारायण पी, क्षेत्र महाप्रबन्धक, अहमदाबाद द्वारा की गयी. इसके अतिरिक्त इस शिविर में श्री राजीव कुमार झा, क्षेत्र प्रमुख; श्री एनपी सिंह, मुख्य प्रबन्धक एवं शाखा प्रमुख, श्री आतिश बोकड़िया सहित शाखा के स्टाफ सदस्यों ने प्रतिभागिता की.

दि.19.01.2018 को क्षे.का. बड़ौदा द्वारा वडोदरा महानगरपालिका के सहयोग से 'स्वच्छ भारत' अभियान कार्यक्रम चलाया गया. इस स्वच्छता अभियान में स्टाफ सदस्यों का नेतृत्व करते हुए, श्री राजीव कुमार झा, क्षेत्र प्रमुख; श्री पी उदयकुमार नायडु, मुख्य प्रबंधक एवं श्रीमती वी सुभा, मुख्य प्रबंधक एवं अन्य स्टाफ सदस्य.

वडोदरा महानगर को स्वच्छ एवं स्मार्ट सिटी बनाने के संकल्प में दि. 07.01.2018 को वडोदरा महानगर में आयोजित एमजी वडोदरा मैराथॉन में बड़ौदा क्षेत्र के स्टाफ सदस्य प्रतिभागिता तथा नेतृत्व करते हुये श्री मनहर शुक्ल, उप क्षेत्र प्रमुख; श्री पी उदयकुमार नायडु, मुप्र (ऋण) एवं श्रीमती वी सुभा, मु.प्र. (पीएसएस).

दि. 26.01.2018 को क्षे.का., बड़ौदा में गणतन्त्र दिवस के अवसर पर क्षे.का. एवं सिटी की शाखाओं के स्टाफ सदस्य झण्डा वंदना एवं राष्ट्र-गीत का सम्मान करते हुये.

दि. 9 और 17 जनवरी, 2018 को बोईसर शाखा, महाराष्ट्र द्वारा आटोमिक एनर्जी सेंट्रल स्कूल क्र.1, 2 और 3 में पुस्तकों का वितरण किया गया.

बैंक के लिये विशेष तौर पर प्रकाशित पुस्तक 12 short stories values for life का वितरण दहानु शाखा द्वारा स्नेहवर्धक मण्डल, नरपड संस्था के अ. ज. म्हात्रे हायस्कूल, नरपड़ में दि. 19-01-2018 को किया गया. शाखा की ओर से शाखा प्रबंधक, नरेश घायवत और अन्य अधिकारी उपस्थित रहे.

दि. 11 जनवरी 2018 को प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री राजकिरण रै जी. के क्षे.का., मुंबई (पश्चिम) में आगमन उपरांत आयोजित शाखा प्रबन्धकों की बैठक में श्री रै उपस्थितों को संबोधित करते हुए.

यूनियन हेल्थ ओलंपिक प्रतियोगिता में कोल्हापुर क्षेत्र ने पूरे भारत में दूसरा स्थान प्राप्त किया. इस उपलक्ष्य में क्षे.का., कोल्हापुर में क्षेत्र महाप्रबंधक पुणे, श्री एम. वेंकटेश, आंचलिक विपणन अधिकारी, (श्री कौशिक कुँवर) एवं क्षेत्र प्रमुख (श्री विकास कुमार) द्वारा दि 14.02.2018 को केक काटकर किए गए समारोह का आयोजन.

दि. 30.01.2018 को बैंक की अहमदाबाद टीम ने क्षेत्र महाप्रबंधक श्री सत्यनारायण पथूरी एवं क्षेत्रीय प्रमुख, श्री दीपक कांबले की अगुआई में वेदांत इंटरनेशनल स्कूल, निकोल, अहमदाबाद में स्वच्छता अभियान के तहत प्रांगण की सफाई को अंजाम दिया और स्कूल में स्वच्छता पर एक भाषण प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया.

अहमदाबाद के स्टाफ सदस्यों द्वारा गणतंत्र दिवस के पूर्व दिन 25.01.2018 को स्टाफ सदस्यों द्वारा एकत्र किए गये कंबल, कपडों सहित जीवनयापन की विभिन्न वस्तुओं को मिशनरीज ऑफ चेरिटी होम ऑफ डाइंग एण्ड डेस्टिट्यूट, अहमदाबाद को दान में दिये गये. चित्र में, क्षेत्र महाप्रबंधक, श्री सत्यानारायण पथूरी एवं क्षेत्र प्रमुख, श्री दीपक कांबले सहित अन्य स्टाफ एवं चैरिटी संस्थान के सदस्य मौजूद हैं.

क्षे.का. कोल्हापुर के स्टाफ सदस्यों द्वारा स्वछता जागरूकता सप्ताह मनाया गया.

यूनियन म्यूचुअल फ़ंड, एएमजी द्वारा आयोजित 'सिपएटर्न' प्रतियोगिता में क्षे.का., कोल्हापुर ने निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त किया. इस अवसर पर होटल सयाजी में पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें विपणन अधिकारियों को (श्री एम. वेंकटेश) क्षेत्र महाप्रबंधक, पुणे द्वारा सम्मानित किया गया.

सतर्कता विभाग, केंद्रीय कार्यालय की पहल पर दि. 08.01.2018 को बैंक के लिये विशेष तौर पर मुद्रित की गई पुस्तक 12 Short Stories Values for life का ज़िला परिषद स्कूल, वसई (पश्चिम) के विद्यार्थियों को विद्यावर्धिनी कॉलेज रोड शाखा के शाखा प्रबंधक श्री शोभित प्रकाश श्रीवास्तव एवं स्टाफ सदस्यों द्वारा वितरण किया गया.

दि. 03 फरवरी 2018 को कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व के अंतर्गत नोडल क्षे.का., पुणे द्वारा बाल कल्याण संस्था, पुणे में बच्चों को कंबल दान दिये गए. यह कार्य, क्षेत्र महा प्रबंधक, श्री एम. वेंकटेश; उप अंचल प्रमुख श्री एच एच ठक्कर, क्षेत्र प्रमुख, श्री शैलेश कुमार सिंह एवं अन्य स्टाफ सदस्यों द्वारा किया गया.

दि. 15.01.2018 को राजकोट क्षे.का. के भुज क्षेत्र में एनआरआई ग्राहकों के लिए विशेष बैठक का आयोजन किया गया. इस बैठक में क्षेत्र महाप्रबंधक, अहमदाबाद, श्री सत्यनारायण पथूरी एवं क्षेत्र प्रमुख श्री सी एम गुप्ता के साथ उपस्थित बैंक के एनआरआई ग्राहक.

दि. 07.02.2018 को आंतरिक लोकपाल श्री नंदन श्रीवास्तव ने क्षे.का., मुंबई (पश्चिम) में क्षेत्र के शाखा प्रमुखों को संबोधित किया और बैंक की शिकायत निवारण नीति और बैंकिंग लोकपाल की शिकायतों के संबंध में बातचीत की.

नोडल क्षे.का., पुणे में दि. 26 जनवरी को गणतन्त्र दिवस बहुत ही धूमधाम से मनाया गया, इस अवसर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले स्टाफ सदस्यों के बच्चों को सम्मानित भी किया गया. इस अवसर पर क्षेत्र प्रमुख श्री शैलेश कुमार सिंह, उप अंचल प्रमुख श्री एच. एच. ठक्कर, सुरक्षा अधिकारी मेजर जे. एस. एस. चहल व शाखाओं के सशस्त्र प्रहरियों सहित सभी स्टाफ सदस्य उपस्थित थे.

दि 26 जनवरी 2018 को गणतन्त्र दिवस के अवसर पर क्षे.का., नागपुर में स्वच्छता अभियान कार्यक्रम नागपुर सुधार प्रन्यास के परिसर में किया गया. इस कार्यक्रम में नागपुर क्षे.का. के उप क्षेत्र प्रमुख श्री उत्पल कर, सहायक महाप्रबंधक श्री भोला प्रसाद गुप्ता, सिविल लाइन्स शाखा के सहायक महाप्रबंधक श्री मनोज कुमार, अखिल भारतीय ऑफिसर असोशिएशन महाराष्ट्र यूनिट के अध्यक्ष श्री जगन्नाथ मौदेकर, सुरक्षा अधिकारी, श्री रूपेश कांबले साथ ही क्षे.का. व शाखा के स्टाफ सदस्य उपस्थित थे.

'PROJECT UTKARSH' has been launched in Trivandrum Region on 22.01.2018 by our worthy Field General Manager Shri S.K. Mohapatra in the presence of BPT Head, Shri Diwakar Kamath, DGM (BPT) Shri. Hrishikesh Mishra, AGM (BPT) Shri. Sheshachal Hegde, RO officials and Branch Heads of the region.

दि. 06.01.2018 को श्री ए के दीक्षित (महाप्रबंधक, सीपी एवं एमएसएमई, केन्द्रीय कार्यालय), श्री दिवाकर कामत (उप महाप्रबंधक, बीपीटी प्रमुख, केन्द्रीय कार्यालय) और श्री के पी आचार्य (महाप्रबंधक, अंचल प्रमुख, बेंगलुरु के कर-कमलों से विशाखापट्टणम सरल का उद्घाटन किया गया.

दि. 10.11.2017 को बैंक के 99वे स्थापना दिवस पर क्षे.का., विशाखापट्टणम में **रक्तदान शिविर** का आयोजन किया गया. इस दौरान श्री पी के श्रीवास्तव (मुख्य प्रबन्धक, ऋण) और श्री विशाल छेत्री(सहायक प्रबन्धक, सी आर एल डी) रक्तदान करते हुए.

दि. 07 अक्तूबर, 2017 को हमारे बैंक के मुख्य सुरक्षा अधिकारी ब्रिगेडियर आशुतोष सिरोठिया (सेना मेडल) के बेंगलुरु आगमन पर उनका होटल चांसरे पवेलियन में पुष्प गुच्छ द्वारा स्वागत करते हुए, श्री टाटा वेंकट वेणुगोपाल, उप महाप्रबंधक. साथ में श्री टी.एच.सक्कीर, सुरक्षा अधिकारी, क्षे.का. बेंगलुरु.

दि. 05.01.2018 को विशाखापट्टणम क्षेत्र में प्रोजेक्ट उत्कर्ष का शुभारंभ किया गया. इस अवसर पर श्री के पी आचार्य (महाप्रबंधक, अंचल प्रमुख, बेंगलुरु) क्षेत्र के सभी शाखा प्रमुखों को संबोधित करते हुए और मंच पर विराजमान गणमान्य कार्यपालक (दायें से) श्री सी एम मिनोचा (उप महाप्रबंधक, क्षेत्र प्रमुख), श्री दिवाकर कामत (उप महाप्रबंधक, बी पी टी प्रमुख, केन्द्रीय कार्यालय), श्री ऋषिकेश मिश्रा (सहायक महाप्रबंधक, बी पी टी, केन्द्रीय कार्यालय), और श्री शेषाचल हेगड़े (सहायक महाप्रबंधक, बी पी टी, केन्द्रीय कार्यालय)

क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय, बेंगलूरु द्वारा दि. 07-08 दिसंबर, 2017 को आयोजित सशस्त्र प्रहरियों के पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों के साथ श्री के.पी.आचार्य, महाप्रबंधक (बीच में). साथ में, (बाएँ से) श्री टी.एच. सक्कीर, सुरक्षा अधिकारी, क्षेका, बेंगलूरु, श्री गुरु मरुवल्ली, सुरक्षा अधिकारी, क्षे.का. बेलगावी, श्री टाटा वेंकट वेणुगोपाल, उप महाप्रबंधक, श्री के.एस.एन. मूर्ति, क्षेत्र प्रमुख, क्षे.का. बेंगलुरु, श्री जे.जे.बल, सहायक महाप्रबंधक व श्री बी.एम. सोमय्या, सुरक्षा अधिकारी, क्षे.का. मंगलुरु.

Face in the Union Bank Crowd

Ms. Munmun Banerjee - The Dancing Queen

Supriya Nadkarni
Union Dhara, C.O.

Friends, we all admire the cute babies dancing to any rhythmic tune and appreciate them. We all have a dancing gene within us, but a very few make it to good dancers b'coz they go out of their way to acquire proper training and above all take mammoth pains to practice and sharpen their skill. Meet one such colleague who is presently posted as Branch Manager, Dankuni Branch of Howrah Region. She is Ms. MUNMUN BANERJEE. Coming from a middle class family, she is the only child of her parents - her father, a retired Commandant from Civil Defence and her mother, a home maker. Joining our Bank in 2009 as a Rural Development Officer, she is now a Scale-II Officer and married to Mr. Surajit Biswas, Branch Manager, Deogaon Branch, Azamgarh Region. Every struggling artist inspires her while any rhythm compels her to tap her feet. It is her ardent dream to own a dance studio of her own in near future. Apart from dancing, painting, singing, writing, reading and travelling is her other pastimes. Here, in this candid dialogue with Mrs. Supriya Nadkarni, this artist unveils her journey on dancing floor.

• • • • •

- **Who introduced you to this art field? At what age? Who is your "Guru"?**

I have been dancing since my very childhood. Nobody in particular introduced me to this field. It just came naturally. My grandparents & parents greatly inspired me to carry on dancing. I have been introduced to proper dance training at the age of ten. Before that I used to dance on my own. My first teacher was Mrs Shilpi Ghosh, who trained me in Rabindra Nritya, folk & Bharat Natyam for about six years. Next I took up dancing classes from Mrs Tannistha Chakraborty for two years in Creative & Bharat Natyam.Since last four years, I am learning Western Dance from Mr Suman Chakraborty.

- **Brief us about the art of Dancing.**

Dancing is an ancient form of art. We have references of dance in Hindu mythologies about 'apsaras','kinnars' & 'kinnaris' dancing in the courtyards of heaven (Indra Sabha). 'Nataraj', an incarnation of Lord Shiva is the dancing God of Hindu, introducing the dance form known as 'Tandava'. Dancing female idols were found after the discovery of Harappan & Mohenjo-Daro civilizations. Dance is the linguistic expression of any rhythm. Many classical dance forms have originated in India like Bharat Natyam, Odissi, Kathak, Kuchipudi, Mohiniattyam, Kathakali. Other folk forms like Bihu, Jhumur, Bhaowai, Garba, Ghumar, Santali etc vary from one state to another.

The art is obviously not limited to our Indian subcontinent. There are famous western forms like, Hiphop, salsa, Jazz, Flamingo, Belly, Rumba, Zumba, Lindi hop, Tap dance, Afrojazz etc. The basic difference between contemporary classical & other dance forms is the technique used and the form of music. In this modern era, there has been a substantial shift in the art of dancing from being fanatically classical to much more modernized concepts like creative & contemporary.

- **What is your favourite dance genre?**

In Indian form, 'Kathak' is very close to my heart due to its crisp moves and oomph factor. In western form, I have a penchant for the art of 'Belly dance' since the ancient Egyptian music creates a mesmerizing air and the soft and subtle movements ignite the

magic. 'Contemporary'form of dancing is also one of my favourites since it is an art of storytelling through the finest dance moves. Moreover, in a dance performance, both the interpretation and the message that a dancer can gift his audience through his art.

- **Any special attire is required for the dance?**

  Costume plays a very vital role in dance. It increases manifold the charm of this art. Proper costumes, jewels, hair-do, make-up is very essential to take any dance form to the next higher level.

- **Why music accompaniment is must?**

  Music is the soul of dance. It is inter twined and inter dependent to bring out the Gods & Goddesses within any artist.

- **Who are your idols in this field?**

  I feel that Dance Master Terence Lewis is a complete package. I take him as my idol.

- **How do you prepare yourself for a performance?**

  Before any performance, the occasion and the stage plays a vital role in choosing the dance theme. Next, thorough practice is a must accompanied by a strict diet schedule.

- **What is the difference between a 'solo' performance & a group dance? Which one is difficult? Why?**

  Solo performance, as the name suggests, is performed by a single artist while group performance is one having a group of dancers. Group performance is always difficult since thorough practice and absolute synchronization plays a vital role in the presentation.

- **Is the magic of Indian Classical Dance fading out?**

  This is a sad but naked truth that the essence of Indian classical dance is slowly fading away. This is due to the fact that the new generation youth derive more interest from commercial dance forms. Learning classical dance requires lot of patience and is devoid of the so called 'Bollywood' as well as the 'Western' glamour. It is the pure form of art and requires consistent apprentice.

- **What are the career opportunities for an Indian Classical dance?**

  It is an interesting fact that a classical dancer can easily grab any commercial dance style. This makes it easier for them to shine as choreographers, artists & teachers in all dancing fields. Opportunities are always there. It is only required to be grabbed at the correct moment.

- **What was your most challenging dance routine?**

  Learning western dance form has been a challenging routine for me since I had never tried the form in my childhood days. I am into western dance just for four years. The technique, style & body language of western dance is very different from the conventional classical art form. I am still learning and I have a lot more to learn.

- **Any retirement age for this art form?**

  Artists do not retire. They pass on their responsibility of creation and beautification from one artist to another.

- **Tell us in brief about your "paintings"**

  Besides dancing, I am also into painting from my very childhood. I have learned painting from Mr Saptam Panja. I have again taken up learning painting from Mr Biswanath recently. I have participated in different competitions, exhibitions and also home décor. I have used crayons, water colour, pencils, fabric colours, oil colours for different creations. Oil painting of portraits is one of my favourite creations. I love to paint real subjects, be it a live person or still objects.

- **Also narrate us about your wooden handicrafts & paper flowers making.**

  Beautiful creations can be made using the thin wooden peels that come out during polishing of wooden logs. The peels are given different shapes with scissors and are glued on canvasses, boards, articles like flower vases etc. They look beautiful in their nude neutral woody shades and also can look awesome if painted with colours and glitters.

  Paper flowers are usually made from a special type of paper 'crepe paper'. There is a technique of giving them a typical shape with scissors, glues and metal wires. They look artistic with the matt finish of the paper surface and imitate the freshly bloomed flowers, especially roses.

- **Any message to our readers?**

  Always remember that passion never dies, it may remain dormant. Never stop dreaming and never stop chasing your dreams. Time is always scarce, so make sure that you steal some moments from time.

'Union Dhara' wishes her all the Best in her future dancing & artistic endeavours. More power to her creativity!!

✦✦✦

Our Bank's Football team was placed at the 'RUNNER-UP' position in the 23rd All India Late Prakash Sonkar Memorial Football Tournament 2017 held at Indore, Madhya Pradesh.

Our Bank's Football team was placed at the 'RUNNER-UP' position in the 21st All India "Independence Cup" Football Tournament 2017-18 held at Maihar, Madhya Pradesh.

Our Bank's Football team was placed at the 'RUNNER-UP' position in the MDFA Invitation 111th Nadkarni Cup Football Tournament 2018 held at RCF Sports Complex, Chembur, Mumbai.

Mentality and Physicality of Women

Veena Shenoy
NRO, Bengaluru

Swami Vivekananda has rightly said *There is no chance for the welfare of the world unless the condition of woman is improved. It is not possible for a bird to fly on only one wing.*. This Swami Vivekananda's quote shows the importance of women in our society. The Swami also said that no country will progress if it does not respect the women. India is a country where women are worshipped in the form of Devi and Goddess and at the same time abused in various ways. It is an irony that a country whose Defence Minister is a woman, tops among the countries which abuse women in various ways.

Many a times we have debates wherein there are arguments as to who is superior, man or woman. According to me for smooth functioning of a society, for a happy family and also for development of a nation the men and women have to be treated equally in all respects. This is mentioned even in our mythology where Lord Shiva is referred to as Ardhanaresshwara. Ardhanarishvara represents the mixture of masculine and feminine energies of the universe and illustrates how Shakti, the female principle of God, is inseparable from Shiva, the male principle of God.

On woman's day there will be celebrations and functions to honour the successful women and women entrepreneurs and women who have excelled in various fields of life. According to me, Women's day in actual terms is when we respect and empower our women.Of late we see many women organisations which are fighting for entry into various Hindu temples where women are forbidden to enter as per tradition. Hence as woman I request women activists (including those activists who are fighting for women's entry in various temples) to fight for the rights of women and ensure that the women in our society are protected, especially poor and helpless girls who are usually victims of sexual abuse, prostitution and trafficking. Poor and helpless girls usually fall victims to flesh trade, dance bars and are forced entry into these immoral activities due to poverty and lack of education. The day our society empowers and protects girls and women, the society can be called an enlightened one, not by merely earning an entry in a temple or by breaking age old traditions.

On women's day I would also like to ask some questions. Aren't the women equally guilty in case of burning a bride /woman in case of dowry deaths.? Isn't it the mother-in law and sisters –in-law who help other men of the house to burn a woman. How many advertisements (especially in case of Insurance products) show that the insurance money /parents savings is for the education of the daughter or in case of death of the sole bread winner? It is usually for the education of the sons and marriage expenses of the daughter. How many times do we say *fallen men*? It is always the *fallen women*. Instead of waiting for the leaders and politicians to change our fate, the women should work together and change our/ society's attitude towards women by empowering women. As Mrs. Sudha Murthy has rightly said in her book *Wise and otherwise* there is so much misery and gloom but it is better to light a single candle than to remain in darkness.

✦✦✦

मॉडलिंग-विज्ञापन-फिल्म में महिला

प्रणिता कोठावदे
सतर्कता
विभाग, केंका

अक्सर ऐसा कहा जाता है कि हमारा भारत पुरुष प्रधान समाज है, परंतु आज के आधुनिक समाज में महिलाओं के योगदान एवं सामाजिक विकास व उत्थान में उनकी भूमिका को देखते हुए यह कहना शायद अतिशयोक्ति नहीं होगी कि वर्तमान युग में भारतीय महिलाएं अपनी घरेलू भूमिकाओं से बाहर निकलकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी एक विशिष्ट पहचान स्थापित कर चुकी हैं. इन्दिरा नुई, कल्पना चावला, अरुंधती भट्टाचार्य, प्रियंका चोपड़ा, चंदा कोचर जैसी अन्य अनेक भारतीय महिलाएं इस कथन को सत्य साबित करती हैं.

आज भारतीय महिला न सिर्फ आर्थिक और सामाजिक विकास के लंबे सफर को तय कर पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिला रही हैं, बल्कि मीडिया, फिल्म और विज्ञापन जगत में भी महिलाओं ने अपना अतूलयनीय स्थान बना लिया है. चाहे कार बेचना हो या टूथपेस्ट, खाने पीने का सामान हो या होमलोन हर चीज़ को बेचने के लिए विज्ञापन उद्योग महिलाओं का ही सहारा लेता है. स्टार स्पोर्ट्स का विज्ञापन 'चेक आउट माइ गेम' महिलाओं को घूरने वालों को करारा जवाब देता प्रतीत होता है. इसमें देश की प्रमुख महिला एथलीटों को अपना-अपना खेल खेलते दिखाया गया है, जहां साइना नेहवाल कहती हैं 'मेरी सर्विस देखो', तो मेरी कॉम कहती हैं 'मेरा पंच देखो', तो कोई एथलीट कहती हैं 'मेरा खेल देखो'. यह विज्ञापन महिलाओं के प्रति हमारे समाज के स्टीरियोटाइप रवैये को एक जोरदार पंच मारता है.

भारतीय सिनेमा जगत प्रारंभ से ही पुरुष प्रधान रहा है और भारतीय फिल्मों के पटकथा साहित्यकारों की मानसिकता प्रारंभ से ही भारतीय पुरुषों के पौरुष पर आधारित रही. ऐसे में धीरे-धीरे समाज में अपनी वर्चस्व की अमिट छाप छोड़कर अपनी सशक्त पहचान को स्थापित करना भारतीय महिलाओं की एक ऐसी प्रगति है, जो विश्व के सभी मनुष्यों के लिए अनुकरणीय है. आज की भारतीय नारी पूर्व में प्रचलित अनेक सामाजिक कुरीतियों जैसे दहेज प्रथा, पर्दा प्रथा, लिंग परीक्षण, गर्भपात, लड़कियों हेतु दोहरे मानदंडों, लैंगिक भेदभाव आदि को मिथ्या साबित कर देश की प्रगति में समानुपात में योगदान दे रही है.

आज बॉलीवुड सुपरस्टार माधुरी दीक्षित को 52 साल की उम्र में भी दुनिया की सबसे खूबसूरत महिलाओं में से एक माना जाता है. यहां तक कि उनकी वैसी तस्वीरें भी हमारे सामने होती हैं, जो बिलकुल वास्तविक होती हैं. 80 साल की उम्र में भी अमरीकी लेखक और मॉडल जोन डिडियन मॉडलिंग करती हैं. आज फैशन कारोबार अरबों-खरबों रुपयों का है, जो पूरी तरह महिलाओं के मॉडलिंग और विज्ञापन पर ही आश्रित है.

सिनेजगत और मीडिया भी आज पुरुष समाज का मोहताज न होकर लिंग समानता का साक्षी बन रहा है. आज महिला प्रधान सिनेमाओं का भी निर्माण किया जा रहा है, जिसमें विकास व प्रगति में महिलाओं के योगदान का चित्रण किया जा रहा है. इन सिनेमाओं से न सिर्फ हमें महिलाओं के सशक्त किरदारों का नमूना देखने को मिलता है, बल्कि इनसे हमें हमारे समाज के विकास में महिलाओं की भूमिकाओं के महत्व के बारे में भी जानने का अवसर प्राप्त होता है.

महिलाओं का काम करने का तरीका, सोचने का तरीका, व्यवहार आदि सब पुरुषों से अलग है. इन्हीं तथ्यों को माना जाये तो हम यह कह सकते हैं कि महिलाएं शारीरिक रूप से तथा मनोवैज्ञानिक तरीके से पुरुषों के बराबर नहीं हैं. पर महिलाएं पुरुषों से पीछे भी नहीं हैं.

ब्रिघम यंग की एक प्रसिद्ध कहावत है कि 'अगर आप एक आदमी को शिक्षित कर रहे है तो आप सिर्फ एक आदमी को शिक्षित कर रहे हैं पर अगर आप एक महिला को शिक्षित कर रहे हैं तो आप आने वाली पूरी पीढ़ी

को शिक्षित कर रहे हैं'. महिलाएं परिवार बनाती हैं, परिवार घर बनाता है, घर समाज बनाता है और समाज ही देश बनाता है. इसका सीधा सीधा अर्थ यही है कि महिलाओं का योगदान हर जगह है.

✦✦✦

अर्पिता पाण्डे
क्षे.का., रायपुर

मॉडलिंग - विज्ञापन फिल्म में महिलाएं

भारतीय संस्कृति में नारी को बहुत महत्व दिया गया है. संस्कृत में एक श्लोक है– 'नार्यस्तु यत्र पूजयंते, रमन्ते तत्र देवता' अर्थात जहां नारी की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं. विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के प्रति सम्मान, प्रशंसा और प्यार प्रकट करते हुए 8 मार्च को पूरे विश्व में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है. अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का महत्व आज सिर्फ महिलाओं को पुरुष सहयोगियों द्वारा फूल भेट करने या विशेष लंच का आयोजन करने तक सिमट कर रह गया है. सामान्य तौर पर हम एक दिन महिलाओं के नाम समर्पित कर अपने कर्तव्य का निर्वाह कर लेते हैं. लेकिन वास्तविक महिला दिवस तो फैशन, विज्ञापन एवं फिल्म इंडस्ट्री की दुनिया में मनाया जाता है. इस कारोबार ने जितना महिलाओं को महत्व दिया है, उतना शायद ही किसी ने दिया है.

मॉडलिंग में महिलाएं:

मॉडलिंग की दुनिया आज खासी बदल चुकी है. इसमें नेम और फेम के साथ-साथ पैसा भी है. यही वजह है कि आज इस क्षेत्र में महिलाएं अपना कैरियर तलाश रही हैं और सफल भी हो रहीं है. आज फैशन कारोबार में महिलाओं को उनके वास्तविक रूप में दिखाने का प्रचलन बढ़ता जा रहा है. मॉडलिंग, बॉलीवुड में कैरियर बनाने वालों के लिए एक लॉंचिंग पॅड बन गया है. महिला मॉडलों की सबसे ज्यादा डिमांड गारमेंट एवं ब्यूटी प्रोडक्ट उद्योगों में होती है.

विज्ञापन में महिलाएं:

महिलाएं हमेशा से विज्ञापन का एक महत्वपूर्ण अंग रही हैं, चाहे वह घरेलू वस्तुओं का प्रचार हो चाहे पुरुषों की रोज़मर्रा की जरूरत की वस्तुओं का प्रचार. महिलाओं को हमेशा से ही विज्ञापन में एक प्रभावशाली यंत्र की तरह इस्तेमाल किया गया है. चाहे वॉशिंग पाउडर हो, बालों के लिए तेल, शैम्पू, फ़ेस क्रीम या प्रेशर कुकर जैसे उपकरण. तमाम विज्ञापनों के जरिए महिलाओं को आकर्षित किया जाता है. विज्ञापन इंडस्ट्री में महिलाएं उपभोक्ता के रूप में बहुत महत्वपूर्ण बन गई हैं. टूथपेस्ट बेचना हो या खाने-पीने का सामान या कपड़ों का विज्ञापन. हर चीज बेचने के लिए विज्ञापन जगत महिलाओं का ही सहारा लेता है. आज फैशन कारोबार अरबों-खरबों रूपये का है, जो पूरी तरह से महिलाओं के विज्ञापन पर ही आश्रित है.

शुरुआती दौर में विज्ञापनों में महिलाओं को एक पत्नी और माँ के रूप में ही देखा जाता था. उसे पारंपरिक रूप से विज्ञापन में प्रस्तुत कर लगभग हर उत्पाद का प्रचार किया जाता था. परंतु उसका चित्रण भी समय के साथ परिवर्तित होता चला गया. जैसे अस्सी के दशक के सर्फ के विज्ञापन की समझदार गृहिणी, नब्बे के दशक में कैडबरी के प्रचार में, क्रिकेट मैदान पर खुलकर नाचती महिला या फिर स्कूटी या कार बेचती महिलाएं. विज्ञापनों में महिलाओं को भिन्न-भिन्न रूप में प्रस्तुत किया गया है. कई प्रस्तुतिकरण हमारी संस्कृति के अनुकूल होते हैं तो कई पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित. परंतु महिलाओं के प्रस्तुतिकरण से उत्पाद की बिक्री पर खासा असर पड़ता है. इक्कीसवीं सदी में विज्ञापनों ने एक नया रूप ले लिया है. एक कार के विज्ञापन में चार महिलाएं पहली बार सक्रिय रूप से कार चलाती और बेचती नजर आईं. फेयरनेस क्रीम के क्या कहने? वह तो सभी औरतों को गोरा करने में तूली है. विज्ञापनों में महिलाओं के दो रूप दिखाई देते हैं. एक तो पूर्णतः बाजारवाद, जिसमें महिला का उत्तेजक व अश्लील रूप मिलता है और दूसरा पूर्णतः पारम्परिक. अश्लीलता से भरे विज्ञापनों के कारण भारतीय सांस्कृतिक मूल की जड़ें टूटने लगी हैं. दुर्भाग्य जनक स्थिति तो उस समय देखने को मिलती है जब विज्ञापन के लिए नारी शरीर का उपयोग उन वस्तुओं को दिखाने में किया जाता है जिनसे नारी का दूर-दूर तक कोई रिश्ता नहीं होता. अश्लील विज्ञापनों से नारी का सम्मान तो कम होता ही है साथ ही साथ नैतिक मूल्यों का भी पतन होता है. विज्ञापनों को तो समाप्त नहीं किया जा सकता लेकिन उन्हें सामाजिक सरोकार से जोड़कर लाभकारी व कल्याणकारी बनाया जा सकता है. इसकी ज़िम्मेदारी कंपनी की तो है ही, उससे कहीं ज्यादा स्वयं नारी की भी है. वह चाहे तो ऐसे अश्लीलता परोसने वाले विज्ञापनों में काम करने से इंकार करके अपना फर्ज पूरा कर सकती है.

फिल्मों में महिलाएं:

फिल्में हमारी संस्कृति की परिचायक रही हैं. क्योंकि फिल्मों ने संस्कृति के विषयों को उठाकर पर्दे के माध्यम से हमेशा से चित्रित किया है. फिल्मों ने माँ की ममता, भावनात्मक बहन, प्यारी पत्नी के जीवन को न्यौछावर कर देने वाली स्त्री चरित्रों को चित्रित किया है. जहां वह क्रोधित होती हैं, टूटती हैं, बिखरती हैं और कभी संघर्ष के लिए खड़ी हो जाती हैं. ऐसी है हमारी हिन्दी फिल्मों की संस्कृति. पुरुष प्रधान समाज में कुछ ऐसी फिल्में बनी हैं जो महिलाओं पर केन्द्रित हैं. इन फिल्मों ने महिलाओं को सशक्त बनाया है. 20वीं सदी की शुरुआत में महिलाएं फिल्मों में काम करने के लिए तैयार नहीं थीं. लेकिन फिल्मों में नारी की मौजूदगी के बिना परदे पर जीवन को दिखाना मुमकिन नहीं था. लेकिन समय के साथ महिलाओं ने भी फिल्मों में काम करना शुरू किया एवं नायकों को चुनौती दी. फिल्मों में महिलाओं के वर्चस्व को देखते हुए निर्देशकों ने नायिका प्रधान फिल्में बनाईं. पचास और साठ के दशक में मीनाकुमारी की लोकप्रियता का आलम यह था कि उन्हें न सिर्फ नायकों से ज्यादा पैसा मिलता था बल्कि फिल्मों के प्रचार में उनका नाम नायकों से पहले दिया जाता था. 70, 80 और 90 के दशक में नायिकाओं का अभिनय और रहन-सहन इतना स्वाभाविक था कि वे सिनेमा के नारी पात्र न लगकर समाज से सीधे आये हुए लगते थे. ये नायिकाएँ अपने अधिकारों के लिए सामाजिक व्यवस्था और उसके ठेकेदारों से टकरा जाती थीं. इन फिल्मों और उनके नारी पात्रों ने औरतों को एक नई शक्ति से भर दिया. 21वीं सदी के आते-आते महिलाओं ने अपनी एक अलग पहचान बना ली थी. अब नायिकाओं पर आधारित फिल्में बनने लगी थीं. 'लज्जा', 'चाँदनी', 'नो वन किल्ड जेसिका', 'मर्दानी', 'चक दे इंडिया' आदि ऐसी तमाम फिल्मों से महिलाओं ने अपने अभिनय का लोहा मनवा लिया. फिल्मों में महिलाओं ने अपना हुनर निर्देशन में भी आजमाया. फरहा खान की 'मैं हूँ ना', जोया अखतर की 'जिंदगी ना मिलेगी दोबारा', रिमा कातकी की 'तलाश', किरण राव की 'धोबी घाट' जैसी फिल्मों को अपार सफलता मिली.

निष्कर्ष यही है कि नारी की जगह मात्र चारदीवारी नहीं है. नारी अब पवन की तरह मुक्त है. सुगंध के समान स्वच्छंद है. सभी क्षेत्रों के द्वार उसके लिए पूर्ण रूप से खुले हैं. इसमें विज्ञापनों एवं फिल्मों की भूमिका भी अहम है. फिल्मों ने नारी को सफलता की ऊंचाइयां छूने का मौका प्रदान किया है. उसे एक नई पहचान दी है. उसमें आत्मविश्वास जागृत किया है.

'मानव कंप्यूटर' – शकुंतला देवी

एन वी एन आर
अन्नपूर्णा,
विजयवाड़ा

शकुंतला देवी, जो गणित को ही अपना जीवन समझ कर जीती हैं. गणित रूपी इनकी जिंदगी की शुरुआत उनके तीन साल की उम्र में ही हो चुकी थी जो मौत के बाद ही जुदा हुई. शकुंतला देवी बचपन से ही अद्भुत प्रतिभा की धनी एवं गणितज्ञ थीं. संख्यात्मक परिगणना में गजब की फुर्ती और सरलता से हल करने की क्षमता होने के कारण वह 'मानव कंप्यूटर' नाम से विख्यात हुईं. उन्होंने अपने समय के सबसे तेज माने जाने वाले कंप्यूटरों को गणना में मात दी थी. गणित की गणनाएँ पलक झपकते ही कर लेने में माहिर शकुंतला देवी का जन्म 4 नवंबर, 1929 को बेंगलूर में एक रूढ़ीवादी कन्नड ब्राह्मण परिवार में हुआ था.

शकुंतला देवी के पिताजी एक सर्कस कंपनी में काम कर जीविका चलाते थे. उनके परिवार की आमदनी उस समय बहुत कम होने के कारण वे औपचारिक शिक्षा भी नहीं ले पाईं तथा स्कूल की पढ़ाई बीच में ही छूट गई. उस तरह की तकलीफें भी शकुंतला की प्रतिभा को रोक नहीं पाई. वह तीन साल की उम्र में जब अपने पिता के साथ ताश खेलती थी तो हर एक बार वह अपने पिता को हरा देती थी. उनके पिता को ताज्जुब हुआ कि 'कैसे कोई इतनी कम उम्र में ताश के क्रम को याद रखकर आगे की चाल समझ सकता है.' उनके पिता को यह भी आशंका हुई कि कहीं उनकी बच्ची उन्हें धोखा तो नहीं दे रही है. बिना कोई शिक्षा ग्रहण किये ही जब वह आसानी से गणित के बड़े से बड़े हिसाब चुटकियों में कर लेती थीं तब उनके पिता को बेटी शकुंतला की मानसिक योग्यता एवं क्षमता का पता चला. शकुंतला देवी की असामान्य स्मरणशक्ति एवं गणित की प्रतिभा का पता चलने के बाद उनके पिता ने सर्कस की नौकरी छोड शकुंतला देवी पर सार्वजनिक कार्यक्रम आयोजित करना आरंभ किया.

छः साल की उम्र में पहली बार शकुंतला देवी ने मैसूर विश्वविद्यालय में अपनी हिसाब और मानसिक गणित हल करने की प्रतिभा का प्रदर्शन किया. बाद में वह प्रदर्शन के लिए अन्नामलाई विश्वविद्यालय एवं उस्मानिया विश्वविद्यालय गईं. 1944 में जब उनकी उम्र 15 साल की थी, उस समय अपने पिता के साथ लंदन चली गईं तथा वहाँ बहुत सी संस्थाओं में अपनी प्रतिभा एवं कला का प्रदर्शन किया. 5 अक्तूबर, 1950 को बीबीसी चैनेल ने शकुंतला देवी के साथ अपना एक कार्यक्रम आयोजित किया. कार्यक्रम के समय होस्ट लेस्ली मिचेल ने उन्हें हल करने के लिए अंकगणित का एक जटिल सवाल पूछा तो शकुंतला देवी ने कुछ ही सेकेंडो में जवाब दे दिया. लेकिन शकुंतला देवी द्वारा प्रस्तुत उत्तर को पहले तो गलत माना गया लेकिन पुन: गणना करने के बाद शकुंतला देवी के उत्तर को सही माना गया और यह खबर पूरी दुनिया में तेजी से फैल गयी और शकुंतला देवी को 'मानव कंप्यूटर' की उपाधि दी गयी. शकुंतला देवी अपने दिमाग में गणना करने में बहुत तेज थी. अनेक बार कुछ ही सेकेंडो में बड़े-बड़े आकलन करके उन्होंने विशेषज्ञों को हैरान कर दिया, जिससे राष्ट्रीय मीडिया सहित अंतर्राष्ट्रीय मीडिया में उन्हें पहचान मिलने लगी.

"गणित के बिना आप कुछ नहीं कर सकते हैं. आपके चारों ओर जो है, वह अंक, संख्या एवं गणित ही है"

शकुंतला देवी की इस अद्भुत क्षमता को हर कोई परखना चाहता था. 1977 में दक्षिणी विश्वविद्यालय, डल्लास में सथरन मेथोडिस्ट यूनिवर्सिटी के लोगों ने शकुंतला देवी को आमंत्रित किया और इसी दौरान उन्हें अमेरिका जाने का मौका मिला. डल्लास में उनका मुकाबला आधुनिक तकनीकों से लैस यूनिवैक कंप्यूटर से हुआ. उन्हें 201 अंकों की एक संख्या का 23वां वर्गमूल निकालना था. यह सवाल शकुंतला देवी ने बिना कागज कलम के सिर्फ 50 सेकेंडो में हल किया जबकि यूनिवैक ने इसके लिए 62 सेकेंडो का वक्त लिया. लेकिन शकुंतला देवी का जवाब सही या गलत है यह जानने के लिए अमेरिकन ब्यूरो आफ स्टैंडर्ड संस्था को यूनिवैक 1101 कंप्यूटर में एक विशेष प्रोग्राम को तैयार करना पड़ा, जिससे यह पता चला कि शकुंतला देवी ने उस समय के आधुनिक कंप्यूटरों को बारह सेकेंड से मात दे दी थी.

अपनी प्रतिभा को साबित करने के लिए 1980 में शकुंतला देवी को दुनिया के सबसे प्रतिष्ठित लंदन के इंपीरियल कॉलेज में बुलाया गया. यहाँ भी उनका

मुकाबला एक कंम्प्यूटर से हुआ. उन्हें 13 अंकों की दो संख्याओं (7,686,369,774,870 को 2,465,099,745,779 से) का गुणनफल निकालने का काम दिया गया और यहाँ भी उन्होंने सिर्फ 28 सेकेंड में उत्तर देकर अपने आप को कंम्प्यूटर से भी तेज साबित किया. उनकी इस उपलब्धि को 'गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स' के 1982 एडिशन में जगह दी गई. अमेरिका में यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, बेवर्ली के मनोविज्ञान प्राध्यापक अरथर जेनसन ने 1988 में शकुंतला देवी के ज्ञान की उपलब्धियों का अध्ययन किया. अनेक मुश्किल सवालों को जेनसन द्वारा कागज पर लिखने से पहले ही बहुत कम समय में शकुंतला देवी समाधान कर सबको अचरज में डाल देती थीं.

शकुंतला देवी केवल गणित में ही विशेषज्ञ नहीं थीं बल्कि एक अच्छी लेखिका के रूप में भी उन्होंने गणित, वैज्ञानिक अंकों एवं पहेलियों के बारे में अपने लेखों में लिखा है. अपने मानसिक हिसाब के कामों को बढ़ावा देने के साथ ही उन्होंने ज्योतिषशास्त्र पर भी बहुत सी किताबें लिखी हैं. उनकी प्रमुख रचनाएँ 'फन विद नंबर्स', 'एस्ट्रोलजी फॉर यू', 'पजल्स टू पजल्स यू', 'मैथब्लीट', आदि हैं. साथ ही 1977 में उन्होंने भारत में पनप रही समलिंगी कामुकता के बारे में भी अपनी किताब 'दी वर्ल्ड ऑफ होमोसेक्सुअल' में लिखा, जो समलिंगी कामुकता पर लिखी गयी पहली किताब थी.

1969 में फिलिपिन्स विश्वविद्यालय ने उन्हें 'मोस्ट डिस्टिंग्विश्ड वुमन ऑफ दी इयर' का दर्जा देकर सम्मानित किया. 1988 में वाशिंग्टन डीसी ने उन्हें 'रामानुजन गणित ज्ञाता' का पुरस्कार दिया. शकुंतला देवी 1980 में लोकसभा चुनाव में स्वतंत्र रूप से दक्षिण बॉम्बे और आन्ध्र प्रदेश के मेदक से इंदिरा गाँधी के खिलाफ खड़ी हुईं लेकिन वे चुनाव में हार गईं.

गणित में अगणित प्रतिभा की धनी शकुंतला देवी की मौत 83 साल की उम्र में 21 अप्रैल, 2013 को बेंगलूरु के एक अस्पताल में किडनी और दिल में भारी कमजोरी होने की वजह से हुई. उनके 84वें जन्मदिन के अवसर पर गुगल ने अपने डूडल को इनके नाम पर करते हुए सम्मानित किया था. गुगल खोलने पर शकुंतला देवी के मुस्कुराते हुए चेहरे के साथ डिजिटल नंबर्स में गुगल लिखा आता है. ऐसी पहचान पानेवाले बहुत कम भारतीयों में से शकुंतला देवी एक हैं. ✦✦✦

शिखर की ओर...

उच्च कार्यपालक वेतनमान VII में पदोन्नति पर हार्दिक बधाई!!

श्री अतुल कुमार श्रीवास्तव
महाप्रबंधक

उच्च कार्यपालक वेतनमान VI में पदोन्नति पर हार्दिक बधाई!!

श्री ओम प्रकाश बालोदी
उप महाप्रबंधक

श्री गोकुलानन्द दास
उप महाप्रबंधक

हम आपके नेतृत्व में बैंक के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं.

शुभमस्तु...

उच्च कार्यपालक वेतनमान VI में पदोन्नति पर हार्दिक बधाई!!

श्री प्रणब कुमार साहा
महाप्रबंधक

श्री शिशिर कुमार चंद्रा
उप महाप्रबंधक

हम आपके सुखद एवं सक्रिय सेवानिवृत्त जीवन की कामना करते हैं.

WOMEN
AS DOMESTIC WORKER & BREAD EARNER

Ekta Khatri
BPT, CO, Mumbai.

We "WOMEN" never think of our pains, health issues, mindset, heart nothing; the only thing that bothers us is that our family should be happy- be it office or home.

The time has come to realise that we "WOMEN" are not only the bread makers but if time demands can mould ourselves in the role of bread earners as well. We not only limit ourselves to domestic work at home i.e. washing clothes, utensils, cleaning house, prepare food, take care of family members & children, entertain the guests whether invited or the "BIN BULAYE TYPES" etc etc., the list goes on..It's never ending. You say it and the work is done by a lady; be it a mother, daughter, wife, friend or employee in any role. We "WOMEN" never think of our pains, health issues, mindset, heart nothing; the only thing that bothers us is that our family should be happy- be it office or home. Now-a-days though the time is changing, many lady employees opt for higher promotions in career but that does not mean that they don't care or worry about their family or they don't fulfil their household duties; it's just that we "WOMEN" are helping our family, our children that they get a better lifestyle better life that we as kids could not get. We always want to give our children more & more so that they don't face any difficulties in life. Again we as WOMEN have proven better administrators & managers as our skills are in-built or you can say it's in our genes. You need not teach WOMEN how to take care of office or home. She will strive hard to make the office atmosphere like home & make sure that office becomes the 2nd home for employees as they spend maximum time of their day here. There will always be an emotional touch in whatever she does, be it a decision taken in office as manager or a decision at home. In office also sometimes we WOMEN play many roles. We sometimes are a boss, a guide, a friend or a listener for our employees. Sometimes by just talking to a women & discussing issues (official/ unofficial); problems get solved. Many females connect to images of ARUNDATTI BHATTACHARYA or CHANDA KOCHAR of our Banking fraternity. Basically only one question is asked to them, how do they handle work life & home life both? But if we are put in those situations even we can answer those questions. So it's just a lady needs to be put in any situation & she can fight back or in other words come out with flying colours. Because patience & perseverance are there in her blood/genes. God has made her his marvellous creation & it is also said that "GOD CANT BE EVERYWHERE SO HE MADE MOTHER" & we WOMEN as leaders take care of our people as children only. Just by opting for career over family does not mean we are emotionless or bad mothers or bad wives or bad daughter-in-laws. It's just that those who take this road in life are more courageous to face the difficulties in life rather than sitting in one place & seeing the same picture again & again. It may sound harsh but sometimes even we WOMEN suppress our inner feelings & listen or come in influence of our family or friends or peers. I am sure all "WOMEN" are capable enough to handle any responsibility or difficulty or any situation in life. Just listen to your inner voice; it's the one that will never leave you. People will come and go, no-one is going to stay forever; but your inner conscience will always be with you even when your shadow leaves you in darkness. Men should feel fortunate to have WOMEN in their lives that can support them in all spheres of life- financial/emotional/difficult scenarios and not like them who only support in bringing the money for bread. WE AS WOMEN KNOW HOW TO BRING THE BREAD & ALSO HOW TO EARN IT AS WELL.

We say that the world is changing बेटी पढ़ाओ बेटी बढ़ाओ, मुलगी शिकली प्रगति झाली But are we really following it? I think each one should ask this question to oneself. Did our parents think of us as a Liability? No, Not at all. You all agree, Right? Then why not be the change, bring the change and live the change!!!! We all have it in us; don't suppress your emotions. You alone are ONE MAN ARMY..OOPS Sorry ONE WOMEN ARMY. Indira Gandhi ruled over India & though Manmohan Singh was the Prime Minister during Congress Rule but the lady behind him as we all know, Mrs Sonia Gandhi. We all may or may not be the QUEEN to our husbands but we definitely are the PRINCESSES to our parents. So never underestimate yourself, never lose hope and most importantly never give up.

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती

At least give it a try for our parents no matter what happens, don't worry about the final result. Parents are always there to support us in any circumstance because they only want a smile on our face. My strength is my DAD, whatever I have written is the experience that I learnt in my life with the teachings (added essence) of my father. Be your own strength and never depend on others.

✦✦✦

महिला – मानसिकता

भावना सोनकुसले
क्षे.का.जबलपुर

भारत जैसे पुरुष प्रधान देश में सदियों से परिवारों में पुरुषों का ही राज चलता आ रहा है. यहाँ परिवार में कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय लेना हो वहाँ पर पुरुषों की मनमानी चलती है. घर में कौन क्या पढ़ेगा, किसे कितनी सुविधा देनी है, किसकी इच्छा पूरी करनी है, किसकी नहीं, किसे छूट देनी है, किसे दबाके रखना है, किसे कितना पढ़ाना है इत्यादि. यह सारे कार्य पुरुषों की सलाह से एवं उनके कहे अनुसार ही होते आए हैं, घर का पालन पोषण कर्ता जो है.

परिवार को एक साथ या एक ही माला में पिरोये रखना है तो कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय लेने से पहले परिवार के हर सदस्य की राय जानना, उनकी मर्ज़ी एवं उनकी इच्छाओं का ख्याल रखना जरूरी होता है. कम से कम जिस व्यक्ति का भविष्य उस निर्णय पर निर्भर करता है उस व्यक्ति की राय जानना ही चाहिए. चाहे वह लड़का हो या फिर लड़की.

समाज में कई बार देखने को मिलता है कि जहां एक महिला/ लड़की पर अन्याय हो रहा हो जैसे कि अपने ही बेटी की शिक्षा पर रोक लगा दी हो, तो क्या उसकी माँ का या बड़ी बहन का यह फर्ज नहीं बनता कि एक बार वह अपनी बेटी/ बहन की इच्छा जाने कि वह क्या चाहती है और बात को समझकर उसका पक्ष लें व उसकी तरफ से पिताजी से या फिर घर के बड़े व्यक्ति से बात करे. क्यों हम हिम्मत नहीं जुटा पाते हैं. एक बार सिर्फ एक बार अपनी बात कहने की कोशिश तो करें, बस यही वो बात है जो हम करने से चूक जाते हैं और तुम्हारी पढ़ाई क्यों जरूरी है, तुम्हारी पढ़ाई से इस परिवार को फायदा है यह बात उस लड़की को समझाने में लग जाते हैं.

जहा संयुक्त परिवार रहता है वहां तो और ज़्यादा बंदिशे रहती हैं, वहां पर तो चाचा, ताऊ, दादा इन सब लोगों की अटकले, घर की बहू/बेटियों को झेलनी पड़ती हैं. पूरा परिवार महिलाओं को चैन की सास लेने नहीं देता. ये मत करो तो वो मत करो, घूँघट डाल के रखो, ज़्यादा हंसना मना है, बड़े लोगो के सामने बोलना तक मना होता है. ऐसे में घर की कोई बुजुर्ग महिला अगर सामने से इस बात का विरोध करे तो हो सकता है कि बाकी लोग भी इस बारे में सोचना चालू करें एवं पुराने रीति रिवाज छोड़कर नए जमाने के साथ चलना सीखें.

ज्यादातर घरेलू हिंसा का कारण महिलाओं का महिलाओं के खिलाफ होना ही माना जाता है. घर में जब नई बहू से मारपीट हो रही हो, उस पर अन्याय हो रहा हो, उसे जली कटी सुनाई जा रही हो, दहेज के लिए प्रताड़ित किया जा रहा हो तो अक्सर यह पाया जाता है कि घर की बाकी महिलाएं तेल में घी डालने का काम करती हैं या तमाशा देखती हुई नज़र आती हैं. जबकि एक महिला होने के नाते आपका यह फ़र्ज़ है कि उस महिला के साथ खड़े हो या उसे बचाने की कोशिश करें. यहां पर वह महिला जिस पर अत्याचार हो रहा है वह अगर कानून का सहारा लेना चाहे तो भी वह ऐसा करने के लिए सोचती है क्योंकि घर की सारी महिलाएँ उसके खिलाफ हैं.

आज देश भर की ज्वलंत समस्या है कन्या भ्रूण हत्या, किसी लड़के का माता या पिता बनना है या लड़की का यह निर्णय पूरी तरीके से उस माता पिता पर छोड़ देना चाहिए, जिन्हें उस बच्चे का पालन पोषण करना है. ऐसा करते समय माँ की इच्छा का भी ख्याल रखना चाहिए परंतु यह निर्णय एक तो पुरुष या फिर घर के बड़े लोग ही निर्धारित करते हैं. पर जब भी कोई पुरुष इस बारे में निर्णय लेगा तो वह अक्सर उसकी अपनी वित्तीय परिस्थिति के अनुसार होगा, जब बड़े बुजर्ग करेंगे तो वह खानदान की परंपरा के अनुसार होना चाहिए इस तरह की सोच होगी पर जब माँ कहेगी तो उसके लिए दोनों ही बराबर हैं. चाहे वह लड़का हो या लड़की. क्योंकि वह दिल से निर्णय लेगी. पर जब भी गलत बात की संभावना दिख रही हो तो तुरंत हमें आवाज उठानी चाहिए या जरूरत होने पर कानून का सहारा लेना चाहिए. पर यहीं पर हमारे होठ क्यों सिल जाते हैं? क्यों हम एक कदम पीछे हट जाते हैं? क्यों हम पति की हां में हां मिलाते हैं, क्यों हम उस दर्द को महसूस नहीं कर पाते हैं कि जिसकी जान पर बन आई है वह भी हमारी तरह एक महिला ही है. जिस तरह से हमें पीड़ा होती है ठीक उसी तरह क्या उसे नहीं होती है ?

हम महिलाओं को पहले खुद की पहचान समझनी होगी. समाज में अपनी जगह बनानी होगी. हमें अपने आप को पहचानना होगा. महिला है तो संसार है. वरना ये संसार बेकार है. जब हम बेटियों को समझाये तो यह नहीं समझायें कि वह इस दुनिया मे सिर्फ सहन करने के लिए आयी हैं. पति की सेवा करने के लिए हैं. बुजुर्गो की परंपराओ को आगे बढ़ाने के लिए आई हैं. हमेशा ही त्याग करने के लिए हैं बल्कि उसे उसके अधिकारों के बारे में बताएं, अन्याय के खिलाफ लड़ने के लिए एवं अन्याय ना सहन करने के लिए प्रोत्साहन दें, महिलाओं को अपनी मानसिकता बदलनी होगी और यह काम एक स्त्री होने के नाते आप ही कर सकती हैं, यह ज़िम्मेदारी महिलाओं को ही उठानी है. हम अपने बेटियों को ऐसी शिक्षा देना सुनिश्चित करेंगे तो एक सशक्त महिला समाज का निर्माण हो सकेगा जो देश को सतर्क, सशक्त एवं सुदृढ़ बनाएगा.

✦✦✦

Women SHGs

Priti Shire
RO, Baroda

One of the most **successful SHGs** are running a milk business unit. Together the village women of Musaravakkam village were able to buy qualitative milk cows which give **around 10 litres of milk per day**. A part of the fresh milk is offered to the village people. The other milk is been supplied to a government milk farm in **Chennai**. The earned money is going to be invested by the **women into their family's income**, house keeping & new farm machines for their agricultures. Recently these hard working people were selected by the NABARD as an excellent society.

Women are an integral part of every economy. All round development & growth of a nation would be possible only when women are considered as equal partners in progress with men. Empowerment of women is a holistic concept. Since immemorable times women have been collectively struggling against direct & indirect barriers to their self development & their social, economic & political participation. The women's organization started to struggle for women's rights in the early part of the 20th century. The conceptual framework of self help is a tool for empowerment. The Self-Help Group are a potential source to empower & encourage marginalized women to save & utilize savings to build self confidence & self respect, which provides greater access to & control over resources. SHGs help women to establish common platform to solve their problems. Many NGOs are promoting the SHG mechanism & linking it to various other development interventions. Many NGOs have formed women's SHGs with the support from various government programs. NABARD launched a pilot project for linking SHGs in February, 1992. The NABARD gives 100 percent refinance to the Bank's on their lending through the SHGs.

In our country, the pioneer in this field is Self Employed Women's Association started in 1972. Though it started as a Trade Union for women in the unorganized sector, today SEWA boasts of running the first women's Bank in our country. By the year 2000 SEWA has a membership of 209250. The SEWA Bank has 87263 depositors & 41757 borrowers whose loan outstanding as ₹ 887 lakhs 4 as on March 1998. SEWA has also networked many co-operatives in the country. In southern India, some women organizations wise PRADAN, MYRADA, ASSEEFA, MALAR etc. have entered into this rural credit system. PRADAN has a membership of 7000 women who have availed 40000 loans worth ₹ 600000 as on March 1997. MYRADA has 62769 members who have saved ₹ 48 lakhs & availed loan to the tune of ₹ 2.90 crores. MALAR has a membership of 15000 women who have saved ₹ 86 lakhs & availed loan to the tune of ₹ 2.23 crores. MALAR has emerged as a new self-reliant model of our nation. Already 10 districts in Tamilnadu have undergo training at MALAR & started similar SHGs for micro credit.

One of the most successful SHGs are running a milk business unit. Together the village women of Musaravakkam village were able to buy qualitative milk cows which give around 10 litres of milk per day. A part of the fresh milk is offered to the village people. The other milk is been supplied to a government milk farm in Chennai. The earned money is going to be invested by the women into their family's income, house keeping & new farm machines for their agricultures. Recently these hard working people were selected by the NABARD as an excellent society. For their success the bank are going to commend them with an extra financial support. The SHG in Madhya Pradesh's Sakdi village has become an agent of change. They started off as any Self Help Group depositing a small part of their income in a common pool, so that when someone has apressing need for money, this can come handy. They realized that a number of people were going hungry. So, they decided to do something about it. From pooling in money, they graduated to contributing a fistful of food grains to a food bank. This, in turn, helps feed the hungry. Their aim is that no one should sleep hungry in the village. The success of Sakdi village has now become a template for other village to follow. Rupjyoti SHG is a female group at Daloigaon under Central Jorhat Development block. The group was formed in the year 2006 with a membership of twenty women. This SHG's experience

proves how women with the help of the cooperative principles organize themselves to beat proverty & despair.

NABARD is proud to say that the SHG-Bank Linkage Programme which is the largest microfinance programme in the world today touches 10 crore households through more than 85 lakhs SHGs with saving deposits of about ₹ 16114 crore as per Annual Report of NABARD 2016-17.

Total no. of SHGs	Achievement	
	Physical (Nos in Lakhs)	Financial (₹ in crs)
Total no of SHGs Saving linked with Banks	85.77	16114.23
Total no of SHGs Credit linked during 2016-17	18.98	38781.16
Total no of SHGs Loan outstanding as on 31-03-2017	48.48	61581.3
average loan amount outstanding as on March 17	.....	127016.62
Average loan amount disbursed during 16-17	.....	204313.51
Estimated no of families covered upto 31 March 17	1010	.....

(Source: NABARD annual report 2016-17)

NABARD attempted digitization of SHGs under a project called E Shakti to take advantage of the available technology to address the problem of book keeping, capturing the credit history of SHG members, generating SHG grading report based on its financial & non-financial records & making them available to all important stakeholders. Data of 1.3 lakh SHGs has since been digitized shown great increase. SHG-Bank Linkage Programme has traversed 25 years of unabated journey towards empowering the rural women & now covering more than a hundred million rural households.

सफलता की उड़ान

श्वेता सिंह
क्षे.का., पटना

गौरव की भाषा नई सीख, भीख़मंगों की आवाज बदल
सिमटी बाहों को खोल गरुड, उड़ने का अब अंदाज बदल.

कहते हैं ईश्वर उन्हीं की मदद करते हैं जो स्वयं की मदद करते हैं. यह कोई परियों की कहानी या स्वप्न की कहानी नहीं है. यह कहानी है बिहार राज्य के एक छोटे से गाँव की. बहुत ही सामान्य सी दिखने वाली महिलाओं; धनश्री देवी, ऊषा देवी और ललिता देवी की! जिन्हें देखकर सबके मन में यही आता है कि गाँव की गरीब, निर्धन व असहाय महिलाएं हैं. इन्होंने एक ऐसा सपना देखा, जिसे देखना तो सभी चाहते हैं किन्तु पूर्ण करने की हिम्मत और साहस कोई नहीं जुटा पाता. वह काम किया इन्होंने. किसी ने सच ही कहा है कि सपने वह नहीं हैं जो नींद में देखें जाते हैं बल्कि सपने वह हैं जो हमें सोने नहीं देते. इनके गाँव में लोगों को दो जून की रोटी ही जुटा पाना सबसे बड़ी उपलब्धि मानी जाती है और इन्होंने सपना देखा, गाँव के हर घर की खुशहाली और समृद्धि का. जिनके हिम्मत और जज़्बे को सलाम किए बिना रहा ही नहीं जाता है.

गाँव में अधिकतर घरों के पुरुष अपने जीवनयापन हेतु नज़दीक या दूर के शहर की तरफ प्रस्थान कर चुके. गाँव में बची सिर्फ महिलाएँ, वृद्ध पुरुष एवं बच्चे. कहीं से इन्हें स्वयं सहायता समूह के बारे में पता चला. यह सभी अबिलंब अधिक जानकारी हेतु हमारी यूनियन बैंक की बिक्रम शाखा पहुँच गईं. वहाँ इन्होंने शाखा प्रबन्धक से अपनी समस्याएँ तथा अपने जज़्बे के बारे में बताया. शाखा प्रबन्धक ने इन सभी के साथ–साथ गाँव के अन्य लोगों को भी स्वयं सहायता समूह के बारे में बताया तथा समझाया कि किस प्रकार अपनी छोटी सी बचत एवं मानव संसाधन के उचित प्रयोग से वे एक लघु उद्योग की शुरुआत कर सकते हैं. साथ ही बिहार सरकार एवं बैंक द्वारा इन सभी को उचित मार्गदर्शन एवं समय–समय पर यथावश्यक प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया.

सबसे पहले इन्होंने अपनी छोटी सी बचत करके एक छोटा सा समूह बनाया. जिसमें इन 3 लोगों को मिलकर 9 महिलाएं थीं. शुरुआत में इन्होंने कुल बाँस से बनाईं जाने वाली कुटीर चीजें बनाईं. धीरे–धीरे इन्हें इनके काम में सफलता मिलने लगी. जैसे–जैसे इन्हें सफलता मिलती गई. इनके गाँव में छोटे–छोटे कुटीर उद्योग स्थापित होते गए. जिस गाँव में खाने को लाले पड़े थे वहाँ अब घर के पुरुष शहर से वापस आकर इन्हें उद्योग धन्धों जैसे– बकरीपालन, मुर्गीपालन, दुग्ध व्यवसाय, मस्त्यपालन, बाँस की टोकरी, टोपी, सूप, आर्टिफिसीयल ज्वेलरी इत्यादि बनाने में हाथ बटाने लगे. अब स्थिति यह हो गई है कि गाँव में शायद ही ऐसा कोई घर होगा जहाँ खाने या अन्य किसी मूलभूत चीज की कोई समस्या हो. यदि कोई समस्या होती भी है तो यह तीनों दीदी एकजुट होकर उससे निजात पाने की कोशिश करती हैं. किसी ने सच ही कहा है – ''सफलता का कद आपकी सोच तय करती है. जब व्यक्ति ठान लेता है तो ईश्वर भी उसकी खुले दिल से सहायता करते हैं.''

यह कहानी सिर्फ एक धनश्री देवी, ऊषा देवी और ललिता देवी की नहीं है स्वयं सहायता समूह ने न जाने कितने परिवारों, गांवों में ऐसी सफलता की रोशनी पहुंचायी है कि अब उन्हें किसी अन्य के सामने हाथ फैलाने की आवश्यकता नहीं है. अंततः यही कहना चाहूंगी –

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती.
कुछ किए बिना ही जय जयकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती.

✦✦✦

भारत की प्रथम महिला

नमिता विजय कदम
क्षे.का.पुणे

भारतीय महिलाओं का इतिहास अनेक उपलब्धियों से भरा है. जिन्होंने लिंग के अवरोध को तोड़ दिया है और अपने अधिकारों के लिए कड़ी मेहनत की है एवं राजनीति, कला, विज्ञान, कानून आदि क्षेत्रों में प्रगति की है. झांसी की रानी से इरोम शर्मिला तक, भारतीय महिलाएं हमेशा अपने अधिकारों के लिए खड़ी हुईं और प्रतिबंध एवं सीमाओं के बावजूद उनकी लड़ाई लड़ी. वे उम्मीद की जीवित मिसाल हैं और अपने संबंधित क्षेत्रों में आदर्श समर्पण को प्रदर्शित करती हैं. समय-समय पर भारतीय महिलाएं अपने घरों की दहलीज और पुरुष-प्रभुत्व की दुनिया से आगे बढ़ीं. समय-समय पर उन्होंने अपने प्रयासों और कठोर परिश्रम और लचीलेपन के साथ मंजिल हासिल की है. वे पुरुष प्रधान क्षेत्र में 'सबसे पहले' रही हैं और ऐसा करने से, सैकड़ों लड़कियों के लिए मिसाल बनी हैं.

किसी विशेष क्रम में नहीं, सहज रूप में यहां कुछ अद्‌भुत भारतीय महिलाओं की सूची दी जा रही है:

रोशनी शर्मा: कश्मीर तक अकेले वाली भारत कन्याकुमारी से बाइक सवारी करने की पहली महिला

जिस काम को पहले किसी भी महिला ने नहीं किया था उस काम को रोशनी शर्मा ने कर दिखाया – कन्याकुमारी से कश्मीर तक अकेले मोटर सवारी. उसने इस स्टिरियोटाइप को तोड़ दिया कि महिलाएं बाइक की सवारी नहीं कर सकतीं और इसके साथ आने वाली चुनौतियों को गले लगा लिया. वह अपने आप में एक यात्री बन गईं और एक ऐसी उपलब्धि हासिल की जो कई महिलाओं को अनुयायी होने के लिए प्रेरित करती है.

अरुणिमा सिन्हा: माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने वाली भारत की पहली अपंग महिला

अरुणिमा सिन्हा एक राष्ट्रीय स्तर की वॉलीबॉल खिलाड़ी हैं, जिन्होंने एक दुखद दुर्घटना में अपने बाएं पैर को खो दिया था. हालांकि, उनकी यह कमी उन्हें माउंट की ऊंचाइयों को पार करने से रोक नहीं सकी. और एवरेस्ट पर्वत पर चढ़ने वाली भारत की पहली अपंग महिला बन गईं और उन्हें 2015 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया.

शीला देवरे: भारत की पहली महिला ऑटो रिक्शा चालक

1988 में, देवरे देश की पहली महिला ऑटो रिक्शा चालक बनने के लिए पुणे आईं, ऑटो चालन एक ऐसा पेशा था जिस पर अब तक पुरुष-प्रभुत्व माना जाता था. नियमित वाहन चालकों के छुट्टी पर जाने के बाद उन्होंने वाहन चलाना शुरू कर दिया और जल्द ही खुद ऑटो को खरीदने के लिए पर्याप्त धन जुटाया. उनका नाम लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में भी सूचीबद्ध है.

टेसी थॉमस: भारत में मिसाइल परियोजना का नेतृत्व करने वाली पहली महिला वैज्ञानिक

टेसी थॉमस 'मिसाइल वुमन ऑफ इंडिया' के रूप में जानी जाती हैं. थॉमस ने 2009 में 5000 किलोमीटर दूरी की अग्नि-4 मिसाइल की परियोजना बनायी. 2012 में इसकी सफलतापूर्वक जांच की गई. थॉमस देश में मिसाइल परियोजना का नेतृत्व करनेवाली सबसे पहली महिला वैज्ञानिक हैं.

नीरजा भनोट: सबसे युवा अशोक चक्र पुरस्कार विजेता

नीरजा भनोट मुंबई में पैन अमेरिकन वर्ल्ड एअरवेज की विमान परिचारिका (एयर होस्टेस) थीं. 5 सितंबर 1986 के मुम्बई से न्यूयॉर्क जा रहे पैन एम फ्लाइट 73 के अपहृत विमान में यात्रियों की सहायता एवं सुरक्षा करते हुए वे आतंकवादियों की गोलियों का शिकार हो गई थीं. उनकी बहादुरी के लिये मरणोपरांत उन्हें भारत सरकार द्वारा शान्ति काल के अपने सर्वोच्च वीरता पुरस्कार अशोक चक्र से सम्मानित किया गया और साथ ही पाकिस्तान सरकार और अमरीकी सरकार ने भी उन्हें इस वीरता के लिये सम्मानित किया है. अपनी वीरगति के समय नीरजा भनोट की उम्र 23 वर्ष थी. इस प्रकार वे यह पदक प्राप्त करने वाली युवा महिला और सबसे कम आयु की नागरिक भी बन गईं. पाकिस्तान सरकार की ओर से उन्हें तमगा-ए-इन्सानियत से नवाज़ा गया.

आंचल ठाकुर: स्काइंग में अंतर्राष्ट्रीय मेडल जीतनेवाली पहली भारतीय महिला

आंचल ठाकुर एक भारतीय महिला अल्पाइन स्काइंग हैं. उन्होंने इंसब्रुक में आयोजित 2012 के शीतकालीन युवा ओलंपिक में भारत का प्रतिनिधित्व किया. 2012 के यूथ शीतकालीन ओलंपिक में उसने एल्पाइन स्काइंग – गर्ल की स्लैलम एंड गर्ल की विशालकाय स्लैलम इवेंट्स में भाग लिया. ठाकुर को भारत की 2017 एशियाई शीतकालीन खेलों की टीम में फरवरी 2017 में नामित किया गया था. 2018 में, आंचल ठाकुर ने अंतर्राष्ट्रीय स्काइंग प्रतियोगिता में पदक का दावा करने वाली पहली भारतीय स्कायर बनने के बाद इतिहास का निर्माण किया. उन्होंने 2018 एल्पाइन एज 3200 कप में कांस्य पदक जीता, जो तुर्की फेडरेशन इंटरनेशनेल डी स्काय द्वारा आयोजित किया गया था.

हालांकि कई महिलाएं अपने घरों के बाहर अपने चुने हुए क्षेत्रों में अच्छा प्रदर्शन तो करती ही हैं, लेकिन बहुत सारी महिलाएं घरों के कामकाज में भी व्यस्त रहती हैं और कहा जाता है कि पुरूष अभी भी दुनिया के मालिक हैं. हर कामयाब महिला के पीछे, उसका परिवार ही है और परिवार की सूत्रधार माँ ही है जैसा कि वर्तमान की **विश्वसुंदरी आरुषि चिल्लर** ने भी कहा कि 'माँ ही सर्वोत्तम है'.

✦✦✦

महिलाओं की क्षमता एवं सामर्थ्य

प्रियंका सिंह
क्षे.का., बडौदा

**अंधकार में दीप जलाना, सबके बस की बात नहीं.
मुश्किलों में हाथ बढ़ाना, सबके बस की बात नहीं.
छाए हों, जब चारों ओर से तकलीफ़ों के तूफ़ान...
तूफ़ानों को पीकर मुसकाना, सबके बस की बात नहीं.**

जब कभी भी बात क्षमता और सामर्थ्य की होती है, हम हमेशा पुरुष और स्त्री के बीच तुलना करते हैं. हमेशा महिलाओं को पुरुषों की बराबरी करते हुये स्वयं को साबित करने के लिए प्रेरित करते हैं. परंतु, क्या वाकई में इसकी जरूरत है? मेरी सोच में इसकी जरूरत नहीं है. महिलाएं और पुरुष दोनों की अपनी योग्यताएँ एवं प्रवीणताएँ होती हैं. महिलाएं जिनके ऊपर आज के समय में घर और बाहर दोनों की जिम्मेदारियाँ होती हैं और हर महिला इसे बहुत अच्छे तरीके से निभाती है. महिलाओं की कुछ अपनी विशेषताएँ होती हैं जो कि उन्हें पुरुषों से अलग करती हैं. जैसे कि, वो सभी चीजों को अच्छे से संभालना सहेजना, उनकी ईमानदारी, वास्तविकता, दूसरों के प्रति सहानुभूति, महत्वाकांक्षा, दृढ़ता, त्याग आदि, ये गुण ही उन्हें अलग बनाते हैं.

महिलाओं में एक और बड़ी खूबी होती हैं कि वो किसी भी परिस्थिति में खुद को ढ़ाल सकती हैं और यह उनकी मजबूत शख्सियत का परिचय देती है. औरत अगर महत्वाकांक्षी भी हो, तो अपने परिवार और काम दोनों में सामंजस्य बैठाने का प्रयास करती हैं. शायद इसी खूबी के कारण ही भारतीय विवाह परंपरा अभी भी टिकी हुई है, अभी भी औरतें बड़ी आसानी से किसी दूसरे घर को अपना लेती हैं और परिस्थितियों के अनुसार खुद को ढ़ाल लेती हैं. मैंने अपने ही कार्यालय में एक बहुत ही प्यारी-सी मैडम को हर रोज परिवार और कार्यालय के बीच सामंजस्य स्थापित करते हुए देखा है. इस बीच वो हमेशा जिसका त्याग करती हैं वह है अपनी सहूलियत और अपने आराम का. तब समझ में आता है कि त्याग अपने आप में ही एक बड़ी शक्ति है, जो किसी मजबूत शख्स की ही शोभा बनता है. घर-परिवार और ऑफिस के बीच पीसकर जब भी वह स्त्री मुस्कुराती है तो यकीन मानिए उससे शक्तिशाली मुझे और कोई नहीं दिखाई पड़ता. मैंने उन्हें कभी गुस्सा करते नहीं देखा. हमेशा मुस्कुराहट के साथ सुबह की शुरुआत और कार्यालयीन शाम की समाप्ति करते हुये देखा है. वह दुःखी तो होती हैं, लेकिन इसका प्रभाव कभी आसपास के लोगों पर नहीं पड़ने देतीं, तब मुझे लगता है कि वह औरत वाकई ताक़तवर है, उसे कोई नहीं हरा सकता.

औरतों में सृजन करने की क्षमता होती है. निश्चित रूप से यह क्षमता दैवीय है. इसके अतिरिक्त भाव, कोमलता, सौन्दर्य, समेटना, सहेजना और प्रेम, ये सभी शस्त्र हैं महिलाओं के. ये वही गुण हैं जो महिलाओं को विशिष्ट श्रेणी के अंतर्गत रखते हैं और हम महिलाओं को उनके इन्हीं गुणों के साथ देखते हैं. महत्वाकांक्षा, सफलता, ख्याति, संपत्ति ये सभी को प्रिय होते हैं किन्तु रिश्तों के लिए इनसे समझौता करने की अद्भुत ताकत केवल औरतों में ही हो सकती है. समझौता अपने आप में एक आँधी होती है और हर औरत कमोबेश मात्रा में इस आँधी को अपने दिलो-दिमाग में रखती हैं. तो औरतों की क्षमता और सामर्थ्य का अंदाज़ा लगाया जा सकता है. लेकिन क्या वाकई में लगाया जा सकता है? तो जवाब शायद 'नहीं' होगा. यह कितनी अजीब बात है कि इतनी ताकत को अपने भीतर समाहित करने वाली औरत अधिकांशतः खुद की ताकत से ही अपरिचित रहती है.

यदि हम क्षमता, ताकत, प्रवीणता, शक्ति की बात करें तो हमें शारीरिक शक्ति के साथ-साथ मानसिक शक्ति का भी विश्लेषण करना चाहिए. निश्चित रूप से, शारीरिक क्षमता/बल पुरुषों के मुक़ाबले स्त्रियों में कम होता है किन्तु मानसिक क्षमता औरतों में पुरुषों के बराबर होती है. आज कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है, जहां महिलाएं अपना कदम नहीं जमा रही है. वे लगातार नई-नई ऊंचाइयों की ओर बढ़ रही हैं और देश के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं. यदि हम व्यापार एवं बैंकिंग के क्षेत्र में ही देखें तो कई ऐसे उदाहरण वर्तमान में मौजूद हैं जो औरतों की क्षमता और सामर्थ्य की पूर्ण छवि प्रस्तुत करते हैं. चाहे वह चन्दा कोचर (सीईओ, आईसीआईसीआई बैंक) हो या नैना लाल किदवई (कंट्री हैड, एचएसबीसी इंडिया), या चित्रा रामकृष्ण (सीईओ, नेशनल स्टॉक एक्स्चेंज ऑफ इंडिया), या शिखा शर्मा (सीईओ, एक्सिस बैंक) या शीलाश्री प्रकाश (चीफ़ आर्किटेक्ट, शिल्प आर्किटेक्ट). ये मात्र कुछ गिने चुने उदाहरण हैं, पूरी सूची तो शायद काफी लंबी हैं और महिलाओं की उपलब्धि इसी बात से प्रमाणित हो रही है कि इन सभी उपलब्धियों को अब उँगलियों पर गिनने जितना आसान नहीं रहा. अब संख्या भारी है, वास्तव में, काफी बड़ी है. औरतें हर क्षेत्र में प्रवेश कर रही हैं और अपने सामर्थ्य का लोहा मनवा रही हैं. पहले जहां केवल शिक्षा-क्षेत्र ही महिलाओं का 'कम्फर्ट एरिया' रहा था अब उस कम्फर्ट एरिया से निकल कर औरतें ट्रेन, बस, हवाईजहाज यहाँ तक कि ऑटो भी चला रही हैं, हर दिन एक नए क्षेत्र में उनका पहल करना सामाजिक समानता की ओर बढ़ते उनके कदमों को दर्शाता है. एक बने-बनाए साँचे से औरतें खुद को निकाल रही हैं और आधुनिक समाज का एक हिस्सा बन रही है. यह केवल-और-केवल उनकी क्षमता और सामर्थ्य का ही फल है.

✦✦✦

महिला प्रधान क्षेत्रों में महिला

प्रीति साह
क्षे. का., कोलकाता

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है. हमारे समाज में दो वर्ग हैं:स्त्री और पुरुष. दोनों एक सिक्के के दो पहलू हैं. एक के बिना दूसरा अधूरा है. जीवन में एक सामंजस्य बनाए रखने के लिए इन दोनों की ही अपनी-अपनी भूमिका है. मेरे इस लेख की मुख्य भूमिका में महिला प्रधान कार्य क्षेत्र है.

आज स्त्रियाँ पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है. जीवन के हर क्षेत्र में घर से लेकर बाहर तक अपना वर्चस्व सिद्ध करती है. काम काजी महिलाओं की ज़िम्मेदारी दुगुनी है. एक ओर जहां वो अपने घर की पूरी ज़िम्मेदारी उठाने के लिए सदियों पहले से प्रतिबद्ध है वहीं दूसरी ओर पढ़ी लिखी महिलाएं अच्छे पदों पर कार्यरत हैं जो उनकी जिम्मेदारियों को दुगुना कर देता है. किसी कवि ने कहा है : नर से बढ़कर नारी – क्योंकि इसमें दो मात्राएं ज्यादा होती हैं. इसके अलावा भी नारी को लेकर कई उक्तियाँ लिखी गईं. हमारे आदि-ग्रन्थों में नारी को गुरुतर मानते हुए यहाँ तक घोषित किया गया है- 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' अर्थात जहां नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं. सर्वेक्षणों में यह भी पाया गया है कि महिलाएं कई क्षेत्रों में पुरुष से बेहतर कार्य करती हैं. इसका उदाहरण भी हम अपने देश में देख सकते हैं, जहां बड़ी बड़ी कंपनियों की सीईओ (CEO) के रूप में महिलाएं सफलतापूर्वक कार्यनिष्पादन कर रही है. चंदा कोचर, शिखा शर्मा, इंद्रा नुई, मल्लिका श्रीनिवासन, विनीता बाली, अरुणा जयंती, चित्रा रामकृष्ण, एकता कपूर, रूपा कुदवा, रोशनी नाडर, मीना गणेश, निशि वासुदेव, विनीता गुप्ता, सूची मुखर्जी, अनिषा सिंह, इंद्राणी मुखर्जी इत्यादि.

अभी हाल ही में सभी समाचार चैनलों की हेड लाइन रही भारत की अवनि चतुर्वेदी. जिसने विश्व की पहली महिला फाइटर पायलट के रूप में अपना नाम दर्ज करवाया है. इसके अलावा कल्पना चावला, नीरजा, भारत की महिला प्रेसिडेंट प्रतिभा देवीसिंह पाटिल इत्यादि कई नाम है जो भारतीय महिलाओं की प्रतिभा को उजागर करते है. आज हम बात करेंगे महिला प्रधान उन कार्य क्षेत्रों की जहां अपनी प्रतिभा, विनम्रता, सादगी, शालीनता, सहिष्णुता, कलागत निपुणता, धैर्य शीलता के कारण महिलाओं ने अपना वर्चस्व साबित किया है. निम्नलिखित कुछ ऐसे कार्यक्षेत्र है जहां महिलाओं ने पुरुषों को पीछे छोड़ दिया है :

1. **कढ़ाई-बुनाई एवं कशीदाकारी :** कढ़ाई-बुनाई एवं कशीदाकारी का कार्य मुख्यतः महिलाओं से जुड़ा रहा है. महिलाएं घरों में सिलाई-बुनाई का काम करती आ रही है. रंगीन धागों से सुंदर डिजाइन/कढ़ाई बनाने का काम भी महिलाएं कर रही है.

   आज के आधुनिक दौर में फैशन डिजाइनर का कोर्स कर महिलाएं बड़ी कंपनियों और पदों पर फैशन मॉडेल के रूप में कार्यरत है. बड़े शहरों एवं महानगरों में उनके अपने बुटीक हैं और वे एक से बढ़कर एक डिजाइनर कपड़े तैयार कर रही हैं. महिलाओं सृजनशीलता की वजह से ऐसा ज्यादा संभव होता है.

2. **नर्सिंग एवं आतिथ्य सेवा :** अस्पतालों में महिलाएं ही सेविका के रूप में सबसे ज्यादा देखी जाती है. पुरुषों की तुलना में महिलाएं अपनी शालीनता एवं ममता के कारण इस क्षेत्र में वर्षों से कार्यरत हैं.

   इसके अलावा होटल मैनेजमेंट में रिसेप्शनिस्ट के पद से लेकर प्रबन्धक के पद तक महिलाएं आतिथ्य सत्कार कार्यो में अपना वर्चस्व बनाए हुये है. हवाई जहाजों में एयर होस्टेस के रूप में लड़कियां, हमें आतिथ्य संबंधी सुविधाएं उपलब्ध करवाती नजर आती हैं.

3. **शिक्षिका के रूप में :** आरंभिक स्कूलों एवं माध्यमिक स्कूलों तक हम पाते हैं कि महिलाएं शिक्षिका के रूप में उत्तम कार्य निर्वाह कर रही हैं. विद्यार्थियों को संभालने-समझने और समझाने के क्षेत्र में महिलाओं की मुख्य भूमिका है. इस क्षेत्र में उनकी सूझ-बूझ पुरुषों से काफी ज्यादा है. ब्रिघैम यंग का कहना है, 'जब आप एक आदमी को शिक्षित करते है; आप एक आदमी को शिक्षित करते हैं, परंतु जब आप एक औरत को शिक्षित करते हैं, आप एक पीढ़ी को शिक्षित करते हैं'.

4. **ज्वेलरी डिजाइनर :** आभूषणों के व्यापार का सबसे मुख्य पहलू होता है, उसकी बनावट और सुंदरता. आभूषण की डिजाइनिंग बड़ी महत्वपूर्ण होती है. आभूषणों की बिक्री ही इस बात पर निर्भर करती है कि उसकी डिजाइन कितनी सुंदर है. इसके लिए महिलाएं ज्वेलरी डिजाइनिंग भी करती है. इस क्षेत्र में महिलाओं का ही वर्चस्व होता है. अपनी सूझ-बूझ एवं क्रियेटिविटी के कारण महिलाएं कम सोने के वजन में भी सुंदर डिजाइन प्रस्तुत करती हैं. इमिटेशन आभूषणों में भी महिलाएं पुरुषों से अग्रणी है.

5. **सामाजिक कार्यकर्ता :** सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में हम देखें तो इस क्षेत्र में महिलाएं काफी तत्पर एवं कार्यकुशल है. वह कई एनजीओ (NGOs), वृद्धाश्रम (Old Age Homes), अनाथाश्रम (Orphanage Homes) से जुड़ी हुई मिलती है. काम-काजी महिलाएं भी छुट्टियों के दिन अपना कुछ समय इन सामाजिक स्थलों पर जाकर बिताती है. बाल मजदूर, चाइल्ड ट्राफिकिंग इत्यादि कई मामलों में सजग होकर कार्यरत दिखती है.

   इसके अलावा भी कई क्षेत्र ऐसे है, जहां महिलाएं अपनी उत्तम सेवा प्रदान कर रही है:

6. **मेडिकल एंड हेल्थ सर्विस:** मेडिकल एवं हेल्थ सेवाओं वाले संगठनों में महिलाएं मुख्य भूमिका में है. वो डॉक्टर हैं, नर्स है. सेविका एवं परिचारिका की भूमिका में मरीजों का इलाज करती है, उनकी सेवा करती है. नारी के अंदर मौजूद शालीनता और सहिष्णुता ही

है जो इस कार्यक्षेत्र में उसे संबल प्रदान करती है और वह बड़े ही प्रेम पूर्वक बीमारों की सहायता करती है. साइकोलोजिस्ट तथा कौंसिलर के रूप में भी महिलाएं पूरे देश में विख्यात हैं.

7. **जन संपर्क प्रतिनिधि :** बड़े-बड़े संगठनों में महिलाएं जन संपर्क प्रतिनिधि के रूप में कार्यरत हैं. बाहर जाकर काम करना तथा अन्य कंपनियों को अपने संगठन के साथ जोड़ना इत्यादि कार्यों मे सफलता पूर्वक काम करने में पुरुषों की तुलना में महिलाएं ही निपुण है.

8. **मार्केटिंग क्षेत्र :** आजकल कई कंपनियों की विपणन अधिकारी महिलाएं ही हैं. महिलाओं के अंदर बात करने की कला, उत्पादों की प्रस्तुति आदि पुरुषों से भिन्न है. यही कारण है कि कई कंपनियाँ जिसमें बीमा कंपनियाँ भी हैं जो महिलाओं को मार्केटिंग ऑफिसर के रूप में नियुक्त कर रही हैं.

9. **मानव संसाधन :** कार्यालयों में मानव संसाधन विभाग में भी महिलाएं कार्यरत हैं. मैनपॉवर की आवश्यकताओं को समझते हुए उनकी तैनाती पर विशेष ध्यान देती हैं. इसके अलावा कार्मिकों के बीच एक खुशनुमा माहौल बनाए रखने के लिए वह त्योहारों पर ड्रेस कोड बनाती हैं, छोटे-छोटे त्योहारों का आयोजन करती है, कार्मिकों के बीच प्रतियोगिताओं का भी आयोजन करती हैं. इस प्रकार वह उत्तम कार्य करने का एक माहौल तैयार करती हैं और कार्यक्षेत्र में नीरसता और मोनोटोनस भाव नहीं आने देतीं.

10. **वित्तीय सलाहकार:** वित्तीय सलाहकार के रूप में महिलाएं ज्यादा सफल हैं. उनके अंदर एक कल्पना शक्ति होती है, जिससे भविष्य की आवश्यकताओं को वह समझ लेती हैं और उसके अनुसार निवेश आदि की सलाह देती हैं.

11. **आयोजक :** किसी भी तरह की बैठक, कार्यक्रम के आयोजन में महिलाएं धैर्यपूर्वक और बड़ी ही शालीनता से कार्यों को अंजाम देती है. वह पहले आवश्यक वस्तुओं की सूची बनाती है. पुनः एक-एक कर उनकी व्यवस्था करती है. अपने कार्यों में वह संपूर्णतः (Perfection) का पूरा ध्यान रखती है. चेर ने कहा है, 'महिलाएं समाज की वास्तविक वास्तुकार होती हैं'.

12. **चाइल्ड केयर सेंटर :** शहरों में काम काजी महिलाओं के लिए बच्चों को पालने की बड़ी ज़िम्मेदारी है. ऐसे में, महानगरों और बड़े शहरों में एकल परिवारों - जिसमें सिर्फ पति-पत्नी हैं, बच्चों की देख-भाल के लिए चाइल्ड केयर केन्द्रों की आवश्यकता महसूस हुई. ऐसे केन्द्रों में माँ के स्थान पर महिलाएं ही हैं, जो धैर्यपूर्वक दूसरों के बच्चों को भी अपने बच्चे की तरह खिलाना-पिलाना, सुलाना आदि सब कुछ करती है. ऐसे संगठनों में भी मुख्य भूमिका महिलाओं की ही रहती है.

इस प्रकार कई ऐसे क्षेत्र हैं, जहां महिलाओं के लिए विशेष स्थान है. शॉपिंग मौल हो या ज्वेलरी शॉप महिला अधिकारियों की विशेष मांग होती है. कई महिलाएं लेखिका एवं कवयित्री भी हैं जिनके अनुभवों तथा कल्पनाशीलता के अनमोल खजाने से साहित्य जगत भरा पड़ा है. आज के दौर में महिलाएं साहित्य जगत को अपनी लेखनी से कई उपहार दे चुकी है एवं नोबल पुरस्कार विजेता भी हैं.

✦✦✦

नारी होने का अधिकार है...

मैं नारी हूँ
मुझे नारी होने का अधिकार है

अब तुम्हारे चरणों की
धूल होने से मुझको इनकार है।

उठ खड़ी हूँ मैं अपने पैरों पर
नहीं मुझे किसी सहारे की दरकार है।

गम हो या खुशी, होंगें मेरे सारे अपने
मन मेरा हर फैसले के लिए तैयार है।

सुकोमल है स्वरूप मेरा,
सौम्य मेरा व्यवहार है

हद जिस दिन तुमने पार की,
हाथों में मेरे फिर तलवार है।

जननी होने का मुझको सम्मान है
पर देवी होने से इनकार है।

मैं नारी हूँ
मुझे नारी होने का अधिकार है।

उपासना सिरसैया
क्षे. का., भोपाल

भारतीय समाज में महिलाएँ

रंजना कान्त
क्षे.का., पटना

यदि हम भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति पर चर्चा करें, तो वैदिक युग से लेकर आधुनिक काल तक महिलाओं की स्थिति में अनेक उतार-चढ़ाव आते रहे हैं.

वैदिक युग में स्त्रियों की स्थिति सुदृढ़ थी, परिवार तथा समाज में उन्हें सम्मान प्राप्त था. शिक्षा प्राप्ति, संपत्ति तथा सभा व समितियों में भाग लेने का उनको बराबरी का अधिकार प्राप्त था. व्यक्तित्व और सामाजिक विकास में उनका अधिक योगदान होता था.

लेकिन मध्यकाल में महिलाओं की स्थिति बहुत ही दयनीय हो गई. एक तरह से यह महिलाओं के सम्मान, विकास और सशक्तिकरण का अंधकार युग था. मुगल शासन, सामंती व्यवस्था, केंद्रीय सत्ता का नाश होना, विदेशी आक्रमण और शासकों की विलासपूर्ण प्रवृत्ति ने महिलाओं को उपभोग की वस्तु बना दिया था. जिसके कारण महिलाओं को बाल-विवाह, पर्दाप्रथा, बालश्रम, सतीप्रथा, विधवाओं के पुनः विवाह पर रोक इत्यादि कुरीतियों का सामना करना पड़ता था. समाज में महिलाओं की शिक्षा नाम की कोई चीज नहीं थी. उनकी स्वतन्त्रता और अधिकारों को प्रतिबंधित कर दिया गया था. पुरुषों की इच्छानुसार चलने के लिए वे बाध्य थीं.

उन्नीसवीं सदीं के पूर्वार्ध में भारत के कुछ समाजसेवियों जैसे राजा राममोहन राय, दयानन्द सरस्वती, ईश्वरचंद विद्यासागर तथा केशवचंद्र सेन ने समाज की इन कुरीतियों के खिलाफ आवाज़ उठायी. इन्होंने तत्कालीन ब्रिटिश शासकों के समक्ष स्त्री-पुरुष समानता, स्त्री-शिक्षा, सती-प्रथा पर रोक तथा बहु-विवाह पर रोक की आवाज उठायी. इसी का परिणाम था सती प्रथा निषेध अधिनियम, बहु-विवाह रोकने के लिए नोटिव मैरिज एक्ट इत्यादि. इन सभी कानूनों का हमारे समाज में नारी की स्थिति को सुधारने में काफी योगदान रहा.

भारत की आजादी के बाद महिलाओं की स्थिति में काफी सकारात्मक बदलाव देखा गया है. सरकार द्वारा उनकी आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक और राजनीतिक स्थिति में सुधार लाने तथा उन्हें विकास की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए अनेक कल्याणकारी योजनाओं और विकासात्मक कार्यक्रमों का संचालन किया गया है.

इक्कीसवीं सदी तक आते-आते महिलाओं की स्थिति में काफी सुधार हुआ और महिलाओं ने शैक्षणिक, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, प्रशासनिक, खेलकूद आदि विविध क्षेत्रों में उपलब्धियों के नए आयाम तय किए. आज की महिलाएँ आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वासी हैं, जिसने जीवन के हर चुनौतिपूर्ण क्षेत्र में भी अपनी योग्यता बखूबी प्रदर्शित की है. आज वह केवल डॉक्टर और शिक्षिका ही नहीं बल्कि इंजीनियर, पायलट, वैज्ञानिक, तकनीशियन, सेना, पत्रकारिता जैसे क्षेत्रों में भी सफलतापूर्वक योगदान दे रही है. यहाँ तक कि अंतरिक्ष भी महिलाओं से अछूता नहीं है.

जवाहर लाल नेहरू ने कहा था- ''यदि आपको विकास करना है तो महिलाओं का उत्थान करना होगा. महिलाओं का विकास होने पर समाज का विकास स्वतः हो जाएगा.''

इसी संदर्भ में गाँधी जी ने कहा था कि एक लड़की की शिक्षा एक लड़के की शिक्षा से ज्यादा महत्वपूर्ण है क्योंकि लड़के को शिक्षित करने पर वह अकेला शिक्षित होता है किन्तु एक लड़की की शिक्षा से पूरा परिवार शिक्षित हो जाता है.

आज शिक्षा ने महिलाओं को आर्थिक, राजनैतिक व सामाजिक न्याय तथा पुरुष के साथ समानता के अधिकारों की मांग को काफी प्रेरित किया है. 8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मनाया जाना महिलाओं की प्रगति एवं सम्मान के प्रतीक के रूप में माना जा सकता है. वर्ष 2001 में पहली बार राष्ट्रीय महिला उत्थान नीति बनाई गई, जिससे देश में महिलाओं के लिए विभिन्न क्षेत्रों में उत्थान और समुचित विकास की आधारभूत विशेषताएं निर्धारित किया जाना संभव हो सका.

हमारे देश में तीन तलाक के खिलाफ या निर्भया कांड के खिलाफ, जो भी कानून बनाए जा रहे हैं, वह महिलाओं की स्थिति सुधारने में बखूबी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे. यह सत्य है कि वर्तमान समय में स्त्रियों की स्थिति में काफी बदलाव आया है, लेकिन फिर भी वह अनेक स्थानों पर पुरुष प्रधान मानसिकता से पीड़ित हो रही है.

समाज सुधारक एवं राष्ट्र निर्माता स्वामी विवेकानंद ने राष्ट्र की प्रगति को नारी की प्रगति के साथ जोड़ते हुए कहा था किसी भी राष्ट्र की प्रगति का सर्वोत्तम थर्मामीटर है, वहाँ की महिलाओं की स्थिति! हमें नारियों को ऐसी स्थिति में पहुँचा देना चाहिए, जहां वे अपनी समस्याओं को अपने ढंग से स्वयं सुलझा सकें. हमें नारी शक्ति का उद्धारक नहीं वरन उनके सेवक और सहायक बनना चाहिए. भारतीय नारियां संसार की अन्य किन्ही भी नारियों की भाँति अपनी समस्याओं को सुलझाने की क्षमता रखती हैं. भारत के उज्ज्वल भविष्य की संभावनाएं इसी आधार में निहित हैं.

✦✦✦

ऋतु पारिक
क्षे. का., मुंबई (प)

पुरुष बनने की दौड़ में दौड़ती महिलाएं

नारी जाति आधी मानव जाति है. पुरुष की जननी है, संगिनी है, अर्धांगिनी है. चाहे ऋषि मुनि हों, पैगंबर हों या कोई महापुरुष, सभी इसी की गोद में पले बढ़े हैं. परंतु समय साक्षी रहा है कि नारी की कोख से पैदा होने वाले पुरुषों ने ही उसे बहुत अपमानित किया है, बहुत ही तुच्छ समझा है, उसके आत्मसम्मान को छलनी किया है.

अपने आत्मसम्मान को संभालने के लिए नारी ने आजादी चाही और स्वावलंबन व आर्थिक निर्भरता की ओर बढ़ी. समाज सुधारकों के प्रयासों से नारी की स्थिति समाज में उन्नत हुई और यहाँ तक कहा जा सकता है कि राष्ट्रों के निर्माण व उत्थान में नारी का बहुत बड़ा योगदान रहा है. सामूहिक व्यवस्था हर क्षेत्र में साफ तौर पर नजर आ रही है. परंतु यह सिक्के का एक पहलू है, जो बेशक अच्छा, चमकीला व संतोषजनक है. नारी जाति की वर्तमान उपलब्धियां– शिक्षा, उन्नति, आजादी, प्रगति और आर्थिक व राजनीतिक सशक्तिकरण आदि यकीनन गौरवपूर्ण व सराहनीय हैं.

परंतु सिक्के का दूसरा पहलू हमें कुछ और ही तस्वीर दिखाता है. नारी को जब आजादी मिली तो लिंगीय समानता की बात शुरू हुई और इस दिशा में आगे बढ़ते–बढ़ते उसे पुरुष के समान सिर्फ अधिकार ही नहीं अपितु कर्तव्य भी दे दिये गए. बराबरी का पैमाना तय किया गया कि कर्तव्य क्षेत्रों में नारी–पुरुष का फर्क ही मिटा दिया जाये और आगे बढ़ने के जुनून में इस तथ्य की अनदेखी की गई कि सृष्टि व शारीरिक रचना के अनुसार कुछ मामलों में औरत के तो कुछ मामलों में पुरुष के अधिकार एक दूसरे से ज्यादा होते हैं. इसी तरह कर्तव्य व जिम्मेदारियाँ भी कुछ मामलों में मर्दों की, कुछ मामलों में औरतों की अधिक होती हैं. अतः अंधाधुंध बराबरी न्याय नहीं, विडम्बना है.

इसी विडम्बना के फलस्वरूप नारी के सामने कई प्रत्यक्ष व परोक्ष समस्याएँ आ खड़ी हुईं. जब बंधनों में बंधी, अधिकारों से वंचित, अपमानित व शोषित नारी जाति को आत्म–विश्वास मिला तो वह स्वतंत्रता से कब स्वच्छंदता पर पहुँच गई पता ही नहीं चला. नारी की स्वच्छंदता को आसानी से मीडिया द्वारा देखा जा सकता है. जिस लाज शर्म को नारी का गहना माना जाता था उसे ही नारी ने उतार फेंका क्योंकि वह उसके लिए परेशानी का सबब बनने लगा था. बराबरी की अंधी दौड़ में, नारी सही गलत का निर्णय लेना ही भूल गई और कई तरह के व्यसनों से ग्रस्त होने लगी.

धीरे धीरे पति–पत्नी सहयोगी न रहकर प्रतियोगी बन गए. बच्चों की पैदाईश और माँ बनने से औरतें विरक्त होने लगीं और परिणाम स्वरूप सामाजिक ताना बाना बिखरने लगा. परिवार छोटे होने लगे व एकल परिवार की नई परंपरा बनने लगी. बच्चों की देखभाल आया करने लगी और इसी वजह से माता–पिता व बच्चों के बीच में पारस्परिक संबंध कमजोर पड़ने लगे. जो बच्चे आया की देखभाल में बड़े हुए थे वे अपने बुजुर्ग माता–पिता को वृद्धाश्रम भेजने लगे.

नारी को मिली शिक्षा, बराबरी व अधिकार के निश्चित रूप से कई सकारात्मक परिणाम देखने को मिले हैं. राष्ट्र निर्माण व उन्नति में नारी ने बड़ा योगदान भी दिया. लेकिन जो भी उसने पाया उसकी उसे बड़ी कीमत चुकानी पड़ी. पुरुष बनने की वीभत्स दौड़ में नारी अपना नारीत्व ही खोने को उतारू हो गई. नारी भूल गई कि समाज में उसका महत्व व पूजनीय स्थान उसके नारीत्व की वजह से ही है.

घर में रहकर पत्नी व माँ की भूमिका निभाने से स्वतंत्र हो जाने के भरसक प्रयासों के बावजूद प्रकृति के नियमों से आजाद हो पाना संभव नहीं था. इसलिए इस अवश्यंभावी प्रतिकूल अवस्था में नारी, घर में बाहर धन कमाने निकली तो उस पर दोहरी ज़िम्मेदारी और दोहरी मेहनत का बोझ पड़ गया. परिवार को संभालने की भी ज़िम्मेदारी और जीविकोपार्जन की भी ज़िम्मेदारी. यदि यही ज़िम्मेदारी स्त्री व पुरुष साझा करें तो ना केवल स्त्री जीवन की जटिलताएं कम होंगी बल्कि समाज की तस्वीर ही कुछ और हो सकती है. लेकिन मेरे कहने का तात्पर्य यह कतई नहीं है कि समाज पुरातन व्यवस्था में लौट जाए, जहां स्त्री घर में सजा दी जाने वाली एक वस्तु मात्र थी और पुरुष घर और बाहर के सर्वे सर्वा.

आधुनिक समाज में यह आवश्यक हो गया है कि स्त्री–पुरुष एक दूसरे के सहभागी बनें न कि प्रतिभागी. घर व बाहर की जिम्मेदारी को मिलकर निभाएं.

क्योंकि आज हर स्त्री आर्थिक स्वतंत्रता, शिक्षा व रोजगार चाहती है तो उसे आत्म–निर्भर बनने दिया जाए. स्त्री–पुरुष, एक दूसरे से कंधे से कंधा मिलाकर चलें और मिलकर राष्ट्र का निर्माण करें. न कि पुरुष से बराबरी करने की अंधी दौड़ में अपनी पहचान ही खो दें.

✦✦✦

हमें गर्व है

दि. 13.01.2018 को क्षे.का., जबलपुर एवं जबलपुर क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले शाखाओं के बीच क्रिकेट मैच का आयोजन किया गया, जिममें शाखाओं की टीम विजयी रही. विजेताओं को पुरस्कृत करते हुये मुख्य अतिथि श्री अरुण कुमार, क्षेत्र प्रमुख, जबलपुर.

श्री प्रफुल्ल चोणकर, प्रबंधक, कांदिवली पूर्व शाखा, मुंबई ने दि. 28.01.2018 को चारकोप, कांदिवली, मुंबई में आयोजित मिनी मैराथॉन में हिस्सा लेते हुये उसे सफलतापूर्वक पूर्ण किया.

हमारी निकोल शाखा, अहमदाबाद के दफ्तरी **श्री दिनेशभाई सोलंकी** ने शाखा के लॉकर रूम के निकट, ग्राहक द्वारा भूलवश छूटी हुयी सोने की अंगूठी ग्राहक को लौटायी.

हमारे यू एल पी, जयपुर के विपणन अधिकारी **श्री हेमन्त कुमार लखेरा** द्वारा किसानों को कैसे मिले उपज का सही दाम ? इस विषय पर लिखे हुये पत्र/लेख को बिजनेस स्टैंडर्ड अखबार द्वारा उनके दि. 05.02.2018 के प्रकाशन में प्रकाशित किया गया एवं उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम पुरस्कार से नवाजा गया.

बधाई! बधाई!

श्री चिन्मय गावड़े, सुपुत्र श्री विजय गावड़े, सहायक महाप्रबंधक, यूएलपी, कांदिवली, मुंबई ने इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाण्टंट्स ऑफ इंडिया द्वारा नवंबर, 2017 में आयोजित 'सनदी लेखाकार' (सीए) की परीक्षा उत्तीर्ण की.

सुश्री अथुल्य सुनील, सुपुत्री श्री सुनील कुमार के सी, एसडब्ल्यूओ, अथनी शाखा, नोक्षेका, एर्णाकुलम (जो निर्मला हायर सेकेंडरी स्कूल, अलुवा की 8वीं कक्षा की छात्रा है) ने दि. 08.01.2018 को आयोजित केरल स्टेट कल्चरल कॉम्पीटीशन "केरल नादनम डान्स" प्रतियोगिता में 'ए' ग्रेड के साथ केरल राज्य में प्रथम स्थान अर्जित किया.

सुश्री पौलोमी चटर्जी, सुपुत्री श्री उत्पल चटर्जी, एसडब्ल्यूओ-बी, कैमेक स्ट्रीट-चौरंगी रोड शाखा, क्षे.का., कोलकाता जनवरी, 2018 में सेंट जेवीयर्स कॉलेज, कोलकाता में आयोजित इंटर कॉलेज नृत्य प्रतियोगिता में विजेता रहीं. कोलकाता के स्कॉटिश चर्च कॉलेज की बी ए फ़ाइनल इयर की यह छात्रा पढ़ाई के साथ-साथ कथ्थक नृत्य एवं गिटार वादन में भी निपुण है.

सुश्री अमनदीप कौर, सुपुत्री श्री दर्शन सिंह, सहायक प्रबन्धक, क्षे.का., कोलकाता ने 'प्राचीन कला केंद्र', चंडीगढ़ द्वारा आयोजित 'भरत नाट्यम डांस - प्रारम्भिक पार्ट-2, संगीत भूषण - पार्ट 1 एवं 2' में प्रथम स्थान अर्जित किया. साथ ही यूथ गिल्ड फॉर फ्रेंडशिप रशियन सेंटर ऑफ साइन्स एंड कल्चर, कोलकाता द्वारा आयोजित 'द इंडिया-रशिया फ्रेंड्शिप फेस्टिवल - कल्चरल कॉम्पिटीशन 2016' में अपना सहभाग देते हुये मेडल अर्जित किया.

सुश्री चैत्राली, सुपुत्री श्रीमती चित्रा कर्वे, घाटकोपर पूर्व शाखा, मुंबई ने 'रशियन ओपन वर्ल्ड कप, मॉस्को 2017' में हिस्सा लेते हुये 'एरोबिक्स' श्रेणी के इंडिविजुअल और टीम ट्रायो कैटेगरी में 2 स्वर्ण पदक प्राप्त किये. साथ ही उन्होंने गाजियाबाद में हुयी 12वीं आईएसएएफएफ चैम्पियनशिप 17-18 में 2 स्वर्ण, 1 रजत और 1 कांस्य पदक प्राप्त किए. उन्होंने कथ्थक नृत्य की पाँचवी परीक्षा उत्तीर्ण करते हुये 'सेंट्रल गव्हर्नमेंट कल्चरल रीसोर्स एंड ट्रेनिंग, दिल्ली' से शिष्यवृत्ति प्राप्त की. 'रोप मल्लखांब' में राष्ट्रीय स्तर की खिलाड़ी के रूप में उन्होंने बहुत सारे स्वर्ण और रजत पदक अपने नाम किए हैं.

सुश्री रीषिका, सुपुत्री श्री आर.के. मिश्रा, प्रबंधक, मंगोलपुरी शाखा, क्षे.का., दिल्ली (उत्तर) को एसयूएनएआईएनए सोसायटी (जिसे युनेस्को की इंटर नेशनल काउंसिल ऑफ डांस की सदस्यता प्राप्त है) द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित भरत नाट्यम प्रतियोगिता में 'विशिष्ट पुरस्कार' से सम्मानित किया गया.

The Skilled Rope Skipper

The national rope skipper, Miss GEETANJALI, daughter of Mr. Ranjan Sharma, Branch Manager, Batala Road Branch, Amritsar is a Std. IX student of Shri Ram Ashram School, Amritsar.

This avid reader of books and novels has carved a niche for herself in rope skipping. She began her journey in the world of 'rope skipping' at the tender age of 8 under the able guidance of Ms.Nidhi, Vice President, Rope Skipping Association, Punjab. Her passion and hard work for the sport paid off within a year. Since then she is participating in rope skipping championship.

She also represents her state at National level. She is participating in Rope Skipping Championships since 2012. She bagged many laurels for her school and state also. 2013 was the sensational year for her when she clinched Gold at the 59th National Rope Skipping Tournament by SGFI (School Games Federation of India) at Dewas, M.P., followed by 2 Golds at the State Rope Skipping Championship at Attari, Amritsar and a Silver & a Bronze at the CBSE National Skipping Championship at D.A.V. Amritsar. In 2014, she bagged 2 Silver medals at CBSE National Skipping Championship at Indore, M.P. In 2015, she again clinched 1 Gold and 2 Silvers at CBSE National Skipping Championship, Samalkot, A.P. followed by a Silver & 2 Bronzes at the 60th National Rope Skipping Tourney by SGFI at Delhi. In 2016, she won2 Silvers at 61stNational Rope Skipping Tourney by SGFI at Delhi and again 2 Silver medals at the 62nd National Rope Skipping Tournament by SGFI at Jabalpur, M.P. In 2017, she is back on the 'Gold' track by clinching a Gold and a Bronze medal at the CBSE National Skipping Championship at Nalagarh, Solan, H.P.

Inspired by her role model Ms. Sania Mirza, the international Lawn Tennis player and ably supported by her parents, she aspires to become an IPS Officer.

Union Dhara wishes her all the success in her future 'Skipping' endeavours! More skill to her rope!!

The Dashing Rowing Queen

Miss NEHA, daughter of Mr.Vasant Y. Baviskar, SWO-B, Sindhi Colony Branch, Jalgaon, Maharashtra is a national level rowing player. B.Tech. (Mech) from College of Engineering, Pune, this girl was fascinated by this water sport 'ROWING – SWEEP & SCULLING' since her college days in Pune. Initially coached by her college seniors and regularly practicing at the local Boat Club (which was available free of cost for the engineering students with a lifetime membership), she participated at various competitions and earned laurels. She bagged 'Ladies Champion of the year award' at COEP, College Annual Regatta followed by 4 Silver medals at 'Dragon Boat National Championship, Kerala'. She was a member of the Maharashtra Women's Team at the 35th National Games, Kerala in 'Women's Coxless Fours' event, they earned 6th position. She clinched Gold medal in 'Women's Double Scull' event at the MRA State Championship 2015. During this stint, many of her college seniors and Indian rowers like Mr. Swarn Singh, Padmashree Bajrang Lal Takhar have been very influential in sculpting her rowing career.

Currently, she holds a license for National Rowing Umpiring. She is also an active member of Rowing Federation of India (RFI) and Maharashtra Rowing Association (MRA). They (umpires) are called for the competitions arranged by RFI every year, as Jury Members. She has been a Jury Member to 3 National and 2 State Rowing Championships. After 3 years of decent umpiring experience, a National Umpire can appear for Fedération Internationale des Sociétés d'Aviron (FISA) i.e. International Rowing Federation Umpiring Examination. Once an individual acquires a FISA Umpiring License, he/she becomes eligible to umpire for various International championships viz. Asian Rowing Championships, World Rowing Championships, Olympics, etc. She aspires to become a FISA Umpire in near future and contribute to the sport she loves and appreciates the most!

Union Dhara wishes her all the success in her future 'Rowing' endeavours! More skill to her oars!!

हेल्थ टिप्स

नीलगिरी-तेल

सुप्रिया नाडकर्णी
यूनियन धारा, के.का.

नीलगिरी तेल के स्वास्थ्य लाभों ने पूरे विश्व का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है और इसका उपयोग परंपरागत चिकित्सा के साथ-साथ अरोमाथेरेपी में किया जा रहा है. इसका तेल लम्बे, सदाबहार नीलगिरी पेड़ के ताजे पत्तों से प्राप्त किया जाता है. दुनिया में नीलगिरी तेल का मुख्य स्त्रोत ऑस्ट्रेलिया है.

तो चलिये नीलगिरी तेल के स्वास्थ्य लाभों के बारे में जानते हैं:

➢ नीलगिरी तेल के रोगाणुरोधक गुण होने के कारण यह एंटीसेप्टिक के रूप में काम करता है. इसलिए इस तेल का उपयोग घाव, अल्सर, जलन, कटने, खरोच और फोड़े के उपचार के लिए किया जाता है. यह कीड़ों के काटने और उनके डंक के प्रभाव को कम करने में लेप के रूप में काम करता है. प्रभावित क्षेत्र पर सुखदायक एहसास देने के अलावा यह खुले या कुपित घाव के क्षेत्र को जीवाणु संक्रमण से बचाता है.

➢ यह तेल सर्दी की समस्याओं के इलाज के लिए भी लाभदायक है. यह सर्दी, खांसी, नाक बहना, गले में खराश, अस्थमा, नाक में कफ, ब्रोंकाइटिस और साइनुसाइटिस के इलाज में मदद करता है. इस तेल में जीवाणुरोधी, कवकरोधी, रोगनुरोधी, एंटीवायरल, सूजनरोधी और सर्दी खांसी रोधक गुण होते हैं. गले में जख्म के उपचार के लिए गर्म पानी में नीलगिरी तेल के मिश्रण से गलगला करने से बहुत लाभ मिलता है. नीलगिरी तेल की 1-3 बूंदों से छाती पर मालिश करने से इसकी सुखदायक, सुगंधित भाप गले को साफ करती है और आसानी से श्वास ली जा सकती है. अस्थमा के लक्षणों से राहत पाने के लिए इसमें मौजूद सूजनरोधी गुण बहुत लाभदायक है.

➢ नीलगिरी तेल का ठंडा और ताजा प्रभाव आम तौर पर सुस्ती से पीड़ित लोगों में शक्ति बढ़ाकर थकान और मानसिक सुस्ती को दूर करता है. यह तनाव और मानसिक विकार तथा मानसिक थकावट के उपचार में भी लाभदायक है.

➢ इसके तेल में पीड़ा हरने और सूजन-रोधी गुण होते हैं. इसलिए गठिया, कमर दर्द, मोच, कठोर मांसपेशियों, लगातार दर्द, फाइब्रोसिस आदि से पीड़ित लोगों के लिए भी इसका उपयोग किया जाता है. शरीर के प्रभावित क्षेत्रों पर इस तेल से गोलाकार गति में मालिश की जानी चाहिए.

➢ नीलगिरी तेल के रोगाणुरोधी गुण के कारण यह अनेक प्रकार के दातों की समस्या जैसे दातों में छेद, दातों में गंदगी, मसूड़े में सूजन और अन्य प्रकार के दातों के संक्रमण के लिए बहुत लाभदायक है. यही कारण है कि नीलगिरी का तेल आमतौर पर माउथवॉश, टूथपेस्ट और अन्य दंत स्वास्थ्य उत्पादों में एक सक्रिय घटक के रूप में पाया जाता है.

➢ जूँ का दवाइयों से उपचार बालों के लिए हानिकारक हो सकता है, साथ ही साथ ये दवाइयाँ खतरनाक रसायनों से बनी होती हैं. इसलिए जूँ-पीड़ित सिर से छुटकारा पाने के लिए नीलगिरी तेल कि कुछ बूंदें बेहतर और स्वस्थ समाधान हैं.

➢ इस तेल का उपयोग बुखार के इलाज और शरीर के तापमान को कम करने के लिए भी किया जाता है. यही कारण है कि नीलगिरी के तेल को 'फीवर आयल' के नाम से भी जाना जाता है. इस तेल का उपयोग पेपरमिंट तेल के साथ मिलाकर शरीर से दुर्गंध दूर करने और शरीर के तापमान को कम करने के लिए स्प्रे के रूप में किया जाता है.

➢ यह तेल पेट के कीड़ों को दूर करने की दवा के रूप में काम करता है और अक्सर आंत से रोगाणुओं को हटाने में मदद करता है.

➢ नीलगिरी के तेल का उपयोग आपके बालों को चमक और मोटाई देता है. यह बालों के सम्पूर्ण स्वास्थ्य में भी मदद करता है. लेकिन इसका बहुत अधिक उपयोग करने से बालों की चमक कम हो जाती है और खोपड़ी चिकनी हो जाती है. इसलिए अधिकांश विशेषज्ञों का मानना है कि स्नान से एक घंटे पहले बालों पर नीलगिरी तेल का उपयोग करके फिर अच्छी तरह शैम्पू से बालों को धो लेना चाहिए.

➢ त्वचा के संक्रमण (विशेष रूप से चाले, दाद, मुँहासे और चिकन पॉक्स) का इलाज करने के लिए नीलगिरी तेल का उपयोग संक्रमित त्वचा पर लगा कर किया जाता है. इसको सेब साइडर सिरका (Apple Cidar Vinegar) की संतुलित मात्रा के साथ मिलकर समस्याग्रस्त क्षेत्रों पर लगाने से समस्या से जल्द राहत मिलती है.

➢ नाक में कफ जमने से राहत पाने के लिए इस तेल की कुछ बूंदों को सूँघने से फायदा मिलता है. यह न केवल नाक के मार्ग को साफ करने में मदद करेगा बल्कि आप को अच्छा महसूस कराने में भी मदद करेगा.

➢ नीलगिरी तेल के एंटीसेप्टिक और दुर्गंधनाशक गुणों के कारण अस्पतालों में इसका उपयोग रूम फ्रेशनर के रूप में किया जाता है. यह हवा में मौजूद बैक्टीरिया और रोगाणुओं को मारता है और कमरे के वातावरण को साफ और रोगाणुहीन रखता है. इन्हीं कारणों से इसका उपयोग साबुन, डिटर्जेंट और घरेलू क्लिनर में किया जाता है.

➢ नीलगिरी के तेल के ताज़गी दायक और एंटीसेप्टिक गुण के कारण बहुत से लोग इसका उपयोग स्नान, स्पा और सौना बाथ में करते हैं. नीलगिरी का तेल वाष्प के माध्यम से, मालिश के माध्यम से और इसके सेवन के माध्यम से हमें लाभ पहुँचाता है. इसलिए अरोमाथेरपी में स्पा उपचार के लिए इसका उपयोग किया जाता है. नीलगिरी के तेल का उपयोग मौसमी एलर्जी, मुँहासे, एंडोमेट्रियोसिस और हरपीज़ सिम्प्लेक्स वायरस के इलाज में भी किया जा सकता है.

लेकिन सावधान! नीलगिरी के तेल का अधिक सेवन विषैला हो सकता है. साथ ही यह अन्य होमिओपैथिक उपचारों में हस्तक्षेप भी कर सकता है. इसके अलावा, जो लोग एलर्जी के प्रति अतिसंवेदनशील हैं, उन्हें इसके उपयोग से एयरबोर्न कॉन्टॅक्ट डर्मेटाइटिस जैसी समस्या हो सकती है. ऐसी स्थिति में अपने चिकित्सक से तुरंत परामर्श करें या एलर्जी का परीक्षण करें.

✦✦✦

व्यंजन

लौकी का हलवा

वृषाली कदम
सीसीडी, के.का.

सामग्री:

लौकी-500 ग्राम
दूध-200 ML
चीनी-100 ग्राम
पेड़ा - 4-5 केसर मावा पेड़ा, (स्वादानुसार)
देसी घी-3 बड़े चम्मच
ड्राइफ्रूट्स-4 से 5 बादाम, काजू, किशमिश, पिस्ता.
हरी ईलाईची पाउडर-1/4 टी स्पून

विधि: लौकी का हलवा बनाने के लिए पहले लौकी को धो लें और छील कर कद्दूकस कर लें. कढ़ाई में मध्यम आंच पर 3 बड़े चम्मच घी को गर्म करें. कद्दूकस किए हुए लौकी को कड़ाई में डालें और उसे 10 से 15 मिनट तक भून लें. उसके बाद उबालकर ठंडे किये गए दूध को ड़ालें और मिश्रण को अच्छी तरह धीमी आंच पर पकाएं. जब दूध की मात्रा कम हो जाए तो चीनी और दूध की मलाई एवं मिल्कमेड पाउडर डाल दें और मिश्रण को चलाते हुए सूखने तक पकाएँ.

मिश्रण सूख जाए तो उसमें केसर मावा पेड़ा क्रश कर के ड़ालें और 5 से 7 मिनट तक पकाएँ. बाद में बादाम, काजू, पिस्ता हरी ईलाईची पाउडर, किशमिश डाल कर 5 मिनट पकाएँ.

आप की पाती
Opinion Gallery

"प्रतिष्ठित, सुपरिचित पत्रिका 'यूनियन धारा' देखने, पढ़ने का सौभाग्य 'सुसाहित्य पुस्तकालय' में हुआ. प्रत्येक अंक बेहतर से बेहतरीन है. प्रत्येक अंक रुचिकर, ज्ञानवर्धक व पठनीय है. आप के इस सुप्रयास के लिए संपादक मण्डल बधाई व साधुवाद का पात्र है."

संतोष बी. गुप्ता
विशेष कार्यकारी अधिकारी, अमरावती

"आपके सम्पादन में प्रकाशित आपकी द्विभाषी त्रैमासिक पत्रिका 'यूनियन धारा' का जुलाई-सितंबर अंक पढ़ने को मिला. पत्रिका सामग्री, साज-सज्जा व प्रस्तुतिकरण सभी दृष्टि से उत्कृष्ट है. बधाई!"

डॉ. माणिक मृगेश
पूर्व वरिष्ठ प्रबन्धक (प्रशा. एवं कल्याण), आईओसी एल; पूर्व सदस्य सचिव, नराकास, वडोदरा
प्रधान संपादक, हिन्दी प्रभा, पश्चिमांचल हिंदी प्रचार समिति

प्रतियोगिता क्र. 145

'मां' पर कविता लिखें... *Compose a poem on 'Mother'*

प्यार, स्नेह और ममता का अथाह सागर यानी 'मां'. हर शख्स के दिल का एक कोना अपनी मां के लिए हमेशा आरक्षित रहता है. उस प्यार, स्नेह या 'मां' से जुड़ी आपकी भावनाओं को शब्दबद्ध करते हुए हमें 'uniondhara@unionbankofindia.com' या 'sulabhakore@unionbankofindia.com' पर दिनांक **30.04.2018** को या उससे पूर्व प्रेषित करें. प्रविष्टि प्रेषित करते समय अपना नाम, पदनाम, तैनाती स्थान एवं 15 अंकों वाला खाता क्रमांक व शाखा का नाम (name, designation, posting, 15 digit account number & name of the branch) लिखना ना भूलें.

हिन्दी या अंग्रेजी में अपनी प्रविष्टि 'संपादक, यूनियन धारा, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, केंद्रीय कार्यालय, यूनियन बैंक भवन, 11वीं मंज़िल, 239, विधान भवन मार्ग, नरीमन पॉइंट, मुंबई - 400 021' इस पते पर भी प्रेषित कर सकते हैं. ध्यान रहे, आपकी कविता 10 पंक्तियों की सीमा से अधिक न हो. कविता आप हिन्दी या अंग्रेजी में लिख सकते हैं. दोनों ही श्रेणियों के लिए अलग-अलग पुरस्कार रखे गए हैं. कृपया नोट करें कि यह प्रतियोगिता सिर्फ बैंक के सेवारत कार्मिकों के लिए ही है. प्रथम तीन कविताओं को क्रमशः ₹1500/-, ₹1000/- तथा ₹750/- के पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे. इन पुरस्कार प्राप्त प्रविष्टियों को यूनियन धारा में प्रकाशित किया जाएगा. फिर इंतज़ार किस बात का? उठाइये अपनी कलम और शुरू हो जाइये... हमें आपकी प्रविष्टियों का इंतज़ार रहेगा.

Union Dhara, R. N. 27989/76

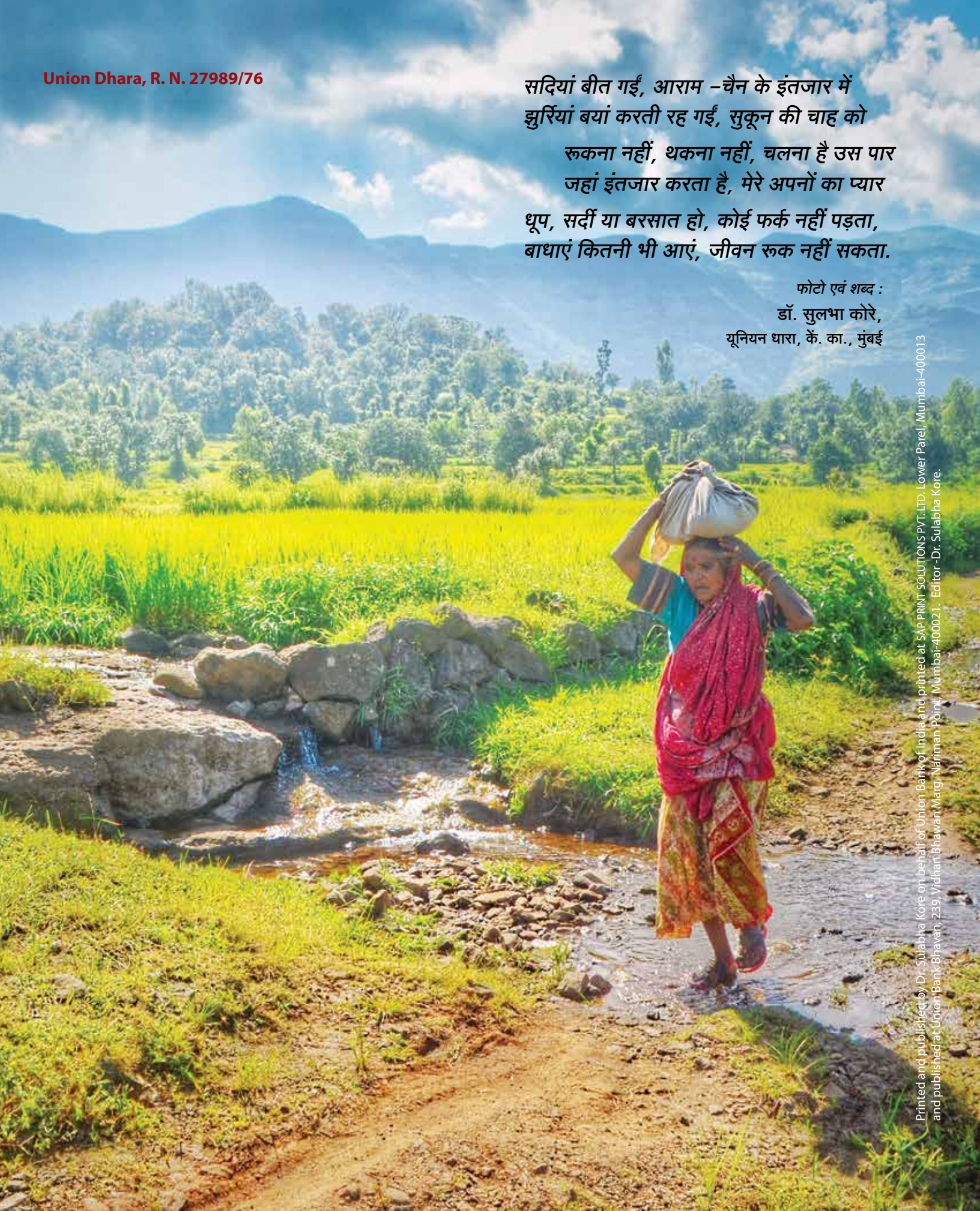

सदियां बीत गईं, आराम –चैन के इंतजार में
झुर्रियां बयां करती रह गईं, सुकून की चाह को
रूकना नहीं, थकना नहीं, चलना है उस पार
जहां इंतजार करता है, मेरे अपनों का प्यार
धूप, सर्दी या बरसात हो, कोई फर्क नहीं पड़ता,
बाधाएं कितनी भी आएं, जीवन रूक नहीं सकता.

फोटो एवं शब्द :
डॉ. सुलभा कोरे,
यूनियन धारा, कें. का., मुंबई

Printed and published by Dr. Sulabha Kore on behalf of Union Bank of India and printed at SAP PRINT SOLUTIONS PVT.LTD. Lower Parel, Mumbai-400013 and published at Union Bank Bhavan, 239, Vidhan Bhawan Marg, Nariman Point, Mumbai-400021. Editor -Dr. Sulabha Kore.